श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ की वार्षिक स्मारिका

# माणिभद्र

❖ दिनांक 14 सितम्बर 1996 ❖ भादवा सुद द्वितीया शनिवार ❖ महावीर जन्म वाचना दिवस

## बरखेड़ा तीर्थ जीर्णोद्धार अंक
## 34वां पुष्प

वि.सं. 2053 सन् 1996

**सम्पादक मण्डल**

सम्पादन

मोतीलाल भड़कतिया

सदस्य

राकेश मोहनोत ❖ नरेन्द्र कुमार कोचर
सुरेश मेहता ❖ महेन्द्रकुमार दोसी
अभयकुमार चौरड़िया ❖ सुश्री सरोज कोचर


प्रकाशक :

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ

आत्मानन्द जैन सभा भवन

घी वालों का रास्ता, जयपुर-302 003 फोन : 563260

मुद्रक :

अपराईज लेजर ग्राफिक्स

शाह बिल्डिंग चौड़ा रास्ता, जयपुर-302 003

फोन : 564476

# भगवान श्री आदिनाथ : संक्षिप्त परिचय

❑ सा. श्री प्रफुल्ल प्रभा श्रीजी म., जयपुर

जिस प्रकार भूखा व्यक्ति भोजन के दर्शन कर आशान्वित होता है, निर्धन व्यक्ति वान को देखकर आश्वासन पाता है, रोगी व्यक्ति डॉक्टर को देखकर खुश होता ोक उसी प्रकार परमात्म भक्त बरखेड़ा तीर्थाधिराज श्री आदिनाथ (ऋषभदेव) भगवान दर्शन, वन्दन, पूजन और उनके जीवन चरित्र का (सक्षिप्त) अध्ययन कर परमानंद अनुभव करता है। तो लीजिये आप भी परमात्मा के संक्षिप्त जीवन चरित्र का अध्ययन , दर्शन कर अपने जन्म-जीवन को कृतार्थ कीजिये।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ामान | सर्वार्थ सिद्धि | पारणे के दिन | वैशाख शुक्ला 3 | चौद पूर्वधारी | 4,750 |
| यवन तिथि | आषाढ़ वदि 4 | | (अक्षय तृतीया) | श्रावक सख्या | तीन लाख पाच हजार |
| न्म नगरी | अयोध्या | दीक्षा तिथि | चैत्र वदि 8 | श्राविका सख्या | पाच लाख चौपन |
| न्म तिथि | चैत्र वदि 8 | छद्मस्थ काल | 1000 वर्ष | | हजार |
| पेता का नाम | नाभिराजा | ज्ञान प्राप्ति स्थान | पुरीमताल नगर | शासन यक्ष नाम | गौमुख |
| ाता का नाम | मरुदेवा | (नगरी) | | शासन यक्षिणी नाम | चक्रेश्वरी |
| न्म नक्षत्र | उत्तराषाढ़ा | ज्ञान सबधी तप | अट्ठम | प्रथम गणधर | पुडरिक |
| न्म राशि | धन | दीक्षावृक्ष | वट वृक्ष | प्रथम आर्या (साध्वी) | ब्राह्मी |
| लाछन | वृषभ | ज्ञान उत्पत्ति | | मोक्ष स्थान | अष्टापद |
| शरीरमान | 500 धनुष | की तिथि | फाल्गुन वदि 11 | मोक्ष तिथि | महा वदि 13 |
| आयुष्य मान | 84 लाख पूर्व | भव सख्या | 13 | मोक्ष सलेखना | 6 उपवास |
| शरीर का वर्ण | सुवर्ण | गणधर सख्या | 84 | मोक्ष आसन | पर्यंकासन |
| पदवी | राजा | साधु सख्या | 84 हजार | अन्तर मान | 50 लाख क्रोड सागरोपम |
| पाणिग्रहण (विवाह) | हुआ | साध्वी सख्या | तीन लाख | गण नाम | मानव |
| सह दीक्षित | 4000 | वैक्रिय लब्धि वाले | 20600 | योनि | नकुल |
| दीक्षा नगरी | अयोध्या | वादी सख्या | 12650 | मोक्ष परिवार | 10,000 |
| दीक्षा तप | छट्ठ (दो उपवास) | अवधि ज्ञानी | 9000 | कुल गोत्र | इक्ष्वाकु |
| प्रथम पारेण का आहार | इक्षुरस | केवल ज्ञानी | 20,000 | गर्भकाल मास | 9 मास 4 दिन |
| पारणे का स्थान | हस्तिनापुर | मन:पर्यव ज्ञानी | 12,750 | | |

**श्री बरखेड़ा तीर्थ में विराजित प्रकट प्रभावी प्रथम तीर्थंकर**

**भगवान श्री ऋषभदेव स्वामी**

जीर्णोद्धार में उदारतापूर्वक योगदान देकर पुण्योपार्जन कीजिए

**श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ, जयपुर**

# गुरु विजयानन्द महिमा

❒ सा. सौम्य कला श्री जी म.
पीलीबंगा

(तर्ज :– गोरे-गोरे मुखड़े)

विजयानंद की जय सब बोलो-2
गुरू आतम की जय सब बोलो-2
मूरत इनकी 2 सबसे निराली 2 ....... विजयानंद की..........

गणेशचन्द्र के लाडले रूपादेवी की जान है
संघ के ये सिरताज है. विजयानन्द सूरिनाम है
सबपे दया ये करते है, झोलियां सबकी भरते हैं...2
सच्चे हृदय से 2 गुण इनके गालो 2 ......... विजयानद की...........

आतम के दरबार में, सबका बेड़ा पार है
अपने भक्तों पे सदा, करते ये उपकार है।
हमको शरण में बुलवालो, शान अपनी जरा दिखला दो...2
ले लो खबरियां 2 हमें अपनालो 2 ........ विजयानंद की.............

धरती है या स्वर्ग है. ना कोई उसमें फर्क है
आने वाले हर प्राणी. गुरू भक्ति में मस्त है।
मन में बसाले गुरु की मूरत, प्यारी-प्यारी गुरू आतम सूरत 2
आओ मिलके ध्यान धरे, गुरू आतम राम का 2......... विजयानंद की..........

गुरू आतम की महिमा को. भक्तों जो भी जान ले
फिर तो ये दिन रात ही. बस उन्हीं का ही नाम ले
शताब्दि वर्ष मना करके. जीवन सफल अपना करते 2
कहती "महत्तरा शिशु" 2 हमें भी संभालो 2 .......... विजयानंद की ..........

गुरूदेव के चरण सरोज में अनन्त-अनन्त वंदन...नमन।

# महत्तरा जी के चरण कमलों में कोटि-कोटि

# —❀ वदन-अभिनंदन ❀—

☐ श्रीमती सुशीला छजलानी
अध्यक्षा श्री सुमति जिन श्राविका सघ, जयपुर।

(तर्ज - जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़िया )

गुरू वर्या सुमगला जी के आगमन से, धन्य हुआ सघ सारा, हो शत-शत वदन हमारा।
पापो से मुक्त हुआ यह जीवन है शरणा तुम्हारा, हो शत-शत

चुन्नीलाल जी की राजदुलारी, सुआ देवी की जायी,-2
धन्य वनी ये लूणी नगरी, घर-घर खुशियाँ छाई, -2
तप त्याग की मूरत वनकर तुमने किया जीवन उजियारा, हो शत शत ।

सपत श्रीजी की शिष्या प्यारी, शासन दीपिका कहलाई,-2
वाणी आपकी अमृत जैसी, प्रेम-सुधा वरसाई,-2
सुमगल नाम से कर दिया तुमने यहाँ वहाँ मगल सारा, हो शत्-शत् ।

जयपुर का चौमासा आपका, हुआ अति सुखकारी, - 2
वरखेड़ा तीर्थ के जीर्णोद्धार की, प्रेरणा सवको भायी - 2
धर्मशाला का उपदेश देकर, सघ को तुमने जगाया, हो शत-शत ।

छ'री पालित यात्रा सघ लेकर वरखेड़ा में आयीं,-2
श्री आदिनाथजी की मूरत देखो, लगती सवको प्यारी, - 2
जिन मंदिर का भूमिपूजन ओर शिलान्यास करवाया, हो शत्-शत् ।

हस्तिनापुर तीर्थ की महिमा न्यारी जहाँ गुरूवर्या पधारीं, - 2
गुरू इन्द्रदिन्नजी की कृपा हुई भारी, 'महत्तरा' पदवी पाई, - 2
गुरू आज्ञा को शिरोधार्य कर, पुन किया चौमासा, हो शत-शत ।

छ' ठाणा सग आप पधारी, सघ मे खुशियाँ छायी, -2
तप-जप, त्याग और ज्ञान की देखो, ज्योति अनोखी जगायी, - 2
'सुमति मण्डल सग 'सुशीला' करती, अभिनदन वारम्वार, हो शत-शत ।

❖❖❖

पंजाब देशोद्धारक आचार्य श्रीमद् विजयवल्लभसूरिजी म.सा. की समुदायवर्तिनी
शासन दीपिका महत्तरा

## साध्वी सुमंगला श्री जी म. सा.

आपकी पावन निश्रा में सम्वत् 2053 वर्ष 1996 की चातुर्मासिक आराधनायें जयपुर में सम्पन्न हो रही हैं।

# श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर
# की
# स्थायी प्रवृत्तियाँ

1. **श्री सुमति नाथ भगवान का तपागच्छ मन्दिर**
   घी वालों का रास्ता, जयपुर
2. **श्री सीमंधर स्वामी मन्दिर**
   पाँच भाइयों की कोठी, जनता कॉलोनी, जयपुर
3. **श्री रिखब देव स्वामी तीर्थ** (जीर्णोद्धारान्तर्गत नव-निर्माण)
   ग्राम बरखेड़ा (जयपुर)
4. **श्री शान्ति नाथ स्वामी मन्दिर**
   ग्राम चन्दलाई (जयपुर)
5. श्री जैन चित्रकला दीर्घा एवं भगवान महावीर के जीवन चरित्र का भित्ती चित्रों में सुन्दरतम चित्रण, सुमति नाथ भगवान का तपागच्छ मन्दिर, घीवालों का रास्ता, जयपुर
6. श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन, घी वालों का रास्ता, जयपुर
7. श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ उपाश्रय, मारूजी का चौक, जयपुर
8. नूतन भवन सं. 1816-18, घी वालों का रास्ता, जयपुर
9. श्री वर्धमान आयम्बिल शाला, आत्मानन्द जैन सभा भवन, जयपुर
10. श्री जैन श्वे. भोजनशाला, आत्मानन्द जैन सभा भवन, जयपुर
11. श्री आत्मानन्द जैन धार्मिक पाठशाला
12. श्री जैन श्वे. मित्र मण्डल पुस्तकालय एवं सुमति ज्ञान भण्डार
13. श्री समुद्र-इन्द्रदिन्न साधर्मी सेवा कोष
14. स्वरोजगार प्रशिक्षण, उद्योग शाला, सिलाई शाला
15. जैन उपकरण भण्डार, घीवालों का रास्ता, जयपुर
16. "माणिभद्र" वार्षिक स्मारिका

# अनुक्रमणिका


| | | | |
|---|---|---|---|
| *भगवान आदिनाथ - स० परिचय* | ❖ | *सा श्री प्रफुल्लप्रभा श्रीजी म* | 2 |
| **बरखेड़ा तीर्थ के मूलनायक श्री ऋषभदेव स्वामी - चित्र** | | | |
| गुरु विजयानन्द महिमा | ❖ | सा सोम्यकला श्रीजी म | 3 |
| वन्दन अभिनन्दन | ❖ | श्रीमती सुशीला छजलानी | 4 |
| **महत्तरा साध्वी श्री सुमगलाश्रीजी म का चित्र** | | | |
| सघ की स्थायी प्रवृत्तियाँ | ❖ | तपागच्छ सघ | 5 |
| सम्पादकीय | | सम्पादक मण्डल | 8 |
| **बरखेड़ा तीर्थ** | | **का प्रस्तावित नक्शा** | 9 |
| **बरखेड़ा तीर्थ जीर्णोद्धार मे योगदान हेतु विनती पत्र** | | | 10 |
| **भूमि पूजनकर्त्ता एव शिला स्थापनकर्त्ताओ की सूची** | | | 12 |
| **चित्रमय समाचार दर्शन** | | | 13 |
| **मुनिश्री पूर्णानन्दसागरजी म सा के 41 उपवास** | | | 18 |
| बरखेडा तीर्थ का जीर्णोद्धार | ❖ | सा सुमगलाश्रीजी | 19 |
| बरखेडा आदिनाथ प्रभु (कविता) | ❖ | सा पूर्णनन्दिता श्रीजी | 20 |
| तीर्थ महिमा | ❖ | सा श्री प्रफुल्लप्रभाश्रीजी | 21 |
| ज्वार ओर भाटा | ❖ | सा श्री कुसुम प्रभाश्रीजी म | 24 |
| परमात्म पुकार | ❖ | कु अजिता कुचेरा | 24 |
| विश्व वन्दनीय विजयानन्द | ❖ | आचार्य नित्यानन्दसूरीजी म | 25 |
| मथुरा मे प्राचीन जेन इतिहास | ❖ | मुनिश्री भुवनसुन्दर विजयजी गणि | 27 |
| सत्यता का पुरस्कार | ❖ | सा श्री स्वर्णप्रभाश्रीजी म | 30 |
| *मानव जीवन का महत्व* | ❖ | *सा श्री पूर्णप्रज्ञाश्रीजी म* | *32* |
| अपनी पीड़ा | ❖ | सा अमृतप्रभा श्रीजी म | 33 |
| धर्म का प्राण अहिसा | ❖ | सा पीयूषपूर्णाश्रीजी म | 34 |
| मानव शरीर मे हाथ का महत्त्व | ❖ | सा श्री सौम्यप्रभाश्रीजी | 36 |
| आत्मा का प्रबलतम शत्रु क्रोध | ❖ | सा श्री वैराग्यपूर्णाश्रीजी म | 37 |
| भक्ति में प्रभु ओर प्रभु मे भक्ति | ❖ | पन्यास श्री अरुणविजयजी म | 40 |
| श्री सिद्धाचल तीर्थ पर मुक्ति पद | ❖ | सा श्री पूर्णकलाश्रीजी म | 42 |
| कल्पसूत्र एक महान विश्वकोष | ❖ | मुनिश्री भुवनसुन्दर विजयजी | 43 |
| अनमोल वचन | ❖ | श्रीमती शान्तीदेवी लोढा | 47 |
| भगवान के प्रति श्रद्धा | ❖ | कु सजीता कोचर | 48 |
| प्रेम के आसू | ❖ | *मुनिश्री प्रेमप्रभसागरजी म* | *49* |
| वीर माणिभद्र की महिमा | ❖ | मुनि श्री राजेन्द्रविजयजी म | 51 |
| यदि ऐसे ही होता रहा नारी सहार | ❖ | श्रीमती मन्जु मी चौरडिया | 52 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| श्री नमस्कार महामंत्र का अचिन्त्य प्रभाव | ❖ | कु. अंजना जैन | 53 |
| श्री अष्टापद जैन तीर्थ | ❖ | सुशील विहार | 54 |
| पर्यूषण महापर्व | ❖ | मुनिश्री भाग्य शेखर विजयजी | 56 |
| कर्मवाद को सम्भालिये | ❖ | श्री मनोहरमल लूनावत | 57 |
| 50 वर्ष पर्याय के आचार्य भगवन्त | ❖ | श्री महेन्द्रकुमार दोसी | 59 |
| उमंग (कविता) | ❖ | श्री भरत शाह | 60 |
| ईर्ष्या का दुष्परिणाम | ❖ | श्री घनरूपमल नागौरी | 61 |
| तीर्थ यात्रा | ❖ | श्री राजमल सिंघी | 62 |
| सम्यग् दृष्टि माता कौन | ❖ | श्रीमती मंजू पी. चौरडिया | 65 |
| अष्टाह्निका महोत्सव के भक्तिकर्त्ता | ❖ | तपागच्छ संघ | 66 |
| नारी और सामाजिक मूल्य | ❖ | श्रीमती गुलाब कंवर नाहटा | 67 |
| होटल के पदार्थो से सावधान | ❖ | श्री प्रवीण भंडारी | 69 |
| व्रतोपवास | ❖ | श्रीमती मधु भंडारी | 71 |
| अमृत बिन्दु | ❖ | श्री दर्शन छजलानी | 72 |
| रात्रि भोजन का निषेध क्यों | ❖ | श्रीमती संतोषदेवी छाजेड | 73 |
| संघर्षमय संसार | ❖ | श्रीमती शान्तीदेवी लोढा | 74 |
| नमस्कार महामंत्र | ❖ | श्री रतनचन्द कोचर | 75 |
| रखना अटल विश्वास तूं (कविता) | ❖ | श्री आशीपकुमार जैन | 76 |
| संस्कार | ❖ | श्री सुरेश मेहता | 77 |
| गाथा सुनाएं महावीर की (कविता) | ❖ | श्री विनीत सांड | 78 |
| मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है | ❖ | श्री रतनलाल रायसोनी | 79 |
| धर्म क्या है | ❖ | श्रीमती अंजना जैन | 80 |
| **आयम्बिलशाला की स्थायी मितियां** | | | 81 |
| **आयम्बिलशाला जीर्णोद्धार में सहयोगकर्त्ता** | | | 82 |
| **अष्ट प्रकारी पूजा सामग्री भेटकर्त्ता** | | | 82 |
| **महासमिति के पदाधिकारी** | | | 83 |
| **श्रद्धांजलियां** | | | 85 |
| स्वरोजगार प्रशिक्षण शिविर | ❖ | सुश्री सरोज कोचर | 87 |
| श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल | ❖ | श्री अशोक पी. जैन | 90 |
| सुमति जिन श्राविका संघ | ❖ | श्रीमती उपा सांड | 94 |
| श्री लक्ष्मीचन्दजी भंसाली- एक स्मृति | ❖ | श्री सुनीत कुमार | 95 |
| संघ का वार्षिक प्रतिवेदन | | | 96 |
| आय-व्यय विवरण 1995-96 | | | 108 |
| चिट्ठा | | | 112 |
| आडिटर रिपोर्ट | ❖ | आर.के. चतर | 114 |
| नागेश्वर तीर्थ की यात्रा और सुविधाजनक | ❖ | श्री राजेन्द्रकुमार लूनावत | 115 |
| जैन स्तोत्रकार— एक झलक | ❖ | सुश्री सरोज कोचर | 116 |
| विज्ञापन | | | |

# सम्पादकीय

प्रति वर्ष भगवान जन्म वाचना दिवस को प्रकाशित होने वाली स्मारिका "माणिभद्र" के 38वें अक को श्रीसघ की सेवा में समर्पित करते हुए हार्दिक प्रसन्नता है।

इस वर्ष का चातुर्मास भी आचार्य श्रीमद् विजय वल्लभसूरीश्वरजी म सा की यशस्वी पाट परम्परा पर विराजित गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वरजी म सा की आज्ञा एव निर्देशानुसार शासनदीपिका महत्तरा साध्वी श्री सुमगला श्रीजी म. सा आदि का यहा सम्पन्न हो रहा है।

पिछले वर्ष के चातुर्मास में आपने जिन शासन शोभा के अनेक कार्यो के साथ-साथ भगवान श्री ऋपभदेव स्वामी का जिनालय, बरखेड़ा तीर्थ का जीर्णोद्वार का विशाल एव महत्त्वाकाक्षी कार्य का शुभारम्भ कराया तथा आपके ही प्रयास, प्रेरणा एव सदुपदेश से नए भवन की खरीद का कार्य सम्पन्न हुआ। इस अक के साथ भगवान ऋपभदेव स्वामी बरखेड़ा तीर्थ का भव्य, मनोरम एव सग्रहणीय चित्र प्रकाशित किया जा रहा है।

आपके यहा पर पुन आगमन के साथ ही तप ओर आराधना की झड़ी लगी हुई है। मास क्षमण, ग्यारह, आठ, पचरगी, अक्षय निधि तप समोसरण तप आदि की विशिष्ठ तपस्याओं के साथ-साथ क्रमिक अट्ठम हो रहे हैं।

पूर्ववत इस अक को सजाने सवारने एव सम्पादित करने में विराजित साध्वीवृन्द का महत्त्वपूर्ण योगदान तो रहा ही है, साथ ही विराजित पूज्य साध्वी श्री प्रफुल्लप्रभाश्रीजी म सा ने अथक परिश्रम कर प्रूफ शोधन एव सम्पादन में उल्लेखनीय योगदान किया है जिसके लिए सम्पादक मण्डल आपका अत्यन्त आभारी है। आपके ही अथक परिश्रम, कार्य दक्षता एव कुशलता से साधना एव आराधना नामन बहु-उपयोगी पुस्तक का प्रकाशन हुआ है और प्रभु भक्ति में आवश्यक पूर्वाचार्यों द्वारा विरचित विभिन्न पूजाओं का सकलन भी वृहदाकार में शीघ्र ही प्रकाशित किया जा रहा है। वीशस्थानकजी की आराधना विधि सम्बन्धी पुस्तक भी आपके ही प्रयास से प्रकाशित हो रही है जो सभी जिनालयों एव सघों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

गुरू, भगवन्तों, साधु-साध्वीजी म सा एव लेखकों से प्राप्त रचनाए यथावत प्रकाशित की गई है। सत्यासत्य का निर्णय पाठकों को ही करना है। यदि असावधानी वश ऐसी रचना प्रकाशित हो गई हो जिनसे किन्हीं की भावना को ठेस पहुचे तो सम्पादक मण्डल अग्रिम रूप से क्षमा प्रार्थी है।

इस अक के मुद्रण कार्य में श्रीमान् जीतमलजी सा0 शाह का अपूर्व एव उल्लेखनीय सहयोग प्राप्त हुआ है जिसके लिए सम्पादक मडल उनका आभारी है।

आशा है पूर्ववत् यह अक भी पाठकों के लिए रोचक, उपयोगी एव सग्रहणीय सिद्ध होगा।

☐ सम्पादक मण्डल
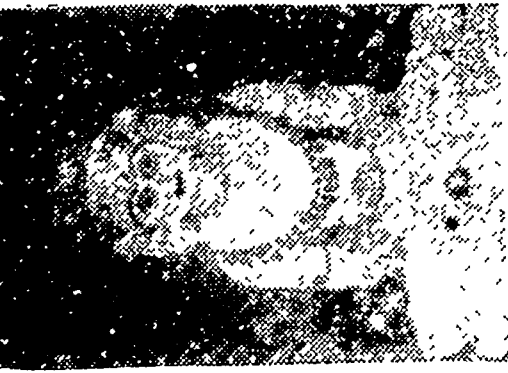
जीर्णोद्धाराधीन जिनालय
बरखेड़ा तीर्थ
का प्रस्तावित मानचित्र
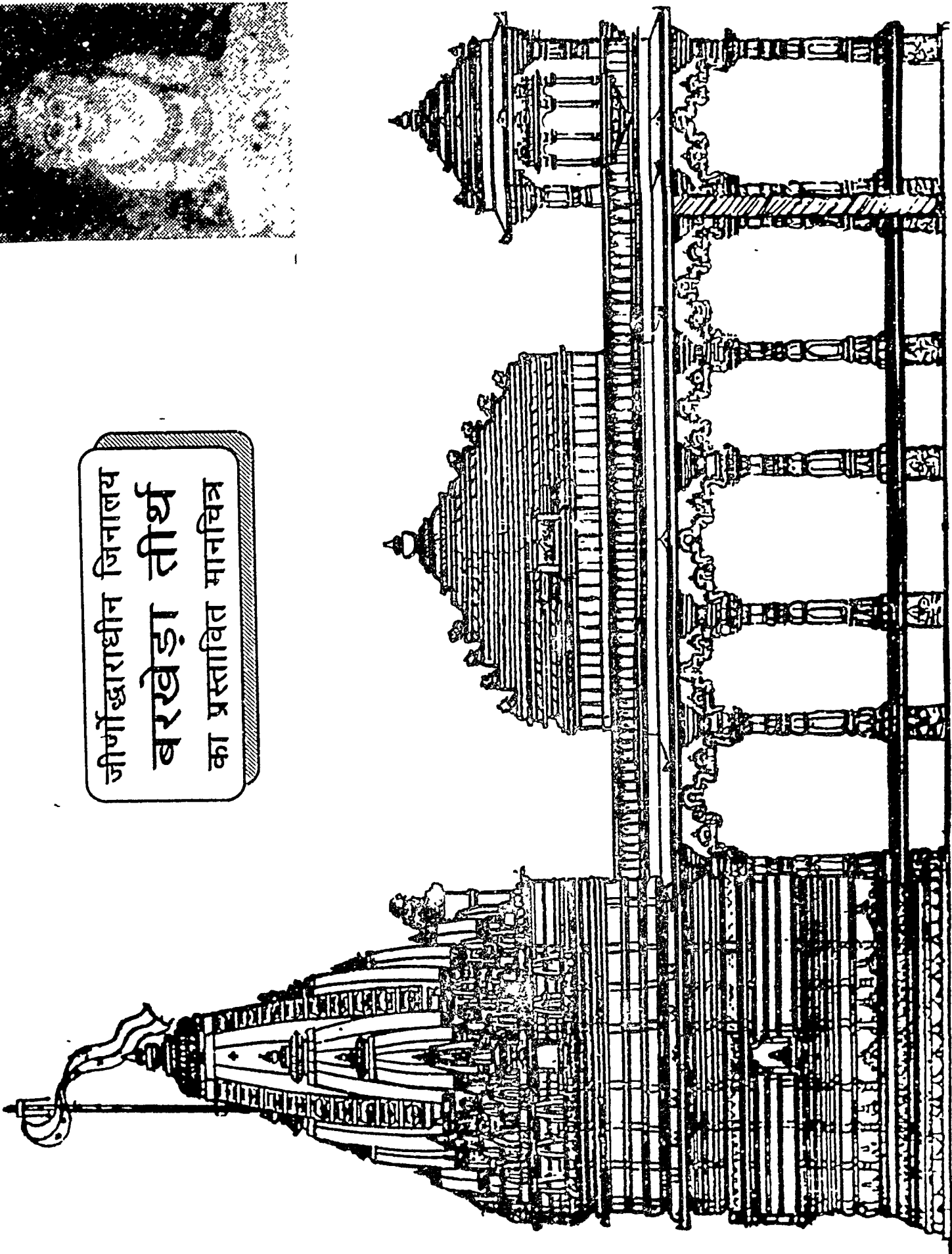
# प्राचीन बरखेड़ा तीर्थ जीर्णोद्धार में योगदान हेतु

## विनम्र निवेदन

### तीर्थ की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि

जगद्गुरू जेनाचार्य अकवर प्रतिबोधक आचार्य विजय श्री हीरसूरीश्वरजी म सा स 1640 म सम्राट अकवर के निमत्रण पर इस क्षेत्र मे विचरण करते हुए फतेहपुर सीकरी पधारे थे। इसका उल्लेख इसी श्रीसघ के अन्तर्गत चन्दलाई ग्राम मे स्थित जिनालय में मिलता है। 17 वीं शताब्दी में उनके शिष्यो ने इस क्षेत्र में घूम-घूम कर जेन धर्म का प्रचार प्रसार किया था ओर उसी समय इस प्राचीन वरखेडा ग्राम मे स्थित श्री ऋषभदेव स्वामी के श्वेताम्बर जिनालय का निर्माण होना भी बताया जाता हे।

किंवदन्ती यह भी हे कि अन्यत्र स्थान पर भूगर्भ ने निकलने के पश्चात जव बेलगाड़ी में रख कर प्रतिमाजी को ले जा रहे थे तो इसी स्थान पर आकर गाड़ी रुक गई ओर किसी भी हालत म आगे नहीं बढ सकी। तव इसी स्थान पर मंदिरजी का निर्माण करा कर प्रतिमाजी को प्रतिष्ठित किया गया।

**जिन विम्व** • जयपुर- कोटा के राष्ट्रीय राजमार्ग सख्या 12 पर जयुपर से 30 किलोमीटर दूर शिवदासपुरा के पास वरखेडा ग्राम में यह तीर्थ स्थित हे। पास में ही प्रसिद्ध जैन तीर्थ श्री पद्मप्रभुजी स्थित हैं।

प्रथम तीथकर भगवान श्री ऋषभदेव स्वामी की प्रकट प्रभावी प्रतिमाजी 35 इची मनोरम एव मनोज्ञय है जिसके पाषाण से प्रतीत होता हे कि यह प्रतिमाजी सात आठ सो वर्ष पुरानी है एव तीन सौ वर्ष पुराना जिनालय होने से यह महिमामय तीर्थ ह।

**पूर्व जीर्णोद्धार** • सुरम्य सरोवर किनारे स्थित यह जिनालय काल के थपेडों से ग्रसित होता रहा एव समय-समय पर जीर्णोद्धार भी होते रहे। अंतिम जीर्णोद्धार वि स 1984 ई सन् 1927 के फाल्गुन मास में होना पाया जाता है। यहा पर फाल्गुन सुदी में वार्षिकोत्सव सम्पन्न होने के साथ-साथ यात्रियो का निरन्तर आवागमन बना रहता है।

**पुन जीर्णोद्धार की योजना** • तालाब के किनारे स्थित होने से पानी की सीर के कारण जिनालय शीघ्रता से जीर्ण होता रहा हे ओर अव तो लगभग 70 वर्ष पुराना भवन होने से पूर्णरूपेण जीर्ण शीर्ण अवस्था को प्राप्त होने लगा। अत श्री जेन श्वे तपागच्छ सघ, जयपुर की महासमिति ने निश्चय किया कि नींवों पर दीवारें खड़ी करने के स्थान पर ठोस भराई का प्लेट फार्म वना कर ही यहा पर मारवल का शिखरयुक्त भव्यातिभव्य तीर्थ के अनुरूप ही जिनालय का निर्माण कराया जावे। भूमि से शिखर तक की ऊचाई 53 फीट एव जिनालय की लम्बाई 75 फीट होगी जिसमे गर्भ गृह, रग मण्डप, श्रृगार चोकी, कगूरों व झरोखे सहित भव्य तोरण-द्वार होगा। सम्पूर्ण जिनालय के निर्माण पर लगभग डेढ करोड़ की लागत आना सभावित है।

**कार्यारम्भ** • जिनालय के नव-निर्माण की योजना एव प्रयास तो काफी समय से चल रहे थे लेकिन अभी तक प्रयास मूर्त रूप मे परिणित नहीं हो सके।

सोभाग्य से वि स 2052 में पजाव केसरी विजय वल्लभसूरीश्वरजी म सा की समुदायवर्तिनी शासन दीपिका, महत्तरा साध्वी श्री सुमगलाश्री जी म सा आदि ठाणा 6 का जयपुर में चातुर्मास था। जब आपको इस महिमामय प्राचीन तीर्थ के बारे में जानकारी मिली तो आपने इसका जीर्णोद्धार कराने का बीडा उठाया। चातुर्मास पूर्ण होते ही आप पैदल यात्री सघ को लेकर यहाँ पर पधारीं।

आचार्य देवेश गच्छाधिपति श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वरजी म सा के शुभाशीर्वाद, आचार्य श्रीमद् विजय नित्यानदसूरीश्वरजी म सा के मार्ग निर्देशानुसार एव पूज्य साध्वी श्री सुमगलाश्रीजी म सा की पावन निश्रा में मिगसर सुदी अष्टमी वि स 2052, दि 29 नवम्बर,

1995 को भूमि पूजन एवं दशमी दिनांक 1 दिसम्बर, 95 को शिला स्थापनाओं के साथ ही तीर्थ जीर्णोद्धार का कार्य प्रारम्भ हो गया, जो निरन्तर चल रहा है। बिरामी निवासी श्री बाबूलाल हेमराजजी, सोमपुरा की देखरेख में जिनालय का निर्माण हो रहा है।

**तीर्थ जीर्णोद्धार की महिमा :** शास्त्रों में जिनालयों के जीर्णोद्धार की महिमा बताते हुए कहा है कि 'जीर्णोद्धार करावता आठ गुणा फल होय'। नूतन जिनालय बनाने से जीर्णोद्धार को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। जिनालयों में भी ऐसे प्राचीन एवं तीर्थ रूपी जिनालय के जीर्णोद्धार के महत्व एवं महिमा का वर्णन तो ज्ञानी-गुरूजन ही कर सकते हैं। एक तरफ भगवान श्री पदमूप्रभुजी का तीर्थ पदमपुरा एवं दूसरी तरफ पास में ही श्री ऋषभदेव प्रभु का तीर्थ बरखेड़ा होने से यह क्षेत्र जैन धर्मावलम्बियों के लिए आत्म कल्याण व आराधना का महत्वपूर्ण साधना स्थल है। निकटवर्ती क्षेत्र में ऐसा कोई श्वेताम्बर तीर्थ नहीं है।

## आर्थिक योगदान हेतु विनम्र निवेदन

कार्य बहुत विशाल एवं योजना महत्वाकांक्षी है जिसकी क्रियान्विति एवं पूर्णता अखिल भारतीय स्तर से प्राप्त आर्थिक सहयोग से ही पूर्ण हो सकेगी। श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर अपनी ओर से भरसक प्रयत्नशील है और आठ महीने के अल्प समय में ही अपने स्रोतों से ही लगभग पच्चीस लाख रूपयों की राशि का उपयोग किया जा चुका है। एक हाल, दो कमरे, शौचालय, स्नानघर आदि बना कर यात्रियों के आवास एवं रात्रि विश्राम की समुचित सुविधा उपलब्ध करा दी गई है। प्रथम चरण में भव्यातिभव्य जिनालय का निर्माण एवं दूसरे चरण में बड़ी धर्मशाला, भोजनशाला आदि बनवाने की योजना है।

अखिल भारतीय स्तर के संघ, तीर्थ-पेढ़ियां एवं श्रद्धालुजन अपनी प्रचुर आय में से समुचित आर्थिक योगदान प्रदान कर अर्जित द्रव्य का सही सदुपयोग कर अक्षय पुण्योपार्जन की प्राप्ति के सुअवसर का सौभाग्य प्राप्त कर तीर्थ जीर्णोद्धार में भागीदार बन सकें, इसलिए

## चयनित स्थानों का नकरा निम्नानुसार निर्धारित किया गया है

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | गर्भ गृह | : | रु. 5,11,111 |
| 2. | मण्डोवर | : | रु. 15,11,111 |
| 3. | शिखर | : | रु. 18,11,111 |
| 4. | रंग मण्डप | : | |
| | (i) खम्भे व पाट | : | रु. 11,11,111 |
| | (ii) दादरी | : | रु. 11,11,111 |
| | (iii) सामरण | : | रु. 12,11,111 |
| 5. | त्रि-चौकी (दो) | : | रु. 9,11,111 |
| 6. | श्रृंगार चौकी | : | रु. 5,11,111 |
| 7. | श्रृंगार चौकी के झरोखे | : | रु. 5,11,111 |
| 8. | जिनालय का मुख्य प्रवेश द्वार (3 दरवाजों में) | : | रु. 5,11,111 |
| 9. | सम्पूर्ण जिनालय के मार्बल के पाटिए एवं फर्श | : | रु. 15,11,111 |
| 10. | एक ईंट का नकरा | : | रु. 3,111 |

एक ईंट का नकरा रु 3,111 निर्धारित किया है। योगदानकर्ताओं के नामोल्लेख मार्बल के शिलालेख पर अंकित किये जायेंगे।

अतः भारतवर्ष के समस्त संघों, पेढ़ियों, तीर्थ-ट्रस्टियों एवं प्रत्येक श्रद्धालु भाई बहिन से विनम्र निवेदन है कि ऐसे महान एवं ऐतिहासिक तीर्थ के जीर्णोद्धार में उपरोक्त योजनाओं में अथवा भावनानुसार अधिक से अधिक आर्थिक योगदान करने की कृपा करें।

अपने आर्थिक सहयोग का नगद/चैक/ड्राफ्ट श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर के नाम से भिजवाने की कृपा करें।

विनीत

| हीराभाई चौधरी | उमरावमल पालेचा | मोतीलाल भड़कतिया |
|---|---|---|
| अध्यक्ष | संयोजक, बरखेड़ा तीर्थ एवं जीर्णोद्धार समिति | संघ मंत्री |

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर

## ...ग्रयपुर के समीप प्राचीनतम बरखेड़ा तीर्थ में श्री ऋषभदेव स्वामी जिन मंदिर के नव-निर्माण एवं जीर्णाद्धार में भूमि पूजन एवं नौ शिलाओं के स्थापनाकर्त्ताओ की शुभ नामावली

शुक्रवार दिनाक 29 नवम्बर, 1995

### भूमि पूजनकर्ता

**श्री उमरावमलजी हीराचद जी मिलाप चदजी पालेचा**

रविवार, 1 दिसम्बर, 1995

### शिलाओं के स्थापनाकर्त्ता

| शिला | नाम | स्थापना कर्ता |
|---|---|---|
| 1 | नन्दा | श्री पूनमचद भाई नगीनदास जितेश कुमार शाह |
| 2 | भद्रा | श्रीमती कमला वहन भोगीलाल शाह |
| 3 | जया | श्री शान्तिभाई - बच्चु भाई शाह |
| 4 | रिक्ता | श्रीमती प्रभा वहन - नवीन भाई शाह |
| 5 | अजिता | श्रीमती राजकुमारी, पुत्र श्री ज्ञानचद, तिलकचन्द, अरूण कुमार पालावत |
| 6 | अपराजिता | श्री मगलचद ग्रुप |
| 7 | शुक्ला | श्री आसानन्दजी, लक्ष्मीचन्द, सुनीत कुमार भसाली |
| 8 | सोभागिनी | श्री पीसूलाल माणकचद मेहता |
| 9 | धरण शिला (कुर्म) | श्री बाबूलाल तरसेम कुमार जैन (पारख) |

### बरखेड़ा तीर्थ जीर्णोद्धार समिति

1 श्री उमरावमल पालेचा — सयोजक
2 श्री हीराभाई चौधरी — सदस्य
3 श्री तरसेम कुमार जैन — "
4 श्री मोतीलाल भडकतिया — "
5 श्री दानसिह कर्णावट — "
6 श्री मोतीचन्द वैद — "
7 श्री ज्ञानचन्द भडारी — सदस्य
8 श्री राकेश कुमार मोहनोत — "
9 श्री नरेन्द्र कुमार लूनावत — "
10 श्री चितामणी ढढ्ढा — "
11 श्री ज्ञानचन्द टुकलिया — "

# श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ जयपुर की गतिविधियां

## चित्रमय समाचार-दर्शन

धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए महत्तराजी म०सा०

श्री मीठालाल जी मेहता, मुख्य सचिव, राजस्थान सरकार, पू. साध्वीजी म०सा० को वन्दन करते हुए।

श्रीमती तारा भंडारी, विधायक एवं अध्यक्ष महिला एवं बाल विकास समिति, राज. विधान सभा ''माणिभद्र'' के ३७वें अंक का विमोचन करते हुए।

## दि0 7-7-1996 को संघ के क्रय किए गए नूतन भवन में प्रवेश

प्रवेश हेतु जाते हुए जुलूस का विहंगम दृश्य →

चढ़ावे से भगवान एवं कुम्भ कलश को लेकर नए भवन में प्रथम प्रवेश करते हुए श्री हीराभाई चौधरी एवं श्रीमती जीवनकुमारी जी चौधरी ←

क्रय किया हुआ नूतन भवन स १८९६–१८ घी वालो का रास्ता, जयपुर →
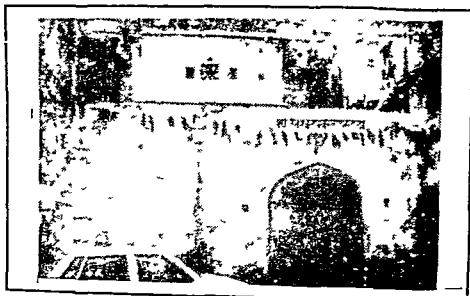
# दि0 10-7-1996 को बरखेड़ा तीर्थ जीर्णोद्धारान्तर्गत नव-निर्मित आवास गृह में प्रवेश

प्रवेश से पूर्व मूलनायक भगवान का दर्शन करते हुए →
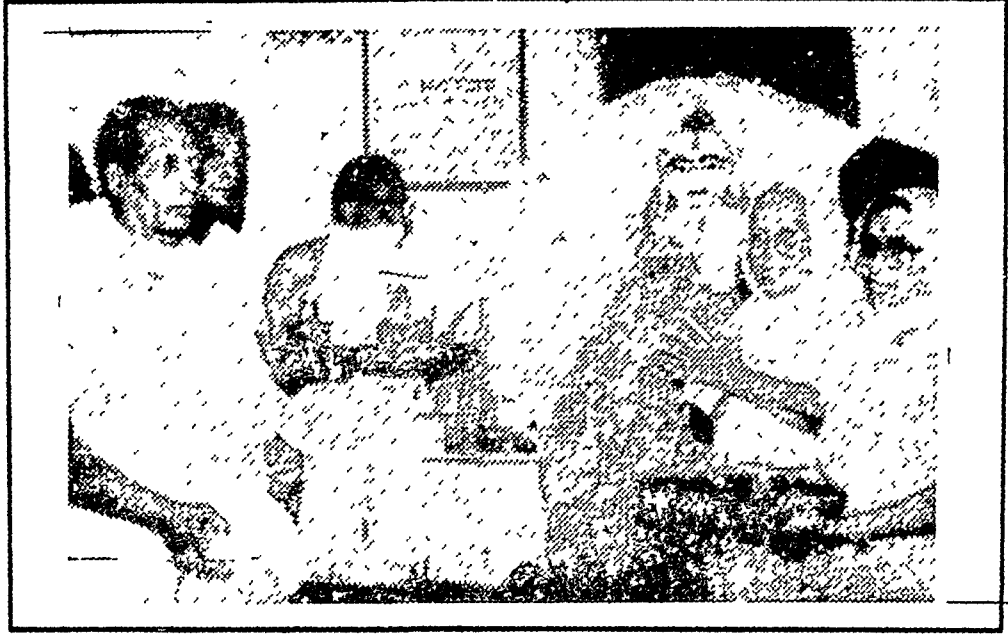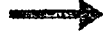
चढ़ावे से भगवान को लेकर प्रथम प्रवेश करते हुए श्री हीराभाई चौधरी एवं कुम्भ कलश लेकर प्रवेश करते हुए श्रीमती ज्ञानाबाई जवाहरलालजी चौरडिया ←

नव–निर्मित आवास गृह एवं निर्माणाधीन जिनालय का दृश्य →
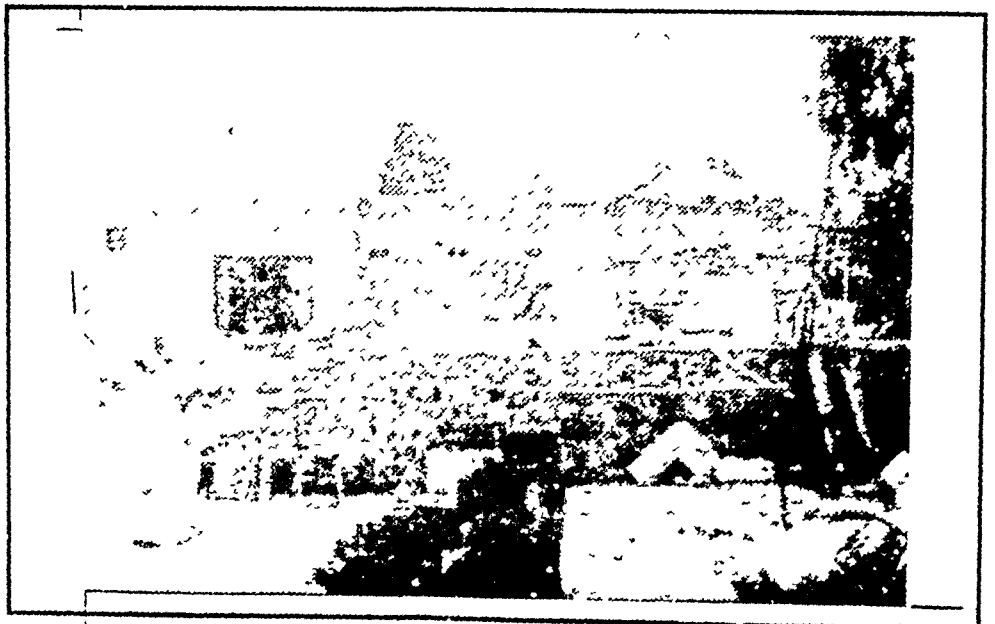
## दि0 30 जून, 1996 को स्वरोजगार प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह

समारोह के मुख्य अतिथि श्री मोहनलाल गुप्ता महापौर, नगर निगम जयपुर का स्वागत करते हुए सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी →

समारोह के अध्यक्ष श्री ज्ञानचन्दजी बम्ब, पार्षद नगर निगम, जयपुर का स्वागत ←

समारोह को सम्बोधित करते हुए म महापौर →

## श्री विजयानन्द स्वर्गारोहण शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत दि. 1-10-95 को आयोजित विशिष्ट तपस्वी अभिनन्दन समारोह

समारोह के लाभार्थी एवं संयोजक श्री तरसेमकुमार जी जैन विधानसभा अध्यक्ष मा. श्री शांतिलाल चपलोत का स्वागत करते हुए →

स्थानकवासी संत श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. तपस्वियों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए। ←

महत्तरा साध्वीजी म.सा. के साथ विराजित चारों सम्प्रदायों की साध्वी वृन्द →
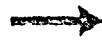
# मुनिश्री पूर्णानन्द सागरजी म० सा० की ४१ दिवसीय उपवास की महान तपस्या सानन्द सम्पन्न

आ० श्री जिन महोदय सागर सूरीश्वरजी म०सा०

मुनि श्री पूर्णानन्द सागरजी म०

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ गणनायक प०पू० स्व० सुखसागरजी म० सा० की पट्ट परम्परा के आचार्यश्री जिन उदयसागरसूरीश्वरजी म०सा० के पट्टधर परम पू० छत्तीसगढ़ विभूषण जैनाचार्यश्री जिन महोदय सागरसूरीश्वरजी म०सा० आदि ठाणा–३ का इस वर्ष जयपुर मे चातुर्मास सम्पन्न हो रहा है।

आपके साथ बिराजित आपके ही शिष्य सेवाभावी तपस्वी मुनिश्री पूर्णानन्द सागरजी म०सा० ने ४१ दिवसीय उपवास की महान तपस्या की। दि० २७–७–९६ को प्रारम्भ हुआ उपवास दि० ५–९–९६ को सानन्द सम्पन्न हुआ। इस उपलक्ष में श्री शिवजीराम भवन में अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया जिसके मुख्य अतिथि मा० श्री ललित किशोर चतुर्वेदी, सार्वजनिक निर्माण मत्री, राजस्थान थे। महत्तरा साध्वी श्री सुमगला श्रीजी म०, सा० श्री जीवयशा श्रीजी म०, सा० श्री हर्षयशाश्रीजी म० के साथ–साथ जयपुर के समस्त श्वेताम्बर समाज के पदाधिकारियों ने आपकी तपस्या की भाव भरे शब्दों में अनुमोदना की।

तपस्वी मुनि श्री पूर्णानन्दजी सागरजी म०सा० का जन्म सम्वत् २०११ (सन् १९५५) में धमतरी ग्राम में पिता श्री जमनालाल जी बगाणी एव माता श्रीमती कस्तुरीबाई के यहा हुआ। १९ वर्ष की आयु मे ही आपकी दीक्षा सम्वत् २०३० में (सन् १९७३) में आचार्यश्री जिन उदयसागरजी सूरीश्वरजी म०सा० के पास हुई। अब तक आप दो मास क्षमण, ४३ नवपदजी की ओली के साथ अनेकों उपवास कर चुके हैं। छ साल से अधिक समय तक एकात्र कर रहे हैं।

ऐसे महान तपस्वी को श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ एव सम्पादक मण्डल की ओर से हार्दिक वन्दन अभिनन्दन।

# "बरखेड़ा तीर्थ का जीर्णोद्धार"

❑ शासन दीपिका महत्तरा साध्वी श्री सुमंगला श्रीजी म., जयपुर

आदिमं पृथिवीनाथ - माऽऽदिमं निष्परिग्रहम्।
आदिमं तीर्थनाथं च, ऋषभ स्वामिनं स्तुमः।।

आदि तीर्थकर आदिनाथ प्रभु इस अवसर्पिणी काल में राज व्यवस्था स्थापित करने से प्रथम राजा बने। राज्य वैभव, सुख सम्पत्ति आदि भौतिक साधनों का त्याग करने से प्रथम मुनि अणगार बने और निकाचित कर्मो को क्षपित कर केवल ज्ञान रूपी लक्ष्मी को प्राप्त कर लेने से एवं देवताओं के द्वारा समवसरण की रचना अष्ट प्रातिहार्य व चार अतिशय युक्त बारह गुणों से सुशोभित होने से तथा प्रथम तीर्थ की स्थापना करने से प्रथम तीर्थकर बने।

अरिंहतादि धर्म की आदि करने वाले आकाश में उदित सूर्य और चन्द्रमा के समान तीर्थकर पद और केवलज्ञान केवल दर्शन से जिन शासन रूपी गगन को आलोकित करने वाले आदिनाथ प्रभु एक लाख वर्ष तक भरतक्षेत्र की भूमि पर विचरण करके अनेक अनार्य देशों के मनुष्यों को धर्म बोध कराया। परमात्मा ने सच्ची मातृभक्ति का परिचय दिया। आदिनाथ प्रभु केवलज्ञान, केवल दर्शन रूपी लक्ष्मी के स्वामी होने पर भी अपनी जन्मदात्री माता मारूदेवी को प्रथम अनन्त अव्याबाध सुख का स्वामित्व दिया यानि स्वयं पहले मुक्तिमहल में न जाकर माता को भेजा।

ऐसे अनन्त करुणानिधान जो शाश्वत तीर्थ सिद्धाचल के राजा हैं। इस तीर्थ की महिमा अपार है। कहा जाता है कि "कांकरे-कांकरे सिद्ध अनंता" इस तीर्थ भूमि के एक-एक कंकर का स्पर्श करके अनंत आत्मा ने सिद्धि गमन किया ! अरे ! इस तीर्थ की इतनी बड़ी महत्ता है कि पापी से पापी आत्मा भी इस तीर्थ का स्पर्श करके पावन बन जाता है। इस विषम काल के अंदर पापी जीवात्मा को तरने के लिये इस तीर्थ का सबसे बड़ा आधार है।

सन् 1995 में गुलाबी नगरी जयपुर के श्री संघ की चातुर्मास करवाने की आग्रह भरी विनती को देख जब मैंने निश्चय किया और चातुर्मास प्रवेश के पश्चात् जयपुर संघ के कुछ पदाधिकारीगण एवं धर्म श्रद्धालु श्रावक जनों ने जयपुर के सन्निकट बरखेड़ा गांव में देवाधिदेव श्री आदिनाथ भगवान की सात सौ वर्ष की भव्य प्राचीनतम प्रतिमा का वर्णन किया तथा तीन सौ वर्ष प्राचीन उस देवालय की जीर्ण-शीर्णता का परिचय कराया तो मेरा मन उदास हो गया। श्री संघ ने इस तीर्थ का जीर्णोद्धार करवाने की भावना रखी तो मैंने भी अपनी अंतर भावना को दृढ़ बनाते हुये कहा कि ऐसे प्राचीनतम तीर्थ का जीर्णोद्धार होना ही चाहिये। श्री संघ ने तीर्थोद्धार के पुराने प्रयास को सफल करने के लिये व मेरी भावना और दृढ़ निश्चय को मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान का उत्थापन करवा कर साकार रूप दिया।

छः खण्ड के अधिपति भरत चक्रवर्ती महाराज ने परमात्मा श्री आदिनाथ भगवान की दिव्य देशना को सुनकर अपनी चक्रवर्ती की ऋद्धि-सिद्धि के साथ श्री सिद्धाचल तीर्थ का छ'रिपालित यात्रा संघ लेकर तीर्थ दर्शन करके अपने जीवन को धन्य-धन्य बनाया और उस तीर्थ का प्रथम तीर्थ जीर्णोद्धार करवा कर लाभ प्राप्त किया। ठीक इसी प्रकार मेरी भावना के अनुसार जयपुर से श्री बरखेड़ा तीर्थ का पैदल यात्रा संघ श्रीमान् हीराचंदजी मोती चंद जी वैद परिवार

के द्वारा निकाला गया। उस सघ मे सध के साथ जाकर परम परमात्मा आदिनाथ भगवान के दर्शन कर अपने आपको धन्य समझा। पूज्य गुरूदेव परमारक्षत्रियोद्वारक चारित्र चूड़ामणि आचार्य देव श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी म सा के पावन आशीर्वाद तथा शांतिदूत आचार्य प्रवर श्रीमद् विजय नित्यानन्द सूरीश्वर जी म सा द्वारा प्रदत्त शुभ मुहूर्त मे जिनालय का भूमिपूजन एव शिलान्यास करवाया।

आज इस तीर्थ के जिनालय का जीर्णोद्वार कार्य प्रगति पर है। जिन शासन रूपी वट वृक्ष सघ की प्रत्येक शाखा-प्रशाखा के सहयोग से इस जिनालय का जीर्णोद्वार का कार्य शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण होगा और उस स्वर्णिम दिन का इन्तजार कर रहे है कि जब गुरू भगवन्तो के कर कमलों द्वारा महामहोत्सव के साथ मगल भावनाओ से भर कर परमात्म प्रतिमा को मूल गादी पर पुन प्रतिष्ठित कर अपने जीवन को कृत-कृत्य करेगे।

इसी मगलमयी भावनाओ के साथ .

# बरखेड़ा आदिनाथ प्रभु

□ सा पूर्ण नंदिता श्रीजी, भीलवाड़ा

(तर्ज - तेरी गलियों मे ना रखेगे कदम )

तेरी शरण मे आज आयेंगे हम, वरखेड़ा प्रभु
तेरी भक्ति मे झूमे गायेंगे हम, आदिनाथ प्रभु

अन्तरा

तरण तारण तुम्हीं, तुम्हीं हो रखवार
मेरी जीवन नैया, भव से कर दो पार
तेरे दर्शन से मुक्ति पायेगे हम
वरखेड़ा प्रभु

दुर्व्यसनो ने आज हमको घेरा है
दुष्कर्मों को टारो, तू ही हमारा आधार है।
तेरे चरणों में सिर झुकायेगे हम
वरखेड़ा प्रभु

करुणा सागर नाथ दया करो प्रभु
लख चौरासी से अटकादो हो विभु
कहती सुमगल शिशु गुण गायेगे हम
वरखेड़ा प्रभु

दुनिया मे अगर आदिनाथ का अवतार न होता,
तो रह मे गुलिस्तान ये गुलजार न होता।
इन्सान को इन्सानियत से प्यार न होता,
गफलत से आदमी भी खबरदार न होता।।

# "तीर्थ महिमा"

❑ सा. श्री प्रफुल्ल प्रभा श्रीजी म., जयपुर

तीर्यतेऽनेनांन इति तीर्थ– जिसके द्वारा पार किया जाता है उसे तीर्थ कहते हैं। जो अपनी आत्मा को संसार सागर से तिराता है वह तीर्थ है। तीर्थ दो प्रकार का होता है (1) जंगम तीर्थ (2) स्थावर तीर्थ।

## जंगम तीर्थ

हमारी जैन संस्कृति में जितने भी पंच महाव्रत धारी श्रमण-श्रमणीवृन्द हैं वे जंगम तीर्थ कहलाते हैं। जो इस जगति तल पर विचरण कर जिनवाणी का पान कराते हैं। सत्य धर्म की प्रेरणा में पथ प्रदर्शक बन कर पथ से भटके हुये को सही मार्ग पर प्रयाण कराते हैं।

## स्थावर तीर्थ

जो तीर्थंकर परमात्मा की कल्याणक भूमि, विहार भूमि, पूर्वाचार्यो की साधना भूमि, प्राचीन प्रतिमा एवं प्राचीन जिनालय है वे सभी जैनागमों के अनुसार तीर्थ माने जाते हैं। ऐसी पवित्र भूमियों के रजकणों का स्पर्श करके अनेकों आत्माएँ भवपार हो गई और पापी आत्माएं भी पावन बन गई।

तीर्थ के विषय में कहा भी है कि–

**अन्य स्थाने कृतं पापं, तीर्थ स्थाने विनश्यति।**

**तीर्थ स्थाने कृतं पापं, वज्रलेपो भविष्यति।।**

अन्य स्थान में किये गये जो पाप कर्म हैं वे तीर्थ भूमि का स्पर्श करके विनष्ट किये जा सकते हैं लेकिन जो पाप कर्म तीर्थ की पवित्र भूमि पर अर्जित करते हैं वे पाप वज्रलेप के समान हो जाते हैं। भविष्य में इन अशुभ कर्मो को भोगना ही पड़ता है।

पंडित श्री वीर विजयजी म. सा. ने बताया कि– **"पत्थर पण कोई तीर्थ प्रभावे जलमां दीसे तरतो रे, तिम हुं, तरसुं, तुम पाय वलग्या, केम राखो छो अलगो रे"**

परम परमात्मा आदि तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान ने भी तीर्थ की महिमा का वर्णन करते हुये फरमाया कि–

**एकेकुं डगलुं भरे, शत्रुंजय सामुं जेह।**

**ऋषभ कहे भव क्रोडनां, कर्म खपावे तेह।।**

स्वयं परमात्मा श्री आदिनाथ भगवान पूर्व नव्वाणुं बार शाश्वत तीर्थ श्री सिद्धाचल तीर्थ (पालीताणा) का स्पर्श किया था और अष्टापद तीर्थ पर निर्वाण पद को प्राप्त किया।

ऐसे अनेकों तीर्थ इस भारत भूमि पर है। जैसे कि शत्रुंजय, सम्मेत शिखर, गिरनार, चंपापुरी, पावापुरी, कुण्डलपुर, हस्तिनापुर, अयोध्या नगरी आदि जो परमात्मा की कल्याणक भूमियां है। वैसे ही शंखेश्वर, नान्दिया, आबू, देलवाड़ा, कुंभारिया, वरकाणा, राणकपुर, जैसलमेर, जीरावला आदि भी तीर्थ भूमि है वहां पर अनंत आत्माओं ने धर्म भावना में आरूढ़ होकर शाश्वत सुखों को प्राप्त किया।

तीर्थ की महिमा और गरिमा को सुनकर अनेक भव्य आत्माओं ने तीर्थ दर्शन के लिये छ'रि पालित यात्रा संघ निकाले। परमात्मा श्री आदिनाथ भगवान के ज्येष्ठ और श्रेष्ठ पुत्र षट्खण्ड के अधिपति भरत महाराज षट्खण्ड पर विजय प्राप्ति के वाद चक्रवर्ती की

ऋद्धि-सिद्धि के साथ जब अपनी दादी माँ मरूदेवी के चरणों मे नमस्कार करता हे तब मा मरूदेवी उसको आशीर्वाद देती हे ओर प्रेरणा करती हे कि भरत ! मुझे विजय प्राप्ति की खुशी तभी होगी कि जब तू शाश्वत तीर्थ श्री सिद्धाचलजी का सघ निकालेगा। बस दादी मा की भावना के अनुरूप भरत महाराजा ने बडी ऋद्धि-सिद्धि के साथ सर्वप्रथम श्री सिद्धाचल तीर्थ का छ'रिपालित यात्रा सघ निकाला और श्री सिद्धाचल तीर्थ का भी सर्वप्रथम जीर्णाद्धार कराया।

हमारे पूर्वाचार्यो की भी प्रेरणा रही हे जिसके फलस्वरूप अनेकों प्रतापी पुरूषों ने यात्रा सघ निकाले जिनके नाम आज भी जेन इतिहास में स्वर्णाक्षर में अंकित हैं। उन महान आत्माओं ने छ'रि पालित यात्रा सघ निकाल कर अपनी पुण्य लक्ष्मी का सदुपयोग तो किया ही साथ ही उन्होंने जिन मंदिर ओर जिन प्रतिमाओं की आशातना दूर करके तीर्थ को भी सुरक्षित रखा।

कुमारपाल, राजा विक्रमादित्य, महामत्री वस्तुपाल, तेजपाल, महामत्री पेथड़शाह, जगडुशाह आदि अनेको महान आत्माओ ने सैंकडों साधु-साध्वी और हजारों श्रावक-श्राविकाओं के साथ छ'रि के कर्तव्य को पालन करते हुये ओर मार्ग में जितने भी जिन मंदिर आते उन सभी पर सूक्ष्म रीति से दृष्टिपात करते हुये उनकी आशातना का निवारण करते थे। जहा कहीं भी साधर्मिक भाई आर्थिक स्थिति से कमजोर मिलते उनकी भी व्यवस्था करते थे। उन्हें हर तरह की सुख-सुविधा देकर धर्म में स्थिर किया करते। यात्रा में चलने वाले यात्री प्रत्येक भाग्यवान को चाहे वह छोटा हो या बड़ा, गरीब हो या अमीर उनकी दृष्टि में समानता थी। गुरू भगवतों की हर तरह से सुखसाता का ख्याल कर आहार-पानी, वहोराने के बाद एव प्रत्येक यात्री भाग्यवानों को भोजन करवा कर ही वे भोजन करते। वे स्वय छ'रि के नियमों का दृढ़पूर्वक पालन करते और सभी को पालन करवाते।

छ'रि निम्न है— एकलहारि, पादचारि, सचित्तपरिहारि, ब्रह्मचारी, भूमि सथारि और आवश्यककारि।

एकलहारि—तीर्थ यात्री एकासना करें। एक समय ही भोजन करना। पादचारि— पैदल चलना। किसी भी प्रकार के वाहन का उपयोग नहीं करना। सचित्तपरिहारी— सचित्त वस्तु का सेवन नहीं करना।

ब्रह्मचारी—मन, वचन, काया से पूर्णरीति से ब्रह्मचर्य का पालन करना।

भूमि सथारि—गद्दे तकिये का त्याग कर सथारा उत्तरपट्टा विछाकर भूमिशयन करना।

आवश्यककारि—पूर्ण श्रद्धा से जो दैनिक कर्तव्य कहे गये हैं - सामायिक, प्रतिक्रमण, प्रभु पूजा, गुरूवन्दन, काउस्सग्ग ओर प्रत्याख्यान उसको अवश्य ही करना।

छ'रि पालित यात्रा सघ में सघपति अपने परिवार सहित स्वय कर्तव्य का पालन करता और साथ में चलने वाले यात्रियों को भी पालन करवाता है।

आज वर्तमान काल में भी प पू आचार्य भगवन्तों की प्रेरणा और निश्रा में वडे-वड़े तीर्थों के पालीताणा, सम्मेत शिखरजी, शखेश्वर, गिरनार, जेसलमेर आदि के सघ निकलते हैं।

परम पूज्य श्रद्धेय गुरूदेव वर्तमान गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी म सा ने सन् 1992 का चातुर्मास सादडी का पूर्ण कर वाफना परिवार की ओर से सादड़ी से पालीताणा तीर्थ का पैदल सघ निकलना था। सघ की तेयारी चल रही थी, उस समय अयोध्या के राम मंदिर को लेकर भारत के विभिन्न प्रान्तों में हिन्दु-मुस्लिम का भयकर आपसी मन-मुटाव चल रहा था। जगह-जगह जन हानि की जा रही थी। लोगों को घर से बाहर निकलना मुश्किल था। ऐसी गभीर स्थिति में सभी के मन में भय था कि यह पेदल यात्रा सघ कैसे निकलेगा ? लेकिन श्रद्धेय गुरूदेव का दृढ़ निश्चय था

उसी आस्था और श्रद्धा के साथ स्वयं ने उत्कृष्ट आयंबिल तप की साधना करते हुये विशाल यात्रा संघ का प्रयाण हुआ। यात्रियों को छ'रि कर्तव्य का पूर्णरीति से पालन करवाते हुये अट्ठम तप व आयंबिल तप की साधना जारी रखी और ऐसे भंयकर वातावरण में संघ निर्विध्नता पूर्वक अनेक तीर्थों की यात्रा करता हुआ दो महीने के लंबे सफर में देवाधिदेव श्री आदिनाथ भगवान का धाम श्री पालीताणा तीर्थ में पहुंचा।

ऐसे जिन शासन प्रभावक आचार्य भगवन् आज भी तीर्थ यात्रा के द्वारा जिन शासन की प्रभावना कर अनेक आत्मा को धर्म मार्ग पर आरूढ करवाते हैं।

इन्हीं पूज्य गुरूदेव की असीम कृपा और पूर्ण आशीर्वाद का प्रतिफल है कि श्रद्धेया गुरुवर्य्या श्री महत्तराजी म. ने गत जयपुर चातुर्मास में तीर्थ जीर्णोद्धार और पैदल यात्रा संघ से पूर्ण सफलता को प्राप्त किया। जयपुर के निकट 30 कि. मि. की दूरी पर बरखेड़ा तीर्थ है जहां देवाधिदेव आदिनाथ भगवान की सातसौ वर्ष की प्राचीन प्रतिमा और तीन सौ वर्ष का प्राचीन जिनालय है। काल की क्षति के अनुसार मंदिर जीर्ण-शीर्ण हो चुका था। पूज्य गुरुवर्य्या जी की प्रेरणा से जयपुर श्री संघ ने तीर्थ जीर्णाद्धार का तय किया उस समय गुरुवर्य्या जी के मन में भावना जागृत हुई कि मैं भी पैदल यात्रा संघ के साथ तीर्थ भूमि बरखेड़ा पहुँच कर भूमिपूजन और शिलान्यास करवाऊं। भावना ने साकार रूप लिया और परम उदारमना गुरू भक्त श्री मोतीचंद जी वैद ने गुरू के बोल का मोल करते हुये पू. गुरुवर्य्या की निश्रा में पैदल तीर्थ यात्रा संघ निकलवाने की जय बुलवाई। और यह पैदल यात्रा संघ मार्गशीर्ष कृष्णा षष्ठी के शुभ दिन श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन से प्रयाण हुआ। मालवीय नगर कल्याण कोलोनी में स्थिति श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान के दर्शन पूजन भक्ति की। द्वितीय दिन संघ ने बीलवा में स्थिरता कर वहां पर भी जिन भक्ति का अनोखा रंग जमाया। तृतीय दिन संघ अपनी निष्ठा का केन्द्र बरखेड़ा श्री आदिनाथ भगवान की छत्र छाया में पहुँचा। परमात्मा के दर्शन अपूर्व भक्ति भावना से नाचते गाते कर अपने नेत्र सफल किये। वहां सरोवर के सुरम्य किनारे पर बने पंडाल में जैनागम की विधि के अनुसार तीर्थ माला रोहण की विधि करवाई गई। अपूर्व उल्लास उमंग से श्री हीराचंदजी वैद ने चढ़ावा लेकर अपने अनुज भाई श्री मोतीचंदजी वैद को तीर्थमाला धारण करवाई।

गुरुवर्य्या जी की भावनानुसार पैदल यात्रा संघ के साथ तीर्थ भूमि पर पधारी और जिनालय का भूमिपूजन और शिलान्यास करवाया। आज इस तीर्थ जीर्णोद्वार का कार्य प्रगति पर है।

इस प्रकार वर्तमान युग में तीर्थो की महत्ता को ध्यान में रखकर युवावर्ग को तीर्थों की ओर प्रेरित करना चाहिये और युवकों को धार्मिक बनाने तथा जैन संस्कृति के मूल उद्गम तीर्थो तक खींच लाने के लिये पैदल यात्रा संघ एक सहज मार्ग है। इस पर भी यदि छ'रि पालित यात्रा संघ निकले तो मार्ग में स्थान-स्थान पर जैन दर्शन की विविध कथाओं के माध्यम से रूचिकर बनाकर ज्ञान कराया जा सकता है।

ऐसे यात्रा संघ को आयोजित करने वाले उसकी प्रेरणा देने वाले तथा यात्री सभी पुण्य के भागी बनते हैं।

वैद्यकशास्त्र कहते हैं कि कुछ औपधियों को वार-वार कूटो, कुछेक औषधियों को वार-वार मर्दन करो, या कुछेक औषधियों को वार-वार घोटो तो उनमें इस क्रिया से शक्ति प्रवल, प्रवलतर और प्रवलतम होती जाती है; वैसे ही धर्मशास्त्र कहता है कि अनित्य, अशरण, एकत्व और अन्यत्व आदि भावनाओं को जितना अधिक से अधिक भावोगे, उतनी ही उनमें शक्ति प्रवल, प्रवलतर और प्रवलतम होती जाएगी। वैद्यकीय औषधियाँ देह के रोगों को मिटाती हैं तो धर्मशास्त्र में उपदिष्ट भावनाएँ कर्मरोगों को मिटाती हैं।

# ज्वार और भाटा

☐ सा श्री कुसुम प्रभा श्री जी म , दिल्ली

☐ जीवन के समुद्र मे समय-समय पर आने वाले ज्वार निश्चित ही भावनाओ की लहरों को ऊचा, ओर ऊचा उठाते हुए उन्नति की सीढ़िया तैयार करते है।

☐ जो उन सीढ़ियों पर पैर रखते हुए आगे बढ़ता है वह क्रमश· लक्ष्य के निकट पहुच जाता है। ओर ,

☐ जो ज्वार की उथल-पुथल मचाने वाली हलचल से घबराता है तथा भाटे की प्रतिक्षा में बैठा रहता हे, उसके कदम कभी आगे बढ़ने का अवसर नहीं पाते।

☐ ज्वार, लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढने का एक आग्रह भरा निमत्रण हे। उसे अस्वीकार करना कायर ओर अकर्मण्य के लिए सभव है।

☐ भाटा, साहसहीन व्यक्तियों की कल्पना को भटकाए रखने वाली एक मरू मरीचिका है। उसके निमत्रण को स्वीकार करने वाला सदेव पाने की आशा करता है, किन्तु पाता कभी नहीं।

# परमात्म पुकार

☐ प्रस्तोत्री कु अजिता कुचेरा

तर्ज - तुम्हीं मेरे मंदिर

तुम्हीं मेरे मालिक, तुम्हीं मेरे स्वामी तुम्हीं हो सहारा।
मेरी वदना लो ।

(1) नहीं इस जग मे हे कोई मेरा, आफत ने सारा जीवन है घेरा
तुम्हीं दीन वन्धु, करूणा के सिधु, करके दया अव मेरी भावना तो

(2) कोन सुने जो खुद ही हो सोते, आज उठे और कल ही जो ढलते
आशा से वधे, तृष्णा में अधे, भव दु खियों की सभारना लो

(3) हमने तो खोया, खोया ही खोया, अवसर पाकर मोह नींद में सोया
आ अव जगादो, पार लगा दो, वने "सुमगल शिशु" की यह कामना
तुम्हीं मेरे मालिक

# विश्व वन्दनीय विजयानन्द

□ आ. श्रीमद् विजय नित्यानंद सूरिजी म., जालंधर

आज राष्ट्रीय विचारधारा में आध्यात्मिक अभिव्यक्ति को समाहित करने का प्रयास सभी के लिए हितकारी है किन्तु उपभोक्तावाद के शिखर की ओर उन्मुख विविध विभिषिकाओं से बाह्य तथा आन्तरिक रूप से आक्रान्त राष्ट्र में समन्वय की सुरसरिता बहाने वाले किसी भागीरथ, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं चारित्रिक चेतना के वरदान का विस्तार करने वाले किसी कल्पद्रुम की आवश्यकता है। आज के भारतीय समाज में धर्म की व्यापकता के साथ उसका सहिष्णु-समन्वयात्मक स्वरूप अत्यन्त आवश्यक है। ऐसे में म्रियमाण मानवता के संजीवक, स्वधर्म-प्रशंसक, विद्वान् योगीराज जैन आचार्य श्रीमद् विजयानन्द सूरीश्वर जी महाराज के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का अध्ययन समीचीन ही नहीं आवश्यक भी है।

पूज्य गुरूदेव ने विश्व को बताया कि "वसुधैव कुटुम्बकम्" की सद्भावना का विकास तो तभी सम्भव है जब हम सभी धर्मों तथा उपासना पद्धतियों का आदर करते हुए स्वयं अपने धर्म में पूर्ण निष्ठा रखें एवं किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह से बचें। जो मात्र स्वयं की मर्यादा की चिन्ता में अहर्निश जीता है वह धर्म की महत्ता को नहीं समझ सकता। इसीलिए जब मालेरकोटला में मुन्शी अब्दुल रहमान ने गुरूदेव से प्रश्न किया कि 'महाराज! आप वीतराग किसे कहते हैं ?' गुरूदेव ने उत्तर दिया- 'खुदा को'। गुरूदेव ने विस्तार से समझाया कि जिसमें किसी प्रकार का दोष नहीं हो वह सर्वज्ञ सर्वदर्शी वीतराग परमात्मा या खुदा है।' आपकी वाणी में विद्वता के साथ-साथ सहजता और सरलता भी थी जिससे जो भी आपसे मिलता वह प्रभावित हुए विना नहीं रहता था।

वि.सं. 1894 चैत्र शुक्ला प्रतिपदा के दिन जीरा (पंजाब) नामक कस्बे के समीप लहरा गाँव में जन्में बालक आत्माराम को देखकर ग्रामवासी स्वतः ही कह उठते थे कि यह तो कोई अद्भुत बालक होगा। वह समस्त घटना चक्र जो आपके लहरा से जीरा तक के बाल्य जीवन में घटा, जीवन की वास्तविकता का निर्देशन करने के लिए पर्याप्त था। अपनी माता रूपा देवी व पिता गणेशचन्द्र जी से दूर पिताजी के मित्र श्री जोधेशाह के पास रहते हुए आप में वैराग्य के बीज प्रस्फुटित हो गए थे। जिस अवस्था में बच्चे अपना समय खेलकूद में बिताते हैं आप आत्मकेन्द्रित होकर अध्ययन में लीन हो जाते थे।

जैन धर्म में दीक्षा ग्रहण करने के बाद देश की जनता से सीधा साक्षात्कार करने से पहले आपने सभी धर्मग्रन्थों का, दर्शनों का एवं विविध भाषाओं का गम्भीरता पूर्वक अध्ययन किया। आपका कहना था कि भाई, जब तक मैं स्वयं का अंधियारा दूर नहीं कर लूँगा तब तक दूसरों को सत्यमार्ग कैसे दिखाऊँगा। इसीलिए तो प्रभु महावीर ने कहा है 'अप्प दीपो भव' (स्वयं दीपक बनो)। जब ज्ञान की पावन गंगा में आपने स्नान कर लिया तब भगवान महावीर के उपदेशों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए पंजाब से गुजरात तक गाँव-गाँव पैदल विहार किया। आप आकृति व प्रकृति से महासागर की तरह कान्त व प्रशान्त थे। आपके अन्तस् में परोपकार, वैराग्य एवं सर्वधर्म समभाव की ऐसी त्रिवेणी बहती थी कि जहाँ भी आप जाते सभी आपके उपदेशों से प्रभावित होते। सन् 1893 ई. में शिकागो में आयोजित होने वाले

र्म सम्मेलन में आपको जैन धर्म के प्रतिनिधि के रूप ने आने के लिए श्री विलियम पाइप, सचिव धर्म परिषद् ने आमत्रण पत्र भेजा था किन्तु आपने जेन साधु की मर्यादा का पालन करते हुए व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होने मे असमर्थता प्रकट की किन्तु ऐसे समारोह की भूरि-भूरि प्रशसा करते हुए अपने प्रतिनिधि श्री वीरचन्द राघव जी गाँधी को उपदेश देकर शिकागो भेजा। स्वामी विवेकानन्द एव श्री वीर चन्द जी ने अपने वक्तव्यो से वहाँ उपस्थित प्रतिनिधियो को जिस प्रकार प्रभावित किया यह एक ऐतिहासिक घटना है।

सत्रह दिनों तक चले इस महा अधिवेशन मे श्री गाँधी को 15वे दिन 25 सितम्बर 1893 को अवसर दिया गया। श्री गँधी बोले-" मे इस समय अपनी समाज ओर उसके महान् गुरू मुनि श्री आत्माराम जी की ओर से आपके प्रेमपूर्ण स्वागत का आभार मानता हूँ। धर्म और दर्शन के विद्वान् नेताओं का एक ही मच पर एकत्रित होकर धार्मिक समस्याओं पर प्रकाश डालने का यह भव्य दृश्य श्री आत्मारामजी के जीवन का आदर्श रहा है। श्री जी ने मुझे आदेश दिया है कि में विशेपत उनकी ओर से तथा समस्त जैन समाज की ओर से धर्म परिषद् आयोजित करने के उच्च विचार को कार्यरूप में परिणत करने मे सफल होने पर आपको बधाई अर्पित करूँ। श्री गाँधी की स्पष्टवादिता, निर्भीकता, सत्यप्रियता एव सारगर्भित प्रवचनों में पृज्य गुरूदेव के विचारो और चिन्तन का स्पष्ट प्रभाव दिखता था।

आज से 103 वर्ष पहले भारतीयों को विश्व बन्धुत्व की भावना को विश्व मच पर श्री गाँधी एव स्वामी विवेकानन्द ने प्रस्तुत किया था। आज आचार्य विजयानन्द सूरीश्वर जी महाराज के उपदेश मानव मात्र को धर्म निरपेक्षता के सही अर्थ समझाने में अत्यन्त प्रभावी है। प्रभु महावीर ने मानव मात्र की सेवा को ही सच्चा धर्म कहा था ओर इसी सिद्धान्त का अनुसरण करते हुए पूज्य गुरूदेव ने यह चिन्तन मनन किया कि यदि मनव समाज का कल्याण करना है तो पहले अशिक्षा का अन्धकार दूर करना होगा और इसके लिए वे आजीवन प्रयत्नशील रहे। जीवन के अन्तिम घड़ी में अपने परम प्रिय शिष्य महान् शिक्षाविद् आचार्य श्रीमद् वल्लभ सूरिजी म को अपने पास बुलाकर कहा था—"वल्लभ! लुधियाने वाली बात याद है न ?

हाँ, गुरूदेव।

गुरूदेव—"उसका पूरा-पूरा ध्यान रखना।" ज्ञान के बिना लोग धर्म को नहीं समझ पावेगे।"

इन शब्दों से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि देश की जनता के सर्वांगीण विकास के लिए आपके हृदय में कितनी पीड़ा थी।

इस वन्दनीय सन्त की इस वर्ष स्वर्गारोहण शताब्दी मनाई जा रही है। उनके अनुयायी देश भर मे विद्यालय, औषधालय, पुस्तकालय, सेवाश्रम, अस्पताल, धर्मशाला आदि अन्य जन कल्याण के केन्द्र खुलवाकर परोपकार कर रहे हैं और यही उस महान् आत्मा के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि है।

जलते दीप ही बुझे दीपो को जला देते हे,<br>
मुरझाये हुये फूलो को पानी महका देते है।<br>
परोपकारी होते है सत महन्त जो<br>
भटकते राही को मंजिल से मिला देते हैं।।

❖❖❖

जैसे— हीरे की महत्ता किसी दूसरे के कारण नहीं बल्कि उसकी अपनी तेजस्विता के कारण होती है, वैसे ही महापुरुषो की महत्ता भी किसी दूसरे के कारण नही बल्कि स्वय उनके सद्गुणो और विशेषताओ के कारण होती है। ☐☐

# मथुरा में प्राचीन जैन इतिहास

☐ मुनि श्री भुवन सुंदर विजयजी गणी म.
अहमदाबाद

**आज से करीब १०० वर्ष पूर्व प्राचीन मथुरा नगरी के ऐतिहासिक कंकाली टीले की खुदाई आर्कियोलोजीकल सर्वे ऑफ इन्डिया ने करवायी थी। वहाँ से १५०० जितनी, जिन मूर्तियाँ, १०० जितने महत्त्वपूर्ण शिलालेख, तीन विशाल जिन मंदिरों के तोरण, स्तूप के जीर्ण भाग, चतुर्मुख तीर्थंकर की मूर्ति, आयाग पट्टों, समवसण इत्यादि अत्यधिक महत्त्वपूर्ण सामग्री प्राप्त हुई है, जो कि आज से २२००–२३०० वर्ष पुरानी है। हाल में यह सामग्री वहाँ के म्युजीयम में दर्शनीय है।**

**अर्थात् आज से २२००–२३०० वर्ष पूर्व में भी ऐतिहासिक नगरी मथुरा में जैन धर्म का प्रचार था, वहाँ जिन मंदिर थे। इस विषय में ऐतिहासिक यह लेख अत्यंत मननीय है।**

**मुनिश्री भुवन सुंदर विजयजी गणी म. ने परिश्रम करके व अहमदाबाद स्थित इतिहासविद् विद्वानों से परामर्श कर यह लेख तैयार किया है।**

**आशा है सत्यान्वेषी मुमुक्षु "जैन धर्म में मूर्तिपूजा प्राचीन काल से चली आयी है", ऐसे सत्य का स्वीकार करेंगे और जिन मूर्ति के विरोध के असत्य मार्ग का त्याग करेंगे।**

---

श्री ज्ञाता धर्म कथा आगम के अनुसार तेवीसवें तीर्थंकर भगवान् श्री पार्श्वनाथ मथुरा में पधारे थे और श्री विपाक सूत्र के अनुसार भगवान श्री महावीर स्वामी ने भी मथुरा में विचरण किया था।

वि. सं. 530 में आचार्य श्री विमलसूरिजी म. ने 43 मचरियम् नाम के प्राकृत महाकाव्य का निर्माण किया है, ग्रंथ के अनुसार मथुरा में जैन धर्म का प्रचार-प्रसार अवध से पधारे हुए सात जैन मुनियों के कारण सविशेष हुआ था, जिनके नाम हैं—सूरिमंत्र, श्रीमंत्र, श्री तिलक, सर्वसुंदर, जयमंत्र, अनिललित और जय मित्र।

मथुरा से प्राप्त तीर्थकर भगवान् की मूर्तियों की चौकियों पर उट्टंकित शिलालेखों ई. सन्. पूर्व 150 वर्ष के प्राप्त होते है, इससे यह भलिभाँति विदित होता है कि मथुरा में जैन धर्म का प्रभाव आज से 2200 वर्ष पूर्व में भी व्याप्त था। यद्यपि उस वक्त बौद्ध व शैव धर्म का प्रभाव भी मथुरा में था। श्री विपाक सूत्र के अनुसार मधुरा में यक्ष सुदर्शन का भी विख्यात स्थान था, यानी उस वक्त जैन श्रमणों को भागवतों और यक्ष पूजकों का सामना करना पड़ता था।

आ. श्री विमलसूरि जी म. के अनुसार मथुरा के

प्राय सभी जैनियो के घरों मे तीर्थकरो की प्रतिमाएँ स्थापित थी। मथुरा मे 200 वर्ष पूर्व मुनिसुव्रत स्वामी का मंदिर (चेत्यालय) था।

अग्रेज विद्वान् वुल्हर के अनुसार मथुरा से प्राप्त सवसे प्राचीन शिलालेख ई सन् पूर्वे दूसरी शताब्दी का है, जिसमे लिखा है कि–"श्रावक उत्तरदासक- जो वचि का पुत्र है, उसने श्रमण महारक्षित के सदुपदेश से जिन मंदिर का प्रासाद तोरण निर्माण किया है।" आर्य महारक्षित नाम के जेन श्रमण ई सन् पूर्व दूसरी शताब्दी के मथुरा मे जेन धर्म के सफल प्रचारक थे।

वुल्हर के अनुसार मथुरा में दूसरा एक प्राचीन शिलालेख से यह ज्ञात होता है कि– ई सन् पूर्व 150 वर्ष मे कोशिक गोत्रीय गोत्री पुत्र ओर उसकी पत्नी सीमित्रा ने भगवान् श्री महावीर स्वामी के आयाग पट्टों का निर्माण करवाया था। यह लेख प्राकृत भाषा मे है।

अग्रेज विद्वान् कनिघम ने वताया है कि– मथुरा में से आज तक करीव 100 जितने प्राचीन शिलालेख व 1500 पाषाण की जिनमूर्तियाँ वरामद हुई है, जिनका रचना काल ई सन् पूर्व तीसरी शताब्दी से लेकर 11वीं शताब्दी तक का है, यानी सभी रचनाएँ करीव 1400 वर्ष में बनायी गयी है। मथुरा से प्राप्त इन प्राचीन रचनाओं में भव्य जिन मंदिरों के तोरणों, जिन मूर्तियाँ, वेदिका स्तम्भों, कमल में सर्जित जिन मूर्ति, उत्कीर्ण आयाग पट्टों, सर्वतोभद्र प्रतिमाओं इत्यादि मुख्य हैं।

नौंघ पात्र वावत यह भी है कि– कुछ शिलालेखों से यह ज्ञात होता है कि– जिन मंदिर व मूर्ति निर्माण के धन का व्यय अन्य उदारदिल श्रावकों के साथ जैन श्रमणों के सदुपदेश से प्रभावित होकर गणिकाओं ने भी इनके निर्माण में अपना धन देकर सहयोग दिया था एव अपना अनैतिक जीवन व्यवहार छोड़कर स्वय को वारह व्रतों में जोड़ा था और जिन पूजा मे अपना विश्वास प्रगट किया था। इतिहासविद् भगवान् लाल इन्द्रजी के अनुसार जैन धर्म में समर्पित इन गणिकाओं के नाम– नदा, वासा, दडा, लेणशोभिका इत्यादि है।

ई सन् 82 अर्थात् शक सवत् 4 के एक शिलालेख मे सम्राट कनिष्क व साथ में जैन श्रमण पुष्य मित्र का उल्लेख है। इस शिलालेख में गण, कुल व शाखाओं की भी चर्चा है अर्थात् गण-कुल-शाखा की जैन धर्म में उल्लेख परपरा सम्राट चद्रगुप्त मौर्य के समकालीन 14 पूर्वधर आचार्यश्री भद्रवाहु स्वामी से (ई सन् पूर्व तीसरी शताब्दी से) प्रारम्भ हुई है, क्योंकि भगवान् महावीर देव के वाद 170 वर्ष पर श्री भद्रवाहु स्वामी का स्वर्गवास हुआ था।

राजा कनिष्क, उसका उत्तराधिकारी वसिष्क, उसका पुत्र हविष्क के काल के शिलालेखों से अनेक गण, कुल और शाखाओ के उल्लेख के साथ श्री कल्पसूत्र व नदी सूत्र कथित स्थवीरावली (थेरावली) के नामो मिले-जुले मिलते है अर्थात् इन शिलालेखों के नामों से ये दोनों नदी सूत्र व कल्प सूत्र शास्त्र की पट्टावली-स्थवीरावली भी प्रमाणित होती है, यानी शास्त्र और इतिहास दोनों परस्पर सत्य सिद्ध होते है।

अंग्रेज विद्वान् वुल्हर के अनुसार ककाली टीले से प्राप्त स्तूपों में 'वोऽवास्तूप' अति महत्त्व का है। पूरे भारतवर्ष का यह सवसे प्राचीन स्तूप है। इस स्तूप के शिलालेख में नधावर्त उत्कीर्ण किया गया है, जो कि 18वें तीर्थंकर अरनाथ भगवान से सवंधित है, जिसका जीर्णोद्धार कोलियगण और वैरीशाखा के श्रमण आर्य वृद्धहस्ति के उपदेश से जैन श्राविका दीना ने करवाया था। यह 2 हजार वर्ष पुराना है।

वोऽवास्तूप के विषय में "विविध जैन तीर्थ कल्प शास्त्र" में आचार्य श्री जिन प्रभसूरि जी म ने लिखा है कि– मथुरा में सुपार्श्वनाथ भगवान का सुवर्णमय स्तूप भगवान् श्री सुपार्श्वनाथ के शासन मे उनकी उपासिका कुवेरा नामक दासी ने निर्माण करवाया था। जो जीर्ण-

# कल्पसूत्र यानी एक महान् विश्वकोष इसमें चारों अनुयोगों का खजाना भरा है।

{समकालीन पत्र ले. संजय वोरा}

☐ हिन्दी अनुवाद– मुनिश्री भुवन सुंदर विजयजीगणी, अहमदाबाद

जैन धर्म शाश्वत धर्म हैं प्रत्येक उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल में 24 तीर्थंकर होते हैं। ये तीर्थंकर धर्म तीर्थ का प्रवर्तन करते हैं। जैन धर्म अवतारवाद तथा ईश्वर कर्तृत्ववाद में नहीं मानता। उसके स्थान पर आत्मोत्थानवाद और जीव कर्तृत्ववाद को स्वीकारता है। सर्वज्ञ तीर्थंकर अनादि-अनन्तकाल से प्रत्येक काल-चक्र में होते ही रहते हैं। वे अपने प्रमुख शिष्यों को गणधर पद पर स्थापित करते हैं। तीर्थंकर प्रभु गणधरों को त्रिपदी का ज्ञान देकर अर्थोपदेश करते हैं। गणधर इस ज्ञान के प्रकाश में द्वादशांगी की रचना करते हैं। यह द्वादशांगी तीर्थंकर के उपदेश के विस्तार के समान होती है।

जैन परिभाषा में इस द्वादशांगी का विस्तार 14 पूर्वों के रूप में प्रसिद्ध है। पूर्व यानी श्रुत ज्ञान के शिखर का अन्तिम खजाना। इन पूर्वो के प्रमाण की कल्पना करने के लिये कल्पसूत्रकार ने हाथी के वजन के प्रमाण से स्याही की उपमा दी है। पहला पूर्व लिखने के लिये एक हाथी के वजन जितनी स्याही पानी में मिलानी पड़ेगी। लिखते-लिखते यह सारी स्याही खत्म हो जाय, तब पहला पूर्व पूरा होता है। इसी तरह दूसरा पूर्व लिखने के लिए दुगुनी, यानी दो हाथी के वजन जितनी स्याही चाहिये। इस गिनती से चौदह पूर्व लिखने के लिये कुल 16, 393 हाथी के वजन जितनी स्याही चाहिये। इतना अपार ज्ञान 14 पूर्वों में समाया हुआ है।

इन 14 पूर्वों के नाम इस प्रकार हैं– 1. उत्पाद पूर्व, 2. अग्रायणीय पूर्व, 3. वीर्य प्रवाद पूर्व 4. अस्तिप्रवाद पूर्व, 5. ज्ञान प्रवाद पूर्व, 6. सत्य प्रवाद पूर्व, 7. आत्म प्रवाद पूर्व, 8. कर्म प्रवाद पूर्व, 9. प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व, 10. विद्या प्रवाद पूर्व, 11. कल्याण पूर्व, 12. प्राणावाच पूर्व, 13. क्रियाविशाल पूर्व, 14. लोक बिन्दुसार पूर्व।

भगवान् महावीर की शिष्य-प्रशिष्यादि परंपरा में सातवीं पाट पर आए हुए चौदह पूर्वधारी पू. भद्रबाहुस्वामी वीर सं. 300वीं साल में विक्रम के 170 वर्ष पहले और ई.स. पूर्व 357 में हुए थे। वे 14 पूर्व रूप समस्त श्रुतज्ञान के ज्ञाता, महाज्ञानी, गीतार्थ व स्वयं सर्वज्ञ न होने पर भी सर्वज्ञ सदृश श्रुतकेवली थे। उन्होंने 14 पूर्वों में से 9वें प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व में से 10 अध्ययन वाले "दशाश्रुतस्कन्ध" आगम की रचना की थी।

जैन धर्म में वर्तमान काल में 45 आगम विद्यमान हैं। 11 अंग 12 उपांग 10 पयन्ना 6 छेदसूत्र 4 मूल सूत्र 1 अनुयोग द्वार 1 नंदी सूत्र।

6 सूत्र हैं– 1. निशीथ, 2. दशाश्रुत, 3. कल्प, 4. व्यवहार, 5. जितकल्प और 6. महानिशीथ सूत्र। इसमें दशाश्रुत स्कंध नामक छेदसूत्र 2106 श्लोक प्रमाण गद्यात्मक आगम है। पू. 14 पूर्वधारी भद्रबाहुस्वामी ने 14 पूर्वों में से 256 हाथी के वजन जितनी स्याही से लिखे गये 9वें प्रत्याख्यान प्रवाद नामक पूर्व में से संकलना करके 10 अध्ययन वाले श्री दशाश्रुतस्कन्ध की रचना की है। इन 10 अध्ययनों में 8वां अध्ययन "पज्जोसणा कप्पो" है, उसे 'पर्युषणा कल्प' भी कहते हैं। इस विस्तृत नाम

में से कालान्तर में पिछला आधा नाम 'कल्पसूत्र' ही प्रचलित हुआ। वह आज भी कल्पसूत्र के रूप में पहचाना जाता है। यह रचना आज से 2215 वर्ष पूर्व हुई थी।

'कल्पसूत्र' शब्द में 'कल्प' शब्द का अर्थ 'आचार' होता हैं उसमें भी प्रधान रूप से साधु-साध्वी को वन्दन, चातुर्मास, प्रतिक्रमण, गोचरी आदि 10 मुख्य आचारों की बातें है। विषयानुक्रमणिका एक मगल श्लोक से इस प्रकार दर्शायी गयी है—

**पुरिम चरिमाण कप्पो, मगलं वद्धमाण तित्थम्मि।**
**इय परिकहिया जिण गणहराइ थेरावलि चरित्त।।**

कल्पसूत्र में मुख्य तीन विषय लिये गये हैं। पहले ऋषभदेव और अन्तिम 24वें महावीर स्वामी के काल के साधु-साध्वियों के कल्प यानी आचार-विचार की बात की गयी है। मगल के लिये श्री महावीर स्वामी के 27 भवों का जीवन चरित्र विस्तार से बताया गया है। पार्श्वनाथ, नेमिनाथ व ऋषभदेव भगवान का जीवन चरित्र है। बीच के 20 भगवान का आन्तरकाल बताया गया है। अन्त में स्थविरावलि और समाचारी बतायी गयी है। इन विषयों को 9 व्याख्यानों में बाँटा गया है। विषय के क्रम से एक-एक व्याख्या इस प्रकार है —

1 पहले व्याख्यान में 10 कल्प, कल्प महिमा तथा नमुत्थुण का विषय है।

2 दूसरे व्याख्यान में 10 अच्छेरा तथा भ महावीर के 27 भवों का वर्णन है।

3 तीसरे व्याख्यान में 14 स्वप्नों का वर्णन, स्वप्न शास्त्रादि प्रमुख रूप से हैं।

4 चौथे व्याख्यान में भ महावीर के माता-पिता त्रिशला देवी, सिद्धार्थ राजा आदि की जीवन-चर्या तथा प्रभु के जन्म का वर्णन है।

5 पाँचवें व्याख्यान में जन्मोत्सव, पाठशाला गमन, शादी तथा दीक्षा का वर्णन है।

6 छठे व्याख्यान में भ महावीर पर हुए घोर उपसर्ग, गणधर वाद, निर्वाण आदि का वर्णन है।

7 सातवें व्याख्यान में भ पार्श्वनाथ, नेमिनाथ, ऋषभदेव के जीवन चरित्र तथा 20 जिन के आन्तरकाल का वर्णन विशेष है।

8 आठवें व्याख्यान में स्थविरावलि, भ महावीर के 11 गणधर, उनके एक हजार वर्ष की पाट परपरा के शिष्य-प्रशिष्यादि महापुरूषों का ऐतिहासिक वर्णन है।

9 नौवें व्याख्यान में समाचारी-श्रमणों की आचार-विचार की संहिता की समझ है।

इस प्रकार 9 व्याख्यानों की व्यवस्था में सपूर्ण कल्पसूत्र का समावेश हो जाता है। ये 9 व्याख्यान पर्युषण महापर्व के 8 दिनों में पढ़े जाते हैं।

जैनधर्म में सर्वश्रेष्ठ पर्व के रूप में श्री पर्युषण महापर्व की गणना होती है। इस पर्व के कुल 8 दिनों में प्रारभ के तीन दिनों में अष्टाह्निका प्रवचन चलते हैं। पहले दिन अमारि प्रवर्तन, चैत्यपरिपाटी, अट्ठम तप, क्षमापना और साधर्मिक वात्सल्य— इन पाँच विषयों पर प्रवचन दिया जाता है। दूसरे दिन श्रावक के 11 कर्तव्य और तीसरे दिन पौषध व्रत की महिमा समझायी जाती है।

पर्युषण पर्व के 4थे, 5वें, 6ठे, 7वें इन चार दिनों में कल्पसूत्र का सुबह-दुपहर, दो-दो बार, इस तरह 9 व्याख्यान पढ़ने की परपरा है। (9वा व्याख्यान पढ़ने की प्रणाली क्वचित् होगी) अन्तिम 8वाँ दिन सवत्सरी महापर्व का है। उस दिन श्री बारसा सूत्र का वाचन व सावत्सरिक प्रतिक्रमण किया जाता है।

कल्पसूत्र और बारसा सूत्र— ऐसे दो नाम जरूर प्रचलित हो गये हैं, परन्तु वास्तव में तो कल्पसूत्र ही बारसा सूत्र कहलाता है। बारसा यानी 1200 (1250) श्लोक सख्या वाला सूत्र, वह ''बारसा सूत्र' नाम से व्यवहार में

प्रचलित हो गया है। पर्युषण के 4 दिनों में गुजराती भाषा में कल्प सूत्र सकल संघ के समक्ष पढ़ा जाता है, इससे प्राचीन परंपरा का पालन होता है।

जैन धर्म शास्त्रों में कल्पवृक्षों की महिमा का अद्भुत रूप से वर्णन किया गया है। कल्पवृक्ष, काम घर, कामधेनु और चिन्तामणि रत्न- ये सब कामित (इच्छित) पूर्ण करने वाली महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ हैं। दूसरे-तीसरे आदि काल में जब कल्पवृक्ष साक्षात् विद्यमान थे, वे फलीभूत होते थे। ऐसे एक वृक्ष स्वरूप कल्पवृक्ष के साथ भी कल्प सूत्र की तुलना की गयी है। जैसे एक वृक्ष के बीज, अंकुर, तना, डालियाँ, फूल-फल, पत्ते, सुगन्ध आदि अंग होते हैं, उसी तरह कल्पसूत्र में भी ये सब अंग घटते हैं। कल्पसूत्र में बीज के रूप में महावीर प्रभु का चरित्र है, अंकुर रूप में श्री पार्श्वनाथ का चरित्र है, तने के रूप में श्री नेमिनाथ का चरित्र है और डाली के रूप में श्री आदीश्वर का चरित्र है, पुष्पों के रूप में स्थविरावली है और सुगन्ध के रूप में समाचारी है तथा फलस्वरूप मोक्ष की प्राप्ति है।

कल्पसूत्र की महिमा शास्त्रों में खूब गायी गयी है। कहा गया है कि अरिहंत से बड़े कोई देव -भगवान नहीं हैं, मोक्ष से ऊँचा व बड़ा कोई पद नहीं है, शत्रुंजय से बड़ा कोई तीर्थ नहीं है, उसी प्रकार कल्पसूत्र से बड़ा कोई श्रुत-शास्त्र नहीं है।

सर्व नदियों की रेती इकट्ठी की जाय और सर्व समुद्रों का पानी इकट्ठा किया जाय, तो उससे भी अनन्त गुणा अधिक महिमा इस एक सूत्र की है। मुँह में एक हजार जीभ हो और हृदय में केवलज्ञान हो, तो भी मनुष्य कल्पसूत्र की महिमा का वर्णन करने में असमर्थ है।

श्री कल्पसूत्र का वांचन करने में, व्याख्यान आदि देने में साधु भगवंत ही प्रमुख स्थान पर हैं। उसमें भी कल्पसूत्र का योगोद्वहन किए हुए साधु-मुनिराज ही वांचन व व्याख्यान कर सकते हैं। ये अधिकारी हैं और निशीथ सूत्र में कहे अनुसार साध्वीजी दिन में गुरू भगवंत के पास आकर श्रवण करने के अधिकारी हैं। आचार-धर्म की मर्यादा के अनुसार यह परंपरा पहले नियमित रूप से चलती थी। कालान्तर में वीर सं. 980वें (अथवा 983) वर्ष में अर्थात् आज से 1535 वर्ष पहले ई. सं. 454 में आनन्दपुर नगर में ध्रुवसेन राजा के पुत्र की मृत्यु होने से अत्यन्त शोकग्रस्त राजा का शोक दूर करके उसे समाधि भाव में लाने के लिये और नगर में महापर्व के मंगल प्रसंग पर आए हुए विघ्न को दूर करके सर्व नगर में पर्युषण महापर्व की सुन्दर धर्माराधना हो, इस हेतु पाँचवीं, सदी में साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकादि के समक्ष ध्रुवसेन राजा की राज्यसभा में कल्पसूत्र का वांचन शुरू हुआ और तब से आज तक 1535 वर्षों से अखंड रूप से यह कल्पसूत्र संघ के समक्ष पढ़ा जाता है। प्राचीन काल में भ. महावीर से शिष्य-प्रशिष्यादि में ज्ञानाभ्यास/अध्ययन-अध्यापनादि मुखोद्गत पद्धति से चलते थे। गुरू शिष्य को सूत्र मुखपाठ कराते थे। शिष्य आगे अपने शिष्य-प्रशिष्यादि को कराते थे। इस तरह वर्षों तक मुखपाठ की परंपरा चलती रही।

वीर नि. सं. 980वें वर्ष में, वि०सं. 510 में (ई.स. 454) पाँचवीं सदी में गुजरात के वल्लभीपुर में कल्पसूत्र का लेखन हुआ। भ. महावीर की 27वीं पाट में हुए पू. देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण, जो अन्तिम पूर्वधर महापुरुष थे, उनकी वाचना के समय कल्पसूत्र लिखा गया, पुस्तकारूढ़ हुआ। कल्पसूत्र की मूल भाषा अर्द्धमागधी (प्राकृत) है, टीका संस्कृत भाषा में है और भाषान्तर हिन्दी, गुजराती आदि अनेक भाषाओं में प्रचलित है। अधिकतर कल्पसूत्र पोथी प्रत के आकार में छपता है। सुवर्णाक्षरी हस्तलिखित प्राचीन प्रत व पोथियां भी बहुत हैं। बारसा सूत्र सुनहरे चित्रों व रंगीन चित्रों से चित्रित है। भारत भर के कई जैन ज्ञान भंडारों में ये सुरक्षित व संरक्षित हैं।

1. द्रव्यानुयोग, 2. गणितानुयोग, 3. चरणकरणानुयोग, 4. धर्मकथानुयोग— ये चार अनुयोग समस्त आगमों में मुख्य रूप से हैं। कल्पसूत्र में इन चारों अनुयोगों

का विषय है—

1 द्रव्यानुयोग— आत्मादि द्रव्य-पदार्थों का अद्भूत वर्णन, तर्क युक्तिपूर्वक, गणधरवादादि के साथ किया गया है।

2. गणितानुयोग — पूर्वों के माप, मनुष्य की ऊचाई के माप, आरों में अवगाहना, द्रोणादि के तोल-माप, भौगोलिक स्वरूप वर्णन, योजनादि की गिनती, कालचक्र में आरों की गिनती आदि गणितानुयोग की बहुत-सी बातें कल्पसूत्र में हैं।

3 चरण करणानुयोग— समाचारी तथा 10 आचार आदि रूप चरण-करणानुयोग का वर्णन है।

4 धर्मकथानुयोग —धर्मपुष्टिकारक कथाओं में-नागकेतु, मेघकुमार, चण्डकौशिक सर्प, वैद्यक के विषय में उदाहरण आदि उपमा घटक दृष्टान्त तथा तीर्थंकरादि के चरित्रों का अद्भूत वर्णन कल्पसूत्र में है। इस तरह चारों अनुयोगों की दृष्टि से कल्पसूत्र समृद्ध है।

कल्पसूत्र के छठे व्याख्यान में गणधरवाद का विषय है। प्रभू महावीर को केवलज्ञान की प्राप्ति होने के बाद मगदेश में अपावापुरी (पावापुरी) नगरी में सोमिल ब्राह्मण द्वारा आयोजित महायज्ञ के प्रसग में इन्द्रभूति गौतमादि 11 दिग्गज धुरधर विद्वान् पंडित अपने-अपने 500, 350, 300 आदि शिष्यों के परिवार के साथ आए थे। उन्हें आत्मादि विषयों पर शका थी। वे सर्व क्रमश: श्री वीर प्रभु के समवसरण में आये, प्रभु के साथ चर्चा करी और केवली, सर्वज्ञ ऐसे प्रभु ने उन सबका समाधान किया। वेद विद्या के पारगामी उन सर्व 11 पंडितों ने आत्मादि पदार्थों की सिद्धि स्वीकार की। आत्मा, कर्मबन्ध, कर्म मोक्ष, पुण्य, पाप, लोक-परलोक, स्वर्ग-नरक, पूर्व जन्म और पुनर्जन्म मोक्ष है या नहीं ? शरीर ही आत्मा है कि शरीर आत्मा से भिन्न है ? पचभूतादि पदार्थ, गति सादृशता या विसादृशता विषयक बहुत से प्रश्नों से सबंधित सच्चा ज्ञान प्रभु के पास से प्राप्त किया और प्रभु के पास दीक्षा स्वीकार कर आजीवन उनका शिष्यत्व स्वीकार किया। ऐसा सुन्दर, तार्किक, युक्ति प्रमाण, अनुमान, उपमानादि पूर्वक सिद्धि करने वाला जो दार्शनिक वर्णन किया है, वह अद्भूत है। इस वर्णन से कल्पसूत्र को एक अद्भूत दार्शनिक ग्रथ का दर्जा मिलता है।

इस गणधरवाद का अभ्यास सबको करना चाहिये। कल्पसूत्र के प्रारभ में ही जो 10 प्रकार के कल्प आचारों की बात की गयी है, उसमें मनोवैज्ञानिक रूप से जीव 3 प्रकार के बताये गये हैं— 1 ऋजु और जड़, 2 प्राज्ञ और ऋजु, 3 जड़ और वक्र।

1 प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के समय में जीव ऋजु यानी सरल हैं, परन्तु बुद्धिमान-प्राज्ञ नहीं है।

2 अन्तिम 24वें तीर्थंकर महावीर प्रभु के काल के जीव वक्र और जड़ हैं, जबकि

3 बीच के 22 जिन के काल के जीव प्राज्ञ-बुद्धिमान और ऋजु यानी सरल भी थे। ऐसे जीव ही धर्मक्षेत्र में पात्र गिने जाते हैं। इन तीनों प्रकारों के उदाहरण भी दिये गये हैं। पाचवें आरे के वक्र और जड़ जीव धर्म के लिये पात्र नहीं हैं। इसीलिये प्राज्ञता और ऋजुता पानी चाहिए।

इस प्रकार 24 तीर्थंकरों के काल-आरा आदि तथा स्वभाव-वृत्ति के आधार पर तीन दृष्टि से जीवों को तीन भागों में बाटा गया है और पात्रापात्र की विचारणा की गयी है। ऐसा अद्भूत मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और कहीं देखने को नहीं मिलता।

भ महावीर के जीवन में गर्भापहरण की एक अद्भूत घटना का वर्णन किया गया है। देवानन्दा की कुक्षी में से महावीर के जीव का सक्रमण त्रिशला के गर्भ में किया गया। उसकी प्रक्रिया तथा करने वाले हरिणगमेषी की कुशलता का अद्भूत वर्णन किया गया है। गर्भ का ऐसा प्रत्यारोपण और कहीं देखने को नहीं

मिलता। इसके साथ वैद्यक शास्त्र की बातें भी की गयी हैं। ऋतुकालीन भोजन, औषधोपचार आदि का अद्‌भूत वर्णन है।

कल्पसूत्र के अन्तर्गत दूसरे भी कई विषय भरे पड़े हैं। स्वप्न शास्त्र, सामुद्रिक लक्षण शास्त्र, हस्त रेखा शास्त्र, रत्नों की जातियों के नाम, कर्मजन्य वैचित्र्य की बातें, गर्भपात आदि के पापों के फल, स्नान-मर्दनादि, कनात वर्णन, आदि युग की बातें, हकार, मकार और धिक्कार की नीतियों की बातें, सूर्य की किरणें, चारों गतियां— देव, मनुष्य, नरक तिर्यंच गतियों में जीवों का गमनागमन तथा उत्पत्ति आदि के कारण दर्शाये गये हैं। कथानक अत्यन्त रोचक शैली में है। जाति स्मरणादि ज्ञानोत्पत्ति की बातें हैं। ऐसे सैकड़ों विषयों का अद्‌भूत ज्ञान समाने वाले इस कल्पसूत्र को एक महान् विश्वकोष की उपमा दी जाय, तो भी अतिश्योक्ति नहीं होगी। ऐसे पवित्र धर्म ग्रंथ का श्रवण, मनन, निर्दिध्यासन आदि करके सर्व भव्यात्मा स्व-पर का कल्याण सार्धे, यही शुभ मनोकामना है। ❖❖❖

# अनमोल वचन

❑ संग्रहकर्ता : शान्ती देवी लोढ़ा

- आत्मा है तन से पृथक्, एक समझना भूल। तन जड़, चेतन आत्मा, तन में रहो न फूल।।
- एक-एक इन्द्रिय विषय, करे [illegible] संसार। पंचेन्द्रिय के विषय से, संकट का नहीं पार।।
- विद्या, बल, धन रूप, यश, कुल सुत, वनिता मान। सभी सुलभ संसार में दुर्लभ आत्म ज्ञान।।
- काम, क्रोध, मद, लोभ की जब लग मन में खान। तब लग पंडित मूर्खा, दोनों एक समान।।
- ज्ञान की महिमा निराली, ज्ञान अनुपम दीप है। ज्ञान लोचन के बिना नर, अन्ध तत्व प्रतीक है।।
- जीवन रोने के लिए नहीं, खोन के लिए नहीं, सोने के लिए नहीं अपितु जीवन बोने के लिए है।
- मणियों में चिन्तामणी, वृक्षों में कल्पवृक्ष, नक्षत्रों में चन्द्र और समस्त धातुओं में सुवर्ण प्रधान है उसी प्रकार समस्त धर्मों में दया धर्म ही प्रदान है।
- चरित्र एक कागज के समान है। एक बार कलंकित होने पर इसका पूर्ववत् उज्ज्वल होना कठित होता है।
- बुद्धिमान आदमी जल्दी समझ जाता है फिर भी देर तक सुनता है।
- जो क्रोध को स्वयं झेल लेता है वह दूसरों के क्रोध से बच जाता है।
- नम्रता महान् व्यक्ति की पहली पहचान है।
- दान का मतलब फेंकना नहीं बल्कि बोना है।
- अवगुण अपने देखों, गुण दूसरों के।
- साधारण लोग अपनी हर बुराई का दोषी दूसरों को ठहराते हैं, अल्पज्ञानी स्वयं को, विशेष ज्ञानी किसी को नहीं।
- शिक्षक एक मोमबत्ती के समान है जो स्वयं जल कर दूसरों को प्रकाश देता है।

का विषय है—

1 द्रव्यानुयोग— आत्मादि द्रव्य-पदार्थों का अद्भूत वर्णन, तर्क युक्तिपूर्वक, गणधरवादादि के साथ किया गया है।

2. गणितानुयोगः— पूर्वों के माप, मनुष्य की ऊचाई के माप, आरो मे अवगाहना, द्रोणादि के तोल-माप, भौगोलिक स्वरूप वर्णन, योजनादि की गिनती, कालचक्र में आरों की गिनती आदि गणिनातनुयोग की बहुत-सी बातें कल्पसूत्र में हैं।

3 चरण करणानुयोग— समाचारी तथा 10 आचार आदि रूप चरण-करणानुयोग का वर्णन है।

4 धर्मकथानुयोगः—धर्मपुष्टिकारक कथाओं में-नागकेतु, मेघकुमार, चण्डकौशिक सर्प, वैधक के विपय में उदाहरण आदि उपमा घटक दृष्टान्त तथा तीर्थंकरादि के चरित्रों का अद्भूत वर्णन कल्पसूत्र में है। इस तरह चारों अनुयोगों की दृष्टि से कल्पसूत्र समृद्ध है।

कल्पसूत्र के छठे व्याख्यान में गणधरवाद का विषय है। प्रभू महावीर को केवलज्ञान की प्राप्ति होने के बाद मगदेश में अपापापुरी (पावापुरी) नगरी में सोमिल ब्राह्मण द्वारा आयोजित महायज्ञ के प्रसग में इन्द्रभूति गौतमादि 11 दिग्गज धुरधर विद्वान् पंडित अपने-अपने 500, 350, 300 आदि शिष्यों के परिवार के साथ आए थे। उन्हे आत्मादि विपयों पर शका थी। वे सर्व क्रमश श्री वीर प्रभु के समवसरण में आये, प्रभु के साथ चर्चा करी और केवली, सर्वज्ञ ऐसे प्रभु ने उन सबका समाधान किया। वेद विद्या के पारगामी उन सर्व 11 पंडितों ने आत्मादि पदार्थों की सिद्धि स्वीकार की। आत्मा, कर्मबन्ध, कर्म मोक्ष, पुण्य, पाप, लोक-परलोक, स्वर्ग-नरक, पूर्व जन्म और पुनर्जन्म मोक्ष है या नहीं ? शरीर ही आत्मा है कि शरीर आत्मा से भिन्न है ? पचभूतादि पदार्थ, गति सादृशता या विसादृशता विषयक बहुत से प्रश्नों से सबंधित सच्चा ज्ञान प्रभु के पास से प्राप्त किया ओर प्रभु के पास दीक्षा स्वीकार कर आजीवन उनका शिष्यत्व स्वीकार किया। ऐसा सुन्दर, तार्किक, युक्ति प्रमाण, अनुमान, उपमानादि पूर्वक सिद्धि करने वाला जो दार्शनिक वर्णन किया है, वह अद्भूत है। इस वर्णन से कल्पसूत्र को एक अद्भूत दार्शनिक ग्रथ का दर्जा मिलता है।

इस गणधरवाद का अभ्यास सबको करना चाहिये। कल्पसूत्र के प्रारभ में ही जो 10 प्रकार के कल्प आचारों की बात की गयी है, उसमे मनोवैज्ञानिक रूप से जीव 3 प्रकार के बताये गये हैं— 1 ऋजु और जड़, 2 प्राज्ञ और ऋजु, 3 जड़ और वक्र।

1 प्रथम तीर्थंकर ऋपभदेव के समय में जीव ऋजु यानी सरल हैं, परन्तु बुद्धिमान-प्राज्ञ नहीं है।

2 अन्तिम 24वें तीर्थंकर महावीर प्रभु के काल के जीव वक्र और जड़ हैं, जबकि

3 बीच के 22 जिन के काल के जीव प्राज्ञ-बुद्धिमान और ऋजु यानी सरल भी थे। ऐसे जीव ही धर्मक्षेत्र में पात्र गिने जाते हैं। इन तीनों प्रकारों के उदाहरण भी दिये गये हैं। पाचवें आरे के वक्र और जड़ जीव धर्म के लिये पात्र नहीं हैं। इसीलिये प्राज्ञता और ऋजुता पानी चाहिए।

इस प्रकार 24 तीर्थंकरो के काल-आरा आदि तथा स्वभाव-वृत्ति के आधार पर तीन दृष्टि से जीवों को तीन भागों में बाटा गया है और पात्रापात्र की विचारणा की गयी हैं। ऐसा अद्भूत मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और कहीं देखने को नहीं मिलता।

भ महावीर के जीवन में गर्भापहरण की एक अद्भूत घटना का वर्णन किया गया है। देवानन्दा की कुक्षी में से महावीर के जीव का सक्रमण त्रिशला के गर्भ में किया गया। उसकी प्रक्रिया तथा करने वाले हरिणगमेपी की कुशलता का अद्भूत वर्णन किया गया है। गर्भ का ऐसा प्रत्यारोपण और कहीं देखने को नहीं

मिलता। इसके साथ वैद्यक शास्त्र की बातें भी की गयी हैं। ऋतुकालीन भोजन, औषधोपचार आदि का अद्भूत वर्णन है।

कल्पसूत्र के अन्तर्गत दूसरे भी कई विषय भरे पड़े हैं। स्वप्न शास्त्र, सामुद्रिक लक्षण शास्त्र, हस्त रेखा शास्त्र, रत्नों की जातियों के नाम, कर्मजन्य वैचित्र्य की बातें, गर्भपात आदि के पापों के फल, स्नान-मर्दनादि, कनात वर्णन, आदि युग की बातें, हकार, मकार और धिक्कार की नीतियों की बातें, सूर्य की किरणें, चारों गतियां– देव, मनुष्य, नरक तिर्यंच गतियों में जीवों का गमनागमन तथा उत्पत्ति आदि के कारण दर्शाये गये हैं। कथानक अत्यन्त रोचक शैली में है। जाति स्मरणादि ज्ञानोत्पत्ति की बातें हैं। ऐसे सैकड़ों विषयों का अद्भूत ज्ञान समाने वाले इस कल्पसूत्र को एक महान् विश्वकोष की उपमा दी जाय, तो भी अतिश्योक्ति नहीं होगी। ऐसे पवित्र धर्म ग्रंथ का श्रवण, मनन, निर्दिध्यासन आदि करके सर्व भव्यात्मा स्व-पर का कल्याण साधें, यही शुभ मनोकामना है।

## अनमोल वचन

❑ संग्रहकर्ता : शान्ती देवी लोढ़ा

- आत्मा है तन से पृथक्, एक समझना भूल। तन जड़, चेतन आत्मा, तन में रहो न फूल।।
- एक-एक इन्द्रिय विषय, करे [illegible] संसार। पंचेन्द्रिय के विषय से, संकट का नहीं पार।।
- विद्या, बल, धन रूप, यश, कुल सुत, वनिता मान। सभी सुलभ संसार में दुर्लभ आत्म ज्ञान।।
- काम, क्रोध, मद, लोभ की जब लग मन में खान। तब लग पंडित मूर्खा, दोनों एक समान।।
- ज्ञान की महिमा निराली, ज्ञान अनुपम दीप है। ज्ञान लोचन के बिना नर, अन्ध तत्व प्रतीक है।।
- जीवन रोने के लिए नहीं, खोन के लिए नहीं, सोने के लिए नहीं अपितु जीवन बोने के लिए है।
- मणियों में चिन्तामणी, वृक्षों में कल्पवृक्ष, नक्षत्रों में चन्द्र और समस्त धातुओं में सुवर्ण प्रधान है उसी प्रकार समस्त धर्मों में दया धर्म ही प्रदान है।
- चरित्र एक कागज के समान है। एक बार कलंकित होने पर इसका पूर्ववत् उज्ज्वल होना कठित होता है।
- बुद्धिमान आदमी जल्दी समझ जाता है फिर भी देर तक सुन्ता है।
- जो क्रोध को स्वयं झेल लेता है वह दूसरों के क्रोध से बच जाता हैं।
- नम्रता महान् व्यक्ति की पहली पहचान है।
- दान का मतलब फेंकना नहीं बल्कि बोना है।
- अवगुण अपने देखों, गुण दूसरों के।
- साधारण लोग अपनी हर बुराई का दोषी दूसरों को ठहराते हैं, अल्पज्ञानी स्वयं को, विशेष ज्ञानी किसी को नहीं।
- शिक्षक एक मोमबत्ती के समान है जो स्वयं जल कर दूसरों को प्रकाश देता है।

# भगवान के प्रति श्रद्धा

□ दीक्षार्थिनी-कु. संजीता कोचर, बीकानेर

जन्म के साथ काया है, काया में प्राण है,

मोह के साथ माया है, माया में अज्ञान है।

बताने की आवश्यकता ही क्या है कि-

मंदिर में मूर्ति है और मूर्ति में भगवान है।।

मन की आँखो से देखने से ही मूर्ति में भगवान दिखते है,

श्रद्धेयों, सम्माननियों एव पूजनियों को प्रणाम लिखते हैं।

जिन फोटो व चित्रों के प्रति हमारी श्रद्धा आस्था नहीं होती

तो वे रद्दी कागजों के साथ रद्दी के भाव बिकते है।।

लक्ष्य को पाने वाले ही उसका रास्ता बूझते है,

क्लेश को पनपाने वाले ही औरों से अलूझते हैं।

मानने वालों की अपनी-अपनी मान्यताएँ हैं,

भगवान बनने वाले ही भगवान को पूजते है।।

समय पाने पर रूप स्वत: निखर जाता है,

समय आने पर सत्य स्वत: उभर आता है।

कोशिश करने की तो आवश्यकता है ही पर

समय आने पर मन स्वत सुधर जाता है।।

आदित्य के पास एक अपना प्रकाश है,

मानव के पास एक अपना विश्वास है।

जिसके पास न तो प्रकाश है न विश्वास है,

उसका आज या कल अवश्य ही विनाश है।।

❖❖❖

# "वीर माणिभद्र की महिमा"

❑ मुनि श्री राजेन्द्रविजयजी म., भायखला

आज के वर्तमान युग में मानव जितना ही सुख पाने की इच्छा रखता है वह इससे उतना ही दूर होता जा रहा है। इसके पीछे मूल कारण यही है कि मानव आत्मा को भूल कर केवल शारीरिक सुख और वह भी क्षणिक सुख की लालसा में ही जीता है और उसी को पाने के लिए अपना सारा पुरूषार्थ करता है। धन-दौलत, मकान, जायदाद, आभूषण, बैंक बैलेंस, स्त्री-पुरूष, पुत्र-पुत्री यह सब सांसारिक सुख के हेतु तो हैं लेकिन इनसे सुख एवं शांति की प्राप्ति अर्जित पुण्यों के उदय से ही संभव है। जिस प्रकार बैंक मेंअपने खाते में राशि जमा हो तो उसको निकाल कर उपयोग में ला सकते हैं उसी तरह से अगर पुण्योपार्जन किया हुआ है तो वह उदय आने पर सुख प्रदान करने का हेतु बन सकता है। पूर्व अर्जित पुण्य से सभी प्रकार के भौतिक सुखों की प्राप्ति तो हो गई लेकिन इस समय में यदि सावधानी नहीं रखी तो यही पुण्यानुबन्धी - पुण्य पुण्यानुबन्धी - पाप में परिवर्तित होता जाएगा और जब पूर्व अर्जित बैंक बैलेंस समाप्त हो जाएगा तो उसके पश्चात् सिवाय दुख के और कुछ भी हाथ में आने वाला नहीं है।

इसके लिए आवश्यक है कि जिस जैन धर्म एवं जैन कुल में जन्म लिया है तो उसी के अनुरूप अपना आचरण रखें। भौतिक सुखों का भोग करते हुए भी अपनी आत्मा को नहीं भूलें। यह कभी भी नहीं भूलें कि एक न एक दिन इस संसार से चले जाना है। जाते समय अपने साथ भौतिक सामग्री में से कुछ भी नहीं ले जा सकेंगे, साथ जाएगा तो इस जीवन में जो कुछ भी धर्माचरण किया है, दान शील, तप का पालन किया है, आत्मा पर पड़े हुए कर्मो के जंजाल को जितना कम किया है और आत्मा को शीतल बनाया है, वही आगे जाकर काम में आने वाला है। वास्तव में धर्म ही धन है। वेदों की ऋचाओं में भी कहा है कि "धर्मो रक्षति रक्षतः" तुम धर्म की पालना करो धर्म तुम्हारा पोषण करेगा।

हम भगवान महावीर, चौवीस तीर्थकर एवं णमोकार महामंत्र के बारे में तो जानते हैं और उनका स्मरण एवं गुणगान भी प्रतिदिन करते हैं। इनके साथ ही शासन रक्षक "माणिभद्र देव" के बारे में भी हमें कुछ जानकारी होनी चाहिए जो हमारे दुःखों को दूर करने में सदा अग्रसर रहते हैं।

बावन वीर देवों में इनका 31 वां स्थान है। कुमार के भवनपति देव हैं जिनकी सेवा में बाईस हजार देव सदा उपस्थित रहते हैं। उनकी नौ हाथ की काया है। उनका शरीर सुन्दर, हृष्टपुष्ट, कोमल एवं अति सुन्दर है। मा. वीरजी के भोगावली कर्मक्षय हो चुके हैं जिसके प्रतीक स्वरूप उनकी दो भुजाएं हैं। एक में नागपाश है तो दूसरे से आशीर्वाद देते रहते हैं। उनका वाहन हाथी है। कभी हाथी की एक सूंड होती है तो कभी सात भी हो जाती है। उनकी प्रत्येक सूंड में श्वेत कमल होता है।

देवलोक में पूर्व नाम शास्वत होते हैं। इसमें माणिभद्र वीर का नाम भी शास्वत है। वर्तमान में जो माणिभद्र वीर हैं, उनके पहले जो वीर थे वे भी माणिभद्र ही थे और भविष्य में भी इसी नाम से होंगे।

ऐसे महान् जिन शासन रक्षक देव का निरन्तर स्मरण करते रहने से आने वाले सभी विघ्न दूर हो जाते हैं। अभी मुझे एक भाई ने बताया कि दो माह पूर्व ही वह विहार में किसी कार्यवश गए थे और उनके पास

काफी धनराशि बैग में थी। वे बस में यात्रा कर रहे थे और इसी बीच डाकुओं ने बस को घेर लिया और यात्रियों से उनके सारे जेवर, घड़िया, रूपये आदि छीन लिये। जब डाकू अन्य यात्रियों के साथ छीना-झपटी कर रहे थे वे निरन्तर माणिभद्र वीर का स्मरण करते रहे ओर चमत्कार ऐसा हुआ कि जब तक वे उन तक पहुच पाते ऐसी घटना हुई कि डाकुओं को भागना पड़ा और वह लुटने से बच गए। वे यही कहते हे कि ऐसी विषम घड़ी मे यदि किसी ने उन्हें बचाया तो वह माणिभद्र वीर ने ही बचाया। इससे उनकी श्रद्धा और भी अटूट हो गई है।

इसलिए मेरा यही संदेश है कि अपने सासारिक कार्यकलाप करते हुए भी हमेशा जिन शासन एव जिन शासन रक्षक माणिभद्र वीर का स्मरण करते रहे तो सभी परिसहों से बचे रहेंगे और आत्मा की उन्नति भी करते रहेंगे।

# यदि ऐसे ही होता रहा नारी संहार

❑ श्रीमती मंजु पी. चौरडिया

मानव करता रहा
ऐसे ही
नारी का गर्भपात
ओर
दहेज की चिता पर
नारी को कुर्बान
तो एक दिन मिट जायेगा
सृष्टि से
नारी का
नामो निशान
तब
कोई वेज्ञानिक ढूंढेगा
डायनासोर की तरह
नारी जाति के अवशेष
किसी नर्सिग होम के
पिछवाड़े
यदि मिल गये कुछ
ककाल शेष
तब कम्प्युटर से होगा
नारी का नव निर्माण
पर क्या ?
कम्प्युटराइज नारी
दे पायगी
राम कृष्ण महावीर
को जन्म
हे नर और नारायण !
सुनारी नारी हृदय की
प्रमोद पुकार
यदि बद नहीं हुआ
नारी सहार
तब बिन नारी के
कैसे लोगे तुम
अपना अगला
अवतार!

# श्री नमस्कार महामंत्र का अचिन्त्य प्रभाव

□ दीक्षार्थिनी कुमारी अंजना जैन, बेड़ा

श्री नवकार महामंत्र के एक अक्षर जाप करने से सात सागरोपम के पाप का नाश होता है, श्री नवकार मंत्र के पद से पचास सागरोपम के पाप का नाश होता है, पूरे नवकार मंत्र से पांच सौ सागरोपम के पाप का नाश होता है और जो नवकार मंत्र को विधिपूर्वक एक लाख बार गिनता है वह अवश्य ही तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन करता है।

मंत्र जपो नवकार, यह कर्मो का काटन हार है।

अरिहंत जपो, अरिहंत जपो, भव से बेड़ा पार है।।

❀

अरिहंत-अरिहंत जपते रहो, सारे पापों से बचते रहो

रात्रि भोजन का त्याग करो - अरिहंत .....

जूठा कभी मत छोड़ा करो - अरिहंत .....

थाली धोलकर पीया करो - अरिहंत ......

नवकार मंत्र को गिना करो - अरिहंत .....

❀

अरिहंत जपो, अरिहंत जपो, अरिहंत जपो, अरिहंत जपो -

अरिहंत भजो, अरिहंत भजो, अरिहंत भजो, अरिहंत भजो, .......

❀

चौदह पूर्व का सार ...... एक ही मात्र नवकार ।

अरिहंत भजरे वंदा, कटे चार गति का फंदा।

अरिहंत भज रे रोलिया, दिन जावे थारां दौड़िया।

हर समय अरिहंत – अरिहंत – अरिहंत का ही स्मरण कर .....

# श्री अष्टापद जैन तीर्थ

## सुशील विहार

प्रथम तीर्थकर श्री ऋषभदेव-आदिनाथ भगवान के निर्वाण-स्थल पर चक्रवर्ती महाराज श्री भरत ने वर्द्धकी रत्न द्वारा "सिहनिषद्या" नामक मणिमय जिनप्रासाद बनवाया। तीन कोस ऊँचे ओर एक योजन विस्तृत इस प्रासाद में स्वर्ग मण्डप जेसे मण्डप, उसके भीतर पीठिका, देवच्छन्दिका तथा वेदिका का भी निर्माण करवाया। पीठिका में कमलासन पर आसीन आठ प्रातिहार्य सहित, लाछनयुक्त, शरीर के वर्ण वाली चौबीस तीर्थंकरो की मणियों तथा रत्नो की प्रतिमायें विराजमान कीं।

इस चेत्य मे महाराज भरत ने अपने पूर्वजों, भाइयों, वहिनों तथा विनम्र भाव से भक्ति प्रदर्शित करते हुए स्वय की प्रतिमा भी बनवाई।

इस जिनालय के चारों ओर चेत्यवृक्ष-कल्पवृक्ष सरोवर-कूप-वावडियाँ ओर मठ बनवाये। तीर्थरक्षा के लिए दण्डरत्न द्वारा एक-एक योजन की दूरी पर आठ पेढियाँ बनवाई, जिससे यह प्रथम तीर्थ अष्टापद के नाम से विख्यात हुआ।

लोक के इस प्रथम जिनालय में भगवान श्री आदिनाथ एव शेष 13 तीथकरों की प्रतिष्ठा करवाकर भक्तिपूर्वक महाराज भरत ने आराधना, अर्चना ओर वन्दना कर अनन्त सुख प्राप्त किया।

श्री सगरचक्रवर्ती महाराज के 60 हजार पुत्रो द्वारा तीर्थरक्षा, रावण-मन्दोदरी द्वारा अद्वितीय जिनभक्ति, श्री गोतम स्वामीजी द्वारा 1503 तापसों को प्रतिवोध आदि अनेक प्रसगो का उल्लेख शास्त्रों में मिलता हे।

यह पावन भूमि श्री वरकाणा रोड पर स्थित करीव 51 हजार वर्ग फुट में स्थित हे। आराधना-साधना योग्य वहुत ही सुन्दर भूमि है।

### श्रद्धा एवं समर्पण का आगार

**एक स्वर्णिम इतिहास का सृजन करने वाला।**
**तन-मन के सन्ताप को प्रशान्त करने वाला।।**

इस जिनमन्दिर में 24 तीर्थकर परमात्मा की वर्ण के अनुसार भव्य जिनप्रतिमायें स्थापित होंगी।

जिनमन्दिर का निर्माण 4500 वर्ग फुट भूमि पर होगा, इस अष्टकोणीय जिनमन्दिर के चारों ओर गुलावी पत्थर के कमल के फूलों की भव्य रचना होगी, जो अत्यधिक रमणीय व नयनाभिराम होगी।

श्री अष्टापद जेन तीर्थ मन्दिर के आगे के भाग में पद-कमल के आकार में सुन्दर देहरियों का निर्माण होगा, जिनमे अधिष्ठायक देव श्री माणिभद्र जी, श्री नाकोडा भेरवजी, श्री भोमियाजी, श्री पद्मावती देवी, श्री महालक्ष्मी देवी, व मा सरस्वती देवी की भव्य प्रतिमाएँ स्थापित होंगी।

| ग्रह | जिनप्रतिमा |
|---|---|
| (1) सूर्य | श्री पद्मप्रभुस्वामीजी (27 इच) |
| (2) चन्द्र | श्री चन्द्रप्रभुस्वामीजी (27 इच) |
| (3) मगल | श्री वासुपूज्यस्वामी जी (27 इच) |
| (4) बुध | श्री शांतिनाथ जी भगवान (27 इच) |
| (5) गुरू | श्री ऋषभदेवजी भगवान (27 इच) |
| (6) शुक्र | श्री सुविधिनाथ जी (27 इच) |

(7) शनि — श्री मुनिसुव्रत स्वामी जी (27 इंच)

(8) राहु — श्री नेमिनाथजी (27 इंच)

(9) केतु — श्री पार्श्वनाथ जी (27 इंच)

**इसी जिनमन्दिर में श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ (71 इंच) व श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ (71 इंच) की खड़ी काउसग्गस्थ प्रतिमायें स्थापित होंगी।**

इस मन्दिर की संरचना अद्वितीय व नयनाभिराम होगी।

महातपस्वी पू. मुनि श्री रूपसागरजी म. सा. के अग्नि संस्कार स्थल पर देहरी व पगलिया जी की स्थापना होगी।

## आचार्य श्री लावण्यसूरी जी जैन आराधना भवन

साहित्यसम्राट प. पू. आचार्यदेवेश श्रीमद् विजय लावण्यसूरीश्वर जी म. सा. की पावन स्मृति में बन रहे आराधना भवन में गुरू भगवन्तों का विश्राम होगा, यहाँ शान्त साधनामय वातावरण है जिससे अनेक तीर्थयात्रियों को गुरूवन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ होगा।

इसी आराधना भवन के साथ श्री दक्ष स्वाध्याय कक्ष, श्री सुशील साधनाकक्ष आदि का निर्माण हुआ है।

## आचार्य श्री सुशील सूरि जी जैन ज्ञानमन्दिर

- ✯ इस ज्ञानमन्दिर का निर्माण परम पूज्य साधु-साध्वी जी म. सा. तथा जिज्ञासु श्रावक-श्राविकाओं की साहित्य-साधना के लिये होगा।
- ✯ यहाँ लभ्य-अलभ्य मुद्रित पत्रों, पुस्तकों का विशिष्ट संग्रह होगा।
- ✯ आगम-न्याय-दर्शन-योग-व्याकरण, इतिहास आदि विपयों से संवंधित हस्तलिखित एवं मुद्रित प्राचीन व नीवन ग्रन्थों का अद्भुत संग्रह सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित किया जायेगा।

जैन परम्परा के अनुरूप जैन इतिहास के संदर्भ में गीतार्थ, मिश्रित शोथ अध्ययन संशोधन हेतु यथासंभव सामग्री व सुविधाओं को उपलब्ध करवाकर उसे प्रोत्साहित करना तथा सरल व सफल बनाना इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है।

## पू. साध्वी श्री भाग्यलता श्रीजी जैन आराधना भवन

श्री अष्टापद जैन तीर्थ - सुशील विहार की विशाल योजना के अन्तर्गत प. पू. आचार्यदेव श्रीमद्विजय अरिहन्त-सिद्ध सूरीश्वर जी. म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी पू. साध्वी श्री सुशील भक्ति-ललितप्रभा-स्नेहलता श्री जी म. सा. की शिष्या पू. साध्वी जी श्री भव्यगुणा श्रीजी म. सा., पू. साध्वी जी श्री दीव्यप्रज्ञा श्रीजी म. सा. (पू. माताजी महाराज) तथा पू. साध्वीजी श्री शीलगुणा श्रीजी म. सा. आदि एवं उनकी शिष्या-प्रशिष्याओं के सदुपदेश एवं मंगल प्रेरणा से पू. साध्वीजी श्री दीव्यप्रज्ञा श्रीजी म. सा. तथा पू. साध्वीजी श्री शीलगुणा श्रीजी म.सा. के चल रही श्री वर्धमान तप की 100 वीं ओली की आराधना निमित्त श्राविका -आराधना भवन (उपाश्रय) का भव्य निर्माण हुआ है।

**श्री अष्टापद जैनतीर्थ, सुशील विहार, रानी के निर्माण में पूज्य साध्वी जी महाराज की मंगल प्रेरणा सदुपदेश रहा है।**

पूज्य साध्वी जी महाराज की प्रेरणा से इस तीर्थ में अनेक भव्य योजनाएँ निर्माणाधीन हैं।

## श्री अष्टापद जैन तीर्थ, सुशील विहार, रानी जैन देवस्थान पेढ़ी

- ✯ धर्मशाला
- ✯ यात्री विश्रान्तिगृह (40 व्लोक)
- ✯ श्री वर्धमान तप आयम्विल खाता भवन
- ✯ अतिथिगृह

आदि का निर्माण कार्य सम्पन्न हो गया है।

- ★ श्री अष्टापद जेन तीर्थ, सुशील विहार प्रवेश द्वार
- ★ श्री भोजनशाला भवन
- ★ श्री शान्ति उपवन
- ★ वारिगृह (प्याऊ)
- ★ विशाल धर्मशाला

आदि निर्माण कार्य प्रगति पर हैं।

**तीर्थ निर्माण के द्वितीय चरण मे—**

- ★ श्री शान्तिधाम-वृद्धाश्रम
- ★ श्री साधर्मिक भक्ति सेवा फड

आदि विविध शुभ कार्य करने का आयोजन है।

हमारे अतर की बात
आइये. सब साथ मिलकर
अभिनव तीर्थ-निमार्ण करे

श्री अष्टापद तीर्थ-निर्माण के आयोजन की संक्षिप्त रूपरेखा आपके सामने हे।

आप भी मानते होगे कि वर्तमान काल मे इस विलुप्त तीर्थ के नव-निमार्ण की आवश्यकता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

भारतवर्ष में अपने ढग का यह प्रथम भव्य प्रयास है, जो सकल सघों के सहयोग से ही पूर्ण होगा।

सुकृत मे लाभ लेने की अनेक योजनाएँ हैं।

पुण्यशाली महानुभावो से सादर निवेदन है कि इस महान् आयोजन में उदार हृदय से तन-मन-धन से सहयोग प्रदान कर पुण्यानुवन्धी पुण्योपार्जन का लाभ अर्जित करें।

इस कार्य हेतु इच्छुक भाग्यशाली परम पूज्य श्री सुशील गुरूदेवश्री एव तीर्थ निर्माण समिति से सम्पर्क कर पुण्य लाभ लेवे। ❖❖❖

# पर्युषण महापर्व

□ मुनि श्री भाग्य शेखर विजय जी म

परमपिता परमात्मा के शासन में पर्युषण पर्व का महत्व अधिक है क्योंकि इस महापर्व में दान, शील, तप और भावना की हर प्रकार से आराधना होती रहती है। इतना ही नहीं जगत के जीवों को अभयदान मिले इसलिये मानव का हृदय मुलायम बने और जगत के जीवों के प्रति दरदीपना जीवन म आये।

इस कारण जगत के जीवों को मिच्छामि दुक्कड देने का प्रचुर प्रमाण में वहेवार दिख पड़ता है। इस वहवार में वेर झर को भूल जाने के लिये मुख्यता रहती है लेकिन मिच्छामि दुक्कड़ दते हैं।

फिर भी हमारा हृदय कषाय से मुक्त बनता नहीं है ऐसा क्यों—

कषाय को शात करने के लिए मिच्छामि दुक्कड दिया जाता नहीं है। हम हमारे वहेवार में फक्त चलन रूप सीमित में। जहाँ तक हम जगत के जीवों को पहचानेंगे नहीं तव तक जीव के प्रति प्रेम भाव हमारे हृदय में उत्पन्न नहीं हागा, मिच्छामि दुक्कड का मतलव वहीं है।

सव जीवों में मैत्री भाव होना चाहिये। मैत्री भाव विना का मिच्छामि दुक्कड विना हस्ताक्षर का चैक है। स्याही विना के चैक की कीमत कुछ हाती नहीं है वैसे हमारे जीवन की कीमत मिच्छामि दुक्कड से नहीं होती है। इस पर्व का आपको जो गर्व हा तो हम को हमारे दिल में हर जीव के प्रति वहुमान होना चाहिये।

मिच्छामि दुक्कड के माध्यम से हरक जीव को अपना वनाना चाहिये। मेरा तेरा का भाव पूर्ण रूप से भूलना चाहिये। उनके लिए दिल को विशाल वनाना चाहिये। जिस तरह समुन्दर में सवका समावेश हा जाता है वैसे हमारे दिल में भी सभी जीवों का समावेश होना चाहिये। अत में म इतना कहना चाहता हू कि मिच्छामि दुक्कड़ देते समय यह मेरा भाई यह मेरा दुश्मन है ऐसी क्षुद्रता मन में से निकाल देनी चाहिये तव मिच्छामि दुक्कड का आनन्द मान सकेंगे और हमारी आत्मा आराधना की ओर वढ़ती जायेगी जन जन के जीगर में मिच्छामि दुक्कड़ के माध्यम से।

जैन जयति शासन का नाद गूजता रहे यही कामना।

# ५० वर्ष से अधिक आचार्य पद पर्याय वाले आचार्य भगवन्त

□ श्री महेन्द्र कुमार दोशी

जैन धर्म में अरिहन्त पद का बहुत महत्त्व है। साधु धर्म में आचार्य सबसे बड़े एवं उच्च होते है। उनके द्वारा दी गयी धर्म देशना हमारे लिये अमृत तुल्य है। प्रकांड विद्वान साधुओं को ही उनके गुरूओं द्वारा आचार्य पद दिया जाता रहा है।

परम ज्ञानी आचार्य गुरू भगवन्त अपनी शब्दवाणी से अपने आचार-विचार से जैन धर्म की सेवा सदियों से करते आ रहे हैं। आम अज्ञानी लोगों को उन्होंने धर्म की राह पकडायी है।

परम कृपालु तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के शासन में आचार्य पद को अर्धशताब्दी से भी अधिक समय तक बहुम कम पूज्य गुरू भगवंतों ने निर्वाह किया है ऐसे परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्तों को स्मरण करते हुए बहुत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। ऐसे सभी पूज्य भगवतों को शत शत नमन।

1. पूज्य आचार्य श्री जिन भद्र गणि क्षमा क्षमण जी महाराज साहब

| | |
|---|---|
| जन्म वीर संवत् | 1011 |
| दीक्षा " " | 1025 |
| युग प्रधान पद (आचार्य पद) | 1055 |
| देवलोक गमन | 1115 |
| आचार्य पद पर्याय | 60 वर्ष |

2. पूज्य आचार्य श्री बप्प भट्टि सूरी जी महाराज साहब

| | | |
|---|---|---|
| जन्म | विक्रम संवत | 800 |
| दीक्षा | विक्रम संवत | 807 |
| आचार्य पद | विक्रम संवत | 811 |
| देवलोक गमन | विक्रम संवत | 895 |
| आचार्य पद पर्याय | | 84 वर्ष |

3. पूज्य आचार्य श्री हेमचन्द्र सुरी जी महाराज साहब

| | | |
|---|---|---|
| जन्म | विक्रम संवत | 1145 |
| दीक्षा | विक्रम संवत | 1150 |
| आचार्य पद | विक्रम संवत | 1166 |
| देवलोक गमन | विक्रम संवत | 1229 |
| आचार्य पद पर्याय | | 63 वर्ष |

4. पूज्य आचार्य श्री पद्मतिलक सूरी जी महाराज साहब

| | | |
|---|---|---|
| जन्म | संवत उपलब्ध नहीं है | |
| दीक्षा | विक्रम संवत | 1368 |
| आचार्य पद | विक्रम संवत | 1375 |
| देवलोक गमन | विक्रम संवत | 1425 |
| आचार्य पद पर्याय | | 50 वर्ष |

5. पूज्य आचार्यश्री देव सुन्दरसुरीजी महाराज साहब

| | | |
|---|---|---|
| जन्म | विक्रम संवत | 1396 |
| दीक्षा | विक्रम संवत | 1404 |
| आचार्य पद | विक्रम संवत | 1420 |
| देवलोक गमन | विक्रम संवत | 1482 |
| आचार्य पद पर्याय | | 62 वर्ष |

6 पूज्य आचार्य श्री सुमति सुन्दर सूरी जी महाराज साहब

| | | |
|---|---|---|
| जन्म | विक्रम सवत | 1494 |
| दीक्षा | विक्रम सवत | 1511 |
| आचार्य पद | विक्रम सवत | 1518 |

देवलोक गमन निश्चित सवत उपलब्ध नहीं है।

किंतु 1566 मे आपने अचलगढ मे प्रतिष्ठा कराई है इस बात के प्रमाण है। इसलिये यह माना जा सकता है कि आपका आचार्य पद पर्याय 48 वर्ष से अधिक रहा हे। हो सकता हे यह 50-60 वर्ष के मध्य रहा हो।

7 पूज्य आचार्य श्री रत्नसूरी जी महाराज साहब

| | | |
|---|---|---|
| जन्म | विक्रम सवत | 1594 |
| दीक्षा | विक्रम सवत | 1613 |
| आचार्य पद | विक्रम सवत | 1624 |
| देवलोक गमन | विक्रम सवत | 1675 |
| आचार्य पद पर्याय | | 51 वर्ष |

8 पूज्य आचार्य श्री देवसुरी जी महाराज साहब

| | | |
|---|---|---|
| जन्म | विक्रम सवत | 1634 |
| दीक्षा | विक्रम सवत | 1643 |
| आचार्य पद | विक्रम सवत | 1656 |
| देवलोक गमन | विक्रम सवत | 1713 |
| आचार्य पद पर्याय | | 57 वर्ष |

9 पूज्य आचार्य श्री विजय रामचन्द सूरी जी महाराज साहब

| | | |
|---|---|---|
| जन्म | विक्रम सवत | 1952 |
| दीक्षा | विक्रम सवत | 1969 |
| आचार्य पद | विक्रम सवत | 1992 |
| देवलोक गमन | विक्रम सवत | 2047 |
| आचार्य पद पर्याय | | 55 वर्ष |

जानकारी लिखने में कोई भूल हुई हो तो क्षमा याचना करता हूँ।

❖❖❖

## "उमंग"

☐ श्री भरत शाह

तुम कहते हो त्रुटि है मुझमें, मैं कहता हूँ दोप तुम्हारा।
आखिर आज हुआ क्या हमको, कमियाँ ढूढ रहा जग सारा ?
एक हाथ की पाचो अगुली, नहीं हुई है कभी एक सी।
फिर क्यों हम उम्मीद करें कि, कमी नहीं हो कहीं एक भी ?
मुझमे तुममे, इनमे-उनमे, कमियाँ तो होती हैं सवमे।
कुछ दूर करे, कुछ माफ करे, हम अपने मन को साफ करें।
छोटे-चड़े सभी में भाई, कमी नहीं, कुछ गुण भी होते।
कमी छोड़ जव गुण देखेंगे, मन न कभी फिर मैले होंगे।

# ईर्ष्या का दुष्परिणाम

□ श्री धनरूपमल नागोरी
एम. ए., बी. एड., साहित्यरत्न

दुर्गुण एक हो तो उसका परिणाम बड़ा दुखद होता है। लेकिन जहाँ अनेकों दुर्गुण इकट्ठे हो जाए तो वहाँ तो उनके अशुभ परिणामों की कल्पना भी बड़ी भयावह है। दुर्गुणों में ईर्ष्या भी एक बड़ा महा दुखदायी दुर्गुण है। यह एक ऐसा महारोग है जो एक बार लग जाय तो जीवन को खोखला कर देता है। इसका परिणाम स्वयम् के लिये बड़ा घातक होता है।

किसी ने अच्छा मकान बनाया, ईर्ष्या हुई अरे ! इसने ऐसा आलीशान मकान कैसे बना लिया। किसी ने अच्छा पैसा कमाया ईर्ष्या हुई अरे ! यह इतना धनवान कैसे हो गया। कोई अच्छा पढ़ लिख गया, ईर्ष्या हुई अरे ! यह इतना कैसे पढ़ गया। कोई बड़ा अफसर बन गया, ईर्ष्या हुई अरे ! यह इतने ऊँचे पद पर कैसे पहुँच गया। तात्पर्य यह कि ईर्ष्या करने के रास्ते कदम-कदम पर है। यह तो स्वयम् हो जाती है। परिणामतः टेन्शन, चिन्ता, आधि, व्याधि, उपाधि बिना बुलाये जीवन में आ जाती है और मानव इसके प्रभाव से जीवन भर मुक्त नहीं हो पाता है। ऐसे अनेकों उदाहरण शास्त्रों में भरे पड़े है जिनसे इसके कटु विपाक का ज्ञान हो जाता है। वर्णन आता है कि आचार्य वज्रनाभ ने वाहु और सुवाहु नामक दो मुनियों की सबके सामने प्रशंसा की, उसे सुनकर पीठ एवं महापीठ नामक दो मुनियों ने ईर्ष्या की। उन्हें गुरू का प्रशंसा करना सुहाया नहीं। परिणामतः उन्होंने स्त्री वेद बांधा और वे क्रमशः मरकर ब्राह्मी और सुन्दरी बने। इससे ज्ञात होता है कि निरर्थक विना किसी सोच-विचार के लाभालाभ का विचार किये बिना जव व्यक्ति ईर्ष्या करता है तो उसका परिणाम कैसा दुखदायी होता है। पुरूष वेद से स्त्री वेद में परिवर्तित हो गये। कितना उनके लिये दुखदायी परिणाम रहा। इसी प्रकार नयशील गुणसूरि ने अपने शिष्यों के गुणों के पक्षपाती नहीं बने और ईर्ष्या की, फलस्वरूप सर्प बने । कैसा दारूण परिणाम उनके जीवन में ईर्ष्या करने से आया। जिससे मानव गति छोड़ तिर्यंच गति में जहाँ भंयकर विडम्बनाएँ हैं, उन्हें जन्म लेना पड़ा। इसलिये ईर्ष्या त्याग जीवन में हितकर है। इसी प्रकार अंजना सती पूर्व भव में कनकोदरी नामक रानी थी। उसकी शौक्य लक्ष्मीवती थी जो बहुत धर्म-परायण और भक्तिवाली थी। प्रभु पूजनादि में विशेष लीन रहती थी। उसकी अपनी एक प्रतिमा आराधनार्थ थी जिसे वह एक सुन्दर पेटी में रखती थी। यह बात कनको दरी को ईर्ष्या वश सहन नहीं हुई। उसने मौका देखकर एक दिन उस प्रतिमा को कचरापेटी में फेक दिया और प्रसन्न हुई। मन में सोचा अच्छा हुआ अब लक्ष्मीवती परमात्मभक्ति नहीं कर पायेगी। लेकिन बारह घड़ी बाद में उसे पश्चाताप हुआ। सद्‌विचार आया। सोचा अरे! मैंने यह अच्छा नहीं किया। प्रतिमा तो लौटा दी और प्रायश्चित स्वरूप साध्वीजी महाराज से आलोयणा भी ली। बाकी कर्म की तो उसने निर्जरा करली, किन्तु थोड़ा अशुभ कर्म शेष रह गया। फलस्वरूप उसे बाइस वर्षों तक पति वियोग सहना पड़ा।

इन सब बातों और दृष्टान्तों से ज्ञात होता है कि केवल एक दुर्गुण का फल जीवन में कितना दुखदायी होता है। इस वास्ते अनेकों दुर्गुणों से अपने आपको बचाते हुए दुर्गुण भी अगर घर कर गया है तो महापर्युषण पर्व के दिनों में शुभ आराधना करते हुए उसे दूर करनेका प्रयास सदैव करते रहना चाहिये। महापर्वाधिराज पर्युषण पर्व हमको यही संदेश देने हेतु प्रतिवर्ष आते हैं कि अशुभ को छोड़ो और शुभ में अपने आपको जोड़ो। जो इस संदेश का पालन करते हैं वे अल्प संसारी बनकर भवबंधनों से छुटकारा पा जाते हैं और जो ध्यान नहीं देते वे भवभमण बढ़ाकर भटकते रहते हैं। मार्ग चुनना हमारे हाथ है। ❖❖❖

9) किसी से डरने वाला न हों, (10) भव्यात्मा हों, (11) दूसरो की उन्नति देखकर आनंदित होने वाला हो। उपरोक्त गुण युक्त आत्मा सघपति पद को धारण कर सकता हे। ऐसी भव्यात्माए साक्षात देव स्वरूप लगती हैं।

सघपति को सघयात्रा मे किस प्रकार का आचरण करना चाहिए इस विषय मे ज्ञानी भगवतों ने कहा है कि– (1) तीर्थ यात्रा के सपूर्ण फल प्राप्त करने के इच्छुक सघपति को मिथ्यात्वी का ससर्ग कभी नहीं करना चाहिए और उसके वचनों पर विश्वास भी नहीं करना चाहिए। (2) अपने भाइयो से भी अधिक प्रेमभरी दृष्टि से यात्रियों के साथ व्यवहार करना चाहिए। (3) जीवो को अभयदान देने के लिए अमारी प्रवर्तन का पालन करना चाहिए। (4) अरिहत भगवान की भक्ति से युक्त सघपति को मुनि भगवतो तथा श्रावको को वस्त्र, पात्र ओर नमस्कार इत्यादि से रोज भक्ति करनी चाहिए। (5) सघ यात्रा करते हुए बीच मे आने वाले ग्रामों मे रहने वाले साधर्मिक बधुओ को उनकी आवश्यकतानुसार गुप्त रीति से धन आदि देकर उनके जीवन को सुखी बनाना चाहिए और उनको जिन-धर्म में स्थिर करना चाहिए। इन गुणों वाले सघपति इस प्रकार के कार्य करके विशेष पुण्योपार्जन करते हैं। सघपति उदारता पूर्वक धन का सद्व्यय करक अपने स्वय के साथ अनेक आत्माओं के उद्धारक बनते हैं ओर अल्प काल मे ही मोक्ष की प्राप्ति करते ह।

हम सभी जिन आज्ञाओं का पालन करते हुए, उनके द्वारा बताए गए अठारह पापों से दूर रहते हुए, ज्ञानी भगवतो द्वारा उपरोक्त बताई विधि के अनुसार तीर्थ यात्रा करें एव अपनी शक्ति के अनुसार धन व्यय करते हुए विविध तीर्थो की यात्रा करके पुन्योपार्जन करे एव आगामी भव मे महाविदह क्षेत्र में मनुष्य जन्म पाकर श्री सीमधर स्वामी भगवत की निश्रा मे सर्व-विरति साधु धर्म अत्यन्त श्रद्धा और लगन से, पूर्ण रूप से पालन कर, वहा ऐसा मरण प्राप्त करे कि फिर जन्म लेना ही नहीं पडे ओर मोक्ष का अक्षय सुख प्राप्त करे, यही मनोकामना। अत्यन्त महत्वपूर्ण जयवीयराय सूत्र में यही तो माँगनी की जाती हे।

❖❖❖

☆ गर्म लोहे पर चोट करने पर उसे थोडी चोटों से जैसा चाहो वैसा मोडा जा सकता है, उसका निर्माण इच्छानुसार किया जा सकता है। मगर यदि लोहा ठडा हो जाए तो उसे बहुत ज्यादा चोटे मारनी पडती हे ओर इच्छानुरूप उसका निर्माण हो ही जाएगा यह विश्वास से नहीं कहा जा सकता। ऐसे ही जब व्यक्ति उत्साह मे हो या भाव विशेष की अवस्था मे हो तो उस समय उसको थोडे प्रेरकवचनो से मोडा जा सकता है ओर उसका निर्माण इच्छानुसार किया जा सकता हे ओर यदि वह उत्साह ओर भावविहीन हो तो ज्यादा प्रेरकवचन कहने पड़ते हे तो भी उसका निर्माण अपनी इच्छानुरूप हो ही जाएगा, ऐसा विश्वास नहीं दिलाया जा सकता।

❀❀❀

☆ तुम्हारा प्रेम, उत्साह ओर कार्यमग्नता बडे से बडे काम को भी छोटा ओर कठिन से कठिन काम को भी सरल बना देते हे जबकि तुम्हारी अरुचि, निराशा और अकर्मण्यता छोटे से छोटे काम को भी बडा ओर सरल से सरल काम को भी कठिन बना देते हे।

# सम्यगदृष्टि माता कौन ?

❑ श्रीमती मंजू पी. चौरडिया
प्रभारी, धार्मिक पाठशाला

Give me a good mother, I will give you a good nation.

**तुम मुझे एक अच्छी माँ दो, मैं तुम्हें एक अच्छा राष्ट्र दूँगा।**

**— नेपोलियन**

संस्कार निर्माण में मां की अहम् भूमिका होती है। ऐसी आर्दश मां केवल सन्तान को जन्म ही नहीं देती जीवन भी देती है। मां बच्चे की ही नहीं विश्व की भी भाग्य विधाता होती है। माँ बच्चों के सुकोमल मन की धरती पर अच्छे संस्कारों के बीज बोती हैं। ऐसे संस्कारी बालक ही परिवार समाज और राष्ट्र की शोभा होते हैं। इसलिए माँ का दायित्व है कि वह प्रारम्भ में ही बच्चों को ऐसी स्वस्थ जीवन शैली का प्रशिक्षण दिलाये जिससे उसमें अच्छी आदतों का निर्माण हो सके, सहनशीलता, श्रमणशीलता और नम्रता का विकास हो सके।

जैन दर्शन में आदर्श माँ उसे कहते है जो अपने बच्चों को ऐसी आध्यात्मिक शिक्षा और संस्कार दिलाये जिससे वह दुर्गति में न जाये, और धार्मिक शिक्षा पाकर स्वयं का ही नहीं जगत का भी कल्याणकारी बने और इस लोक में ही नहीं परलोक में भी शाश्वत सुख को प्राप्त करें।

श्री आर्यरक्षित की माता ऐसी ही आदर्श माता थी। जब श्री आर्यरक्षित चौदह विद्या का पारगामी होकर बारह वर्ष बाद आया, तब पूरा नगर उसे बधाने के लिये सामने गया। स्वयं राजा भी सामने गया। मां यह सब देख कर सोचती है कि पुत्र पुण्यवान तो है कि पूरा नगर राजा सहित सामने लेने गया परन्तु सबके साथ यदि मैं भी जाऊँ तो मेरे पुत्र का भला चाहने वाला कौन ? मेरा पुत्र पण्डित होकर आया है परन्तु इस पण्डिताई से यदि दुर्गति में जावे तो भी मेरी कुक्षि लाजे, इसलिये मुझे सामने नहीं जाना है। और मां सामने नहीं गई क्योंकि मां पुत्र का भला चाहने वाली सम्यगदृष्टि माता थी।

पुत्र चारों तरफ देखता है कि माँ कहाँ हैं ? माँ को न देख कर पुत्र को शंका होती है कि माँ क्यों नहीं आयी ? जरूर कुछ कारण होना चाहिये। श्री आर्यरक्षित घर जाकर मां के चरणों में गिरा। मां उदासीन थी। पुत्र कहता है मां ! पूरा नगर, स्वयं राजा ने मेरा स्वागत किया। सब के हृदय में आनन्द की लहरें उछल रही है, और तू उदास क्यों है ? जैसे मुझे पहचानती ही नहीं हो। मां कहती है पुत्र ! पूरा नगर तेरी मां नहीं है, मैं ही तेरी माँ हूँ। पूरा नगर तेरी बाह्य उन्नति से आनन्दित हो सकता है, परन्तु तेरे में योग्य गुण प्रकट न होवे तब तक मुझे खुशी नहीं होगी। तू विद्या तो पढ़ कर आया है परन्तु यह तो पेट भरने की विद्या है, जब तक बारहवां अंग दृष्टिवाद नहीं पढ़े तब तक मुझे आनन्द नहीं होगा। पुत्र आज्ञाकारी था। सोचा माँ के जीवन में आमोद-प्रमोद खुशियां न हो और पूरा नगर प्रसन्न होवे तो यह जीवन किस काम का। आज्ञाकारी बेटे ने पूछा-माँ यह दृष्टिवाद कौन पढ़ायेगा ?

माँ कहती हे वेटा ! तेरे मामा जेनाचार्य हे वहाँ जा ओर पढ कर अपना ही नहीं समस्त ससार का कल्याणकारी बनना।

वारह वर्ष बाद पुत्र घर आया ओर उसी रात्रि मे पुत्र को जेनाचार्य के पास दृष्टिवाद पढ़ने भेज दिया। ऐसी थी सम्यगदृष्टि माँ।

प्रसिद्ध विचारक एमर्सन ने सही ही कहा हे— Men are what their mother make them

मनुष्य वैसे ही होते हैं जेसा उनकी माताए उन्हें वनाती हैं।

इसलिए सभी माताओं से मेरा विनम्र निवेदन है कि अपने वच्चों को सस्कारी बनाने के लिए देश को अच्छा नागरिक देने के लिए सद्धर्म के स्वस्थ प्रसार के लिये और भवी पीढ़ी के सुखमय जीवन के लिये "धार्मिक पाठशाला" श्री श्वेताम्बर जैन विद्यालय शिक्षा समिति घी वालों का रास्ता, जयपुर में अपने वच्चों को भेज कर एक सम्यग्दृष्टि माता का आदर्श स्थापित करें।

## दिनांक 19 सितम्बर, 95 से 26 सितम्बर, 95 तक सम्पन्न हुए अष्ठाह्निका महोत्सव मे पूजन पढाने का लाभ लेने वाले भक्तिकर्ताओ की शुभ नामावली

| | | |
|---|---|---|
| दि 19 सितम्बर, 95 | अट्ठारह अभिषक | श्री धनरूपमलजी कनकमलजी, सुनील कुमार जी नागोरी |
| 20 सितम्बर, 95 | श्री नवाणु अभिषेक महापूजन | श्री कुशलराजजी सिघवी |
| 21 सितम्बर, 95 | श्री संतिकर महापूजन | श्री आनन्दराजजी विनोद कुमार जी गोलिया |
| 22 सितम्बर, 95 | श्री भक्तामर महापूजन | श्री पतनमलजी नरेन्द्रकुमार जी लूनावत |
| 23 सितम्बर, 95 | श्री बृहद् शांति स्तोत्र महापूजन | श्रीमति राधावहिन। सुपोत्र सुधीर कुमार जी विपिनकुमारजी सुराना |
| 24 सितम्बर, 95 | श्री गौतमस्वामी महापूजन | श्री बाबूलालजी तरसेमकुमार जी जैन |
| 25 सितम्बर, 95 | श्री सर्वतोभद्र महापूजन | श्री हीराभाई चौधरी (मगलचद ग्रुप) |
| 26 सितम्बर, 95 | श्री पार्श्व पद्मावती महापूजन | श्री सरदारमलजी भागचदजी छाजेड़ |

# नारी एवं सामाजिक मूल्य

❑ श्रीमती गुलाब कंवर नाहटा, दिल्ली

नारी एवं सामाजिक मूल्य ऐसा गूढ़ विषय है जिस पर चर्चा - हम कितनी ही कर लें बड़े बड़े सुझाव दे दें, प्रस्ताव पारित कर दें परन्तु ये क्रियान्वित नहीं हो पाते है। सिर्फ कागजों में ही रह जाते हैं। हमने स्त्री भ्रूण हत्या रोकने का अभियान चलाया, संसद में प्रस्ताव भी पारित हो गया परन्तु नारी भ्रूण हत्या अब भी हो रही है। बिना दर्द गर्भपात नाम से डाक्टरों के विज्ञापन अब भी छप रहे है। हमने विज्ञापनों दूरदर्शन एवं सिनेमा में नारी देह के अश्लील प्रदर्शन को रूकवाने के लिए, शराब बन्दी के लिए अभियान चलाया अधिकारियों को ज्ञापन भी दिये परन्तु वास्तव में नारी की गरिमा अस्मिता अब भी दांव पर लगी हुई है। सरकार अव भी धड़ल्ले से शराब वनाने व बेचने के लाइसेंस दे रही है। और इस तरह कोरे आदर्शो की आड़ में नारी जाल में फंसी मकड़ी वन कर रह जाती है।

भारतीय समाज आदर्शो - मूल्यों दया प्रेम सहिष्णुता से परिपूर्ण रहा है। हम संयुक्त परिवारों में आपसी सामंजस्य बनाये रखते थे। जिस भारतीय समाज में नारी को देवी कहा गया, लक्ष्मी कहा गया, भारतीय संस्कृति का प्रतिरूप कहा गया और हां त्याग तप और वलिदान ही इसका श्रृंगार माना गया वहां सीता ने अग्नि परीक्षा दी, गर्भावस्था भें वन में निकाली गई और मर्यादा पुरूपोत्तम कहलाये राम। राजा हरिशचन्द्र ने तारामती को बीच वाजार में वेच दिया और स्वयं सत्यवादी हरिश्चन्द्र कहलाये। युधिष्ठिर ने द्रौपदी को दांव पर लगाया और स्वयं धर्मराज कहलाये। क्या एक भी ऐसा उदाहरण वता सकते है जहां नारी के लिए किसी पुरूष ने वलिदान दिया हो, त्याग किया हो या नारी मर्यादा पुरूषोत्तमा का खिताब मिला हो। अरे, नारी को तो नाम मिला है दस्यु फूलन देवी का और नारी के विमत्स रूप को प्रदर्शित किया है "बैंडिडक्वनी" के रूप में या सम्मान मिला है तन्दूर में जलने का। क्यों हो रहा है ऐसा ? क्यों भेदभाव रहा है नारी वर्ग के साथ ? क्यों हर क्षेत्र में उसे प्रताड़ित किया जा रहा है ? फिल्मों व धारावाहिकों में क्यों नारी का घिनोना रूप बना कर पेश किया जा रहा है जबकि वास्तव में ऐसी नारियां होती ही नहीं है। कुछ अपवाद स्वरूप-परिस्थितियों वश ही होती है ? कोठे पर पहुंचने वाली नारी भी समाज से ठुकराई बहशीपन का शिकार होती है स्वेच्छा से कोई नहीं जाती है।

अब तो हमारी सामाजिक व्यवस्था विकृत होती जा रही है। संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। एकाकी परिवार बन रहे है। परिवार के वृद्ध माता-पिता बच्चों के लि; भार वन गये हैं उन्हें वृद्धाश्रमों का सहारा लेना पड़ रहा है। शिक्षा में संस्कार नहीं मिल रहे हैं। दूरदर्शन के मल्टी चैनलों ने व पाश्चात्य संस्कृति की नकल ने लाग तप प्रेम सद्भाव की प्रति मूर्ति नारी को नारी जागृति और सामाजिक बंधन के दो राहे पर खड़ा कर दिया है। नारी आज नौकरी भी कर रही है समाज के सेवा कार्यो में भी लगी हुई है और घर की वंदिशों व शंकालू निगाहों से भी घिरी हुई है और यह दोहरी भूमिका निभाते हुए वह किस तरह सामाजिक मूल्यों को वढ़ा पायेगी।

समाज व सरकार नारी शक्ति को काम में तो लेना चाहती है लेकिन उसे महत्त्वपूर्ण भागेदारी नहीं देना चाहते हैं। यहाँ तक कि समान कार्य के लिए समान वेतन नहीं

मिलता। डाक्टर महिला को भी घर में प्रताड़ित किया जाता है। लेखिका की कृतियो के प्रकाशन मे परेशानिया है। आफिसों में कार्यरत महिला वदनिगाहों व आक्षेपों से घिरी रहती है। देश व समाज के सेवा कार्यों में महिला आगे आती हे तो उसे मायूस किया जाता है। जव तक काम करवाना हे तव तक ठीक, काम होते ही उसे उपेक्षित या निराश किया जाता हे ओर सवसे वडी विडम्वना तो यह है कि नारी स्वय नारी द्वारा प्रताड़ित होती रहती है।

क्या समाज या राष्ट्र अपनी धारणाओ को वदल नहीं सकता ? नारी की गरिमा का हास यानि समाज के मूल्यों का नाश क्योंकि आज भी समाज में मूल्यों के वनाये रखने मे नारी ही सक्षम है। वच्चों पर सस्कार मा ही डालती हे। दूरदर्शन फिल्मो व विज्ञापनों में लडकिया क्यो अपनी गरिमा गिराती है। क्योंकि उन पर परिवार का नियत्रण नहीं है। माए किट्टी पार्टी में मशगूल है, फैशन परेड में अग्रणी है तो कैसे सस्कार दे पाएगी। फिर ऐसे प्रदर्शनों से समाज में अपराध वृत्तिया वढ़ रही है। अपराध चाहे दुर्घटना हो हत्या हो आग जनी हो नशाखोरी की लत हो सजा तो नारी को ही भुगतनी पड़ती हे सुहाग नारी का उजडता हे, गोद मा की सूनी होती है। इसी कारण आज सामाजिक मूल्यों की प्रस्थापना आवश्यक है।

सामाजिक मूल्यों को वनाये रखने के लिए नारी शक्ति का उचित उपयोग किया जाये समाज व देश की नीतियों के निर्धारण में, कानून वनाने में महिलाओं की भी भागेदारी हो ससद में व अन्य वोर्डों में महिलाओं को प्रतिनिधित्व दिया जाये कोई भी सघ हो सस्था हो सभी में महिला प्रतिनिधि अवश्य होनी चाहिये। सभी पार्टिया व सरकार 30 प्रतिशत आरक्षण की डींग तो हाकते है परन्तु कितनी महिलाओ को टिकट देते हे ? क्योंकि उन्हें महिला की जीत की आशका रहती है। आर्थिक रूप से सशक्त न होने के कारण भी योग्य महिला पिछड़ जाती हे तो सरकार को कुछ विद्वान वुद्धिजीवी समाज सेवी महिलाओं को नामजदगी द्वारा ससद व विधान सभा में प्रतिनिधित्व दिया जाना चाहिये। नारी की कमजोरी है आर्थिक रूप से परतत्रता - वह धन के लिये पुरूषों व परिवार के लोगो के अधीन है। यदि नारी को आर्थिक सुदृढ़ता मिलती है तो वह चिता मुक्त होकर सामाजिक मूल्यों को पुन॰ समाज मे प्रतिपादित कर सकेगी इसके लिए नारी को शिक्षित करना आवश्यक है। इसी अपील के साथ—

कामयाव हो जायेगा ये जीवन<br>
जवाव हो जायेगा हर सवाल<br>
झेल लो इस जिंदगी को अपने आंचल मे<br>
हर आसू वनेगा महकता सा गुलाव।

❖❖❖

* जिसकी स्वय की ऑखे कुछ काम नहीं करतीं उसे तुम सैकडो दीप दोगे तो भी उनके प्रकाश से उसे कोई लाभ नहीं होगा। जिसकी ऑखे स्वय काम करती हों, उसे तुम यदि एक भी जलता हुआ दीप थमा दोगे तो उससे वह लाभ उठा लेगा, वेसे ही जिसकी स्वय की विवेकशक्ति ही कुछ काम न करती हो उसे यदि सेकडों ज्ञानसूत्र भी दोगे तो उनसे उसे कोई लाभ न होगा, हॉं जिसके पास स्वय की विवेक-शक्ति है उसे एक भी ज्ञानसूत्र दोगे तो वह उससे वहुत लाभ पा सकता है।

# होटल के पदार्थों से सावधान

श्री प्रवीण भण्डारी

भातरवर्ष के अधिकांश लोग शाकाहारी है। जिनमें से जैनधर्म के 98 प्रतिशत लोग शाकाहारी है। इसके अतिरिक्त जिन व्यक्तियों का विश्वास अंहिसा एवं शाकाहार में है और जो यह मानते है जब हम किसी को जीवन दान दे नहीं सकते है तो किसी प्राणी का भी जीवन लेने का कोई अधिकार नहीं है, वे भी शाकाहारी हैं। ऐसे व्यक्ति मांस, मछली, अंडा आदि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन नहीं करते है परंतु कई बार जहाँ यह व्यक्ति होटलों एवं रेस्त्रां आदि में जाते हैं और वहाँ पर आयोजित सामाजिक पार्टियों में भाग लेते हैं वहाँ अनजाने में या स्वाद चखने के कारण या फैशन के नाम पर या दोस्तों, रिश्तेदारों के कहने पर अनायास ही मांसाहारी हो जाते है और यह तव होता है जब वे केक, पेस्ट्री, रशियन सलाद, सूप, टाटी-चाकलेट्स आदि का सेवन करते हैं। इसलिये शाकाहारी व्यक्तियों को इस प्रकार के अखाद्य पदार्थों को अनायास या असावधानी के कारण खाने से रोकने की दृष्टि से कुछ तथ्य इस लेख में प्रस्तुत किये गये है एवं इस बात का सुझाव दिया गया है कि हम शाकाहारी किस प्रकार "शाकाहारी" ही वने रहें।

## केक

आजकल मध्यमवर्गीय एवं उच्चस्तरीय परिवारों में यहाँ तक कि गरीवों में भी 'वर्थ डे' मनाने का एक आम रिवाज सा हो गया है। अधिकांश शाकाहारी यह नहीं जानते हैं कि 99 प्रतिशत केक अंडे से वनते है, साधारणतया वाजार में मिलने वाले केक का निर्माण विना अंडे के होता ही नहीं है, इसलिये यदि हम केक वनाने वाले व्यापारी को स्पष्ट शव्दों में कह देवें कि वह विना अंडों की केक बनाये तो फिर वह बिना अंडे की 'बर्थ डे केक' या अन्य केक बना सकता है। शाकाहारी केक अर्थात् बिना अंडो के मिश्रित की हुई केक अनुपात में थोडी महंगी अवश्य होती है परन्तु शाकाहारी केक बनायी जा सकती है। अतः विना पूरी पूछताछ किये किसी भी प्रकार का केक नहीं खाना चाहिए। हमें परिवार के अन्य सदस्यों को बाजार में केक का सेवन खाने को रोकना चाहिए।

## पेस्ट्री

जो बात केक पर लागू होती है वही बात पेस्ट्री के बारे में लागू होती हैं। प्रायः सभी होटलों, रेस्त्रों, यहाँ तक कि घरों की पार्टियों में भी चाय-नाश्ते के समय पेस्ट्री खाने का रिवाज बहुत तीव्रगति से चल पड़ा है। वहुतसे व्यक्ति नहीं जानते हैं कि प्रायः सभी प्रकार की (नपाइनेपल, चेरी, रोज....) पेस्ट्री में अंडा मिला होता है। इसे रोकने के लिए सर्वप्रथम बाजार में मिलने वाली साधारण पेस्ट्री का सेवन ही नहीं करना चाहिए।

## रशियन सलाद

होटलों एवं अन्य स्थानों में आयोजित दावतों में सलाद का आम रिवाज है। उनमें से एक सलाद जो वहुत ही लोकप्रिय हुई है उसका नाम "रशियन सलाद"। इस प्रकार के सलाद में ककड़ी, टमाटर, फलों आदि के टुकड़ों के ऊपर जो पीले या क्रीम रंग की एक तह स्वाद एवं सुन्दरता के लिए लगायी जाती है वह वनती है 'मेमोनिज' से जो अंडे के तरल पदार्थ का एक भाग होता है। इस प्रकार प्रत्येक रशियन सलाद में अंडे का भाग होने से वह

शाकहारी नहीं होता हे। अत होटलो आदि मे जब इस प्रकार की रशियन सलाद हो तो पूछताछ कर पता करनी चाहिए कि पीले रग या क्रीम रग की तह मेयोनिज तो नहीं है।

## सूप

बडे-बडे होटलों या छोटे-छोटे होटलो मे खाने से पहले पार्टियो मे सूप परोसा (पीने को) दिया जाता है। इन सूप मे कभी-कभी हड्डियो के (सर्वे किया) टुकड़े या मास के टुकड़े होते हे जो हम लोग पनीर के पीस या ब्रेड पीस समझ कर खा लेते हे। इसलिये केवल शाकाहारी सूप, टमाटर सूप, बेजीटेवल सूप कहने से ही हमे सूप नही लेना चाहिए। हमे तहकीकात करनी चाहिए कि यह इस प्रकार के सूप में हड्डी या मास के पीस मिश्रित तो नहीं है।

## आइसक्रीम, टाफी, चाकलेट्स, बिस्कुट

प्राय सभी प्रकार के होटलो, रेस्त्रो यहाँ तक कि घरो की पार्टियो मे आखिरी मे आइसक्रीम, टाफी, विस्कुट सर्व होती है। अधिकाश साधारण आइसक्रीमो मे अडा मिश्रित नहीं होता हे परन्तु कई प्रकार की महगी आइसक्रीमो मे अंडे का मिश्रण होता है जैसे 'कसाटा' आदि जो सिर्फ बड़े-बड़े होटलो मे मिलती है। इसी प्रकार कई प्रकार की महगी चाकलेट्स टाफी मे भी 'लार' जैसा गीला भाग होता है उसमे भी अंडे का मिश्रण होता है। ठीक इसी प्रकार कई प्रकार के विस्कुट जो क्रीम लगे होते या क्रीम के होते है मे भी अडे का मिश्रण होता हे। अत इन सबसे बचने के लिए इनके ऊपर की गई पेकिंग रैपर पर मिश्रित किये गये पदार्थों का नाम होता है उसे पढ़ना चाहिए ताकि हम शाकाहारी ही बने रहे।

## हमारा कर्त्तव्य

हम लोग जब कभी होटलों, रेस्त्रों, बाजार या घरों में होने वाली पार्टियों में जाते हैं तो इन सभी चीजों से दूर रहना चाहिए या हमें होटल, रेस्त्रों, बाजार में दुकानदारो से पूछना चाहिए कि इसमें कहीं अडा या मासाहारी सम्बन्धी कोई पदार्थ तो मिला हुआ नहीं है। इसके अतिरिक्त जब हमारे साथ अन्य शाकाहारी व्यक्ति भोजन के समय उपयुक्त वस्तुए ले रहा है तो हमें उसे बताना चाहिए।

आजकल दूरदर्शन, आकाशवाणी, पत्र-पत्रिका आदि के द्वारा यह भ्रामक प्रचार फैल रहा है कि कुछ अंडे शाकाहारी भी है। शाकाहारी व्यक्तियो के लिए यह जानना जरूरी है कि ससार का कोई भी अडा चाहे प्रजनन के लायक हो या नहीं वह शाकहारी नहीं होता है।

एक और सावधानी जो शाकाहारी व्यक्तियों को रखनी चाहिए वह है मदिरापान और धूम्रपान को रोकना। यह इसलिए आवश्यक है कि मासाहारी को यदि प्रोत्साहन मिलता है तो वह शराब एव धूम्रपान की प्रवृति से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यह बात सिद्ध हो चुकी है कि शराब, धूमपान, मासाहार शरीर के लिए अत्यन्त घातक है। अत शरीर, धर्म, कर्म और सस्कृति की रक्षा के लिए हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम शराब, धूमपान आदि से बचे एव अंडे मिश्रित वस्तुओ आदि के सेवन से अपने-आपको बचायें और पूर्णत शाकाहारी बनने का दृढ़ सकल्प ग्रहण कर ले। ❖❖❖

★ यदि तुम शस्त्र-प्रहार से शत्रुओ को पराजित करते हो तो यह तुम्हारी अधूरी विजय है। यदि अपने प्रेम-व्यवहार से शत्रुओ को पराजित करते हो तो यह तुम्हारी पूरी विजय है। अधूरी विजय का परिणाम शत्रुता पैदा करना या शत्रुता बढ़ाना भी हो सकता है, जबकि पूरी विजय का परिणाम शत्रुता मिटाना है।

# व्रतोपवास

❑ श्रीमती मधु भंडारी

धर्मशास्त्रों में मनुष्यों के कल्याण के लिए यज्ञ, तपस्या, तीर्थसेवन, दान आदि अनेक साधन बताये हैं। उनमें से एक साधन व्रतोपवास भी है। इसकी बड़ी महिमा हैं। अन्तःकरण की शुद्धि के लिए व्रतोपवास आवश्यक है। इसमें बुद्धि, विचार ज्ञानतंतु विकसित होते हैं। शरीर के अन्तःस्थल में परमात्मा के प्रति भक्ति, श्रद्धा और तल्लीनता का संचार होता है। पारमार्थिक लाभ के साथ-साथ व्रतोपवास से लौकिक लाभ भी होते हैं। व्यापार, व्यवसाय, कला-कौशल, शास्त्रानुसंधान और उत्साहपूर्वक व्यवहार, कुशलता का सफल सम्पादन किये जाने में मन निगृहीत रहता है। जिससे सुखमय दीर्घ जीवन के आरोग्य साधनों का स्वतः ही संचय हो जाता है।

यद्यपि रोग भी पाप है और ऐसे पाप व्रतों से दूर होते है तथापि कायिक, वाचिक, मानसिक और सांसर्गिक पाप, उपपाप, महापापादि भी व्रतोपवास से दूर होते हैं। उनके समूल नाश का प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि व्रतारम्भ के पूर्व पापयुक्त प्राणियों का मुख हतप्रभ रहता है और व्रत की समाप्ति होते ही वह सूर्योदयकालीन कमल की भांति खिल उठता है। पुण्य प्राप्ति के लिए किसी पुण्य तिथि में उपवास करने या किसी उपवास के कर्मानुष्ठान द्वारा पुण्य संचय करने के संकल्प को व्रत कहा जाता है। यम-नियम और शम-दम आदि का पालन, भोजन आदि का परित्याग अथवा जल-फल आदि पर रहना तथा समस्त भोगों का त्याग करना, ये सव व्रत के अन्तर्गत समाहित होते है। शास्त्रों के उपर्युक्त नियम ही व्रत कहे जाते हैं।

व्रती को शारीरिक संताप सहन करना पड़ता है। इसलिये 'तप' भी कहा गया है। इन्द्रिय-निग्रह को 'इम' तथा मनो-निग्रह को 'शम' कहा गया है। व्रत में इन्द्रियों का नियमन (संयम) करना होता है। इसलिए इसे नियम भी कहते हैं। जो द्विजातिगत (मनुष्य) विधिपूर्वक अग्नि होत्र या यज्ञ, या अनुष्ठान या पूजा-पाठ करने में असमर्थ है, उनके लिए व्रत, उपवास और नियमों का पालन करना ही परम् कल्याणकारी है। इनके पालन से देवगण या तीर्थंकर भगवन् व्रती (व्रत उपवास करने वाला) पर प्रसन्न होकर उसे योग तथा मोक्ष आदि सब कुछ प्रदान कर देते हैं।

संतोष, क्षमा, सत्य, दान, शौच, इन्द्रिय-संयम, देव-पूजा, चोरी का अभाव इन नियमों का पालन प्रायः सभी प्रकार के व्रत-उपवास में माना गया है। सभी पापों से उपाकृत (मुक्त) होकर सब प्रकार के भोगों का त्याग करते हुए सद्गुणों के साथ वास करना ही 'उपवास' कहलाता है।

व्रती को केवल व्रत (आयंविल, नवकारसी, एकासना, ब्यासना आदि) उपवास करने से संतुष्ट नहीं होना चाहिए अपने धर्मशास्त्रों में व्रतोपवास काल के दौरान "चौदह नियम" बताये गये हैं जो निम्नलिखित है—

(1) सचित— जीव सहित वस्तु अर्थात् कच्चा पानी, फल-फूल, मूल बीज आदि कोई सचित वस्तु छेदन-भेदन होकर अग्नि, आदि शस्त्र पाकर तवा तक उसका त्याग करना।

(2) द्रव्य— रोटी, दाल, चावल आदि द्रव्यों की गिनती करना।

(3) विगय— दूध-दही, घी, मक्खन, तेल आदि का त्याग।

(4) उपानह— जूते-चप्पल आदि की सख्या का त्याग।
(5) ताम्बूल— मुखवास, पान-सुपारी आदि का त्याग
(6) वस्त्र— पहनने-ओढने, अलकरण, श्रृगार आदि का त्याग।
(7) कुसुम— सूघने की वस्तुओ- फूल, इत्र, सेट आदि का त्याग।
(8) वाहन— घोडा, हाथी, जहाज, मोटर आदि का त्याग।
(9) शयन— पलग, खाट, विछोना आदि का त्याग।
(10) विलेपन— चदन, तेल, उवटन आदि का त्याग।
(11) ब्रह्मचर्य— स्त्री-पुरुष सम्पर्क, मेथुनादि-सहवास का त्याग।
(12) दिशा—ऊची-नीची तिरछी दिशा की मर्यादा करना।
(13) स्नान— स्नान के जल व नहाने की गिनती का त्याग।
(14) भोजन— जो चीजे भोजन मे या पानी पीने मे आवें, उनके वजन का त्याग करना।

इन नियमो के अतिरिक्त उपवास करने वाले व्यक्ति (व्रती) को स्नान आदि की क्रिया से निवृत्त होकर, शुद्ध होकर 'व्रतोपवास काल' मे श्रावक के "वारह नियमो" का पालन करना चाहिए। देव पूजन, देव दर्शन, गुरु वदन, सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषध, प्रवचनलाभ, तप, दान-पुण्य, स्नात्र पूजा, व्रह्मचर्य पालन, स्वाध्याय।

सभी व्रतोपवासों में व्रती को अपने त्रिविध तापों को दूर करने के लिए, अन्त करण की शुद्धि के लिए, विशेषत भगवत्व प्रीति के लिए इन नियमों का पालन करना चाहिए। इन नियमों से उसका परम-कल्याण होता है, वुद्धि निर्मल हो जाती है। अतिचारों में सावगुण का सचार होता है, विवेक शक्ति प्राप्त होती है, सत्-असत् का निर्णय स्वत होने लगता है और अन्त में सन्मार्ग में प्रवृत्त होते हुए कर्त्ता लौकिक पारलौकिक सुखों को प्राप्त करता है।

इसलिए व्रतोपवास की महिमा वताते हुए कहा गया है कि 'व्रतोपवास' के अनुष्ठान से पापों कछा नाश होता है। मनचाहा फल की पूर्ति होती है, देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त होता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि जो व्यक्ति निर्दिष्ट विधि से व्रतोपवास का पालन करता है वे ससार में दु:खो से रहित होते हैं। इससे व्रती का परम कल्याण होता है और स्वर्ग लोक में ऐश्वर्य का भोग करते हुए देवताओं द्वारा सम्मान प्राप्त करते है।

## अमृत बिन्दु

☐ श्री दर्शन छजलानी

- ★ जो शक्ति के वल पर विजय प्राप्त करता हे, वह अपने शत्रु पर पूर्ण विजय नहीं प्राप्त कर पाता।
- ★ आत्म-विश्वास बढ़ाने का तरीका यह है कि तुम वह काम मत करो जिससे तुम्हें डर लगता है।
- ★ जिस मनुष्य की जितनी कम आवश्यकताए होती है, उतना ही वह ईश्वर के निकट होता है।
- ★ मनुष्य के जीवन का इतिहास प्राय अपने सगो से नहीं परायो से बनता है।
- ★ अलादीन के खजाने की भाँति और कई भी खजाने है, जो केवल शब्दों की कुन्जी द्वारा खुल सकते हैं।
- ★ प्रेम चन्द्रमा के समान है, अगर वह वढ़ेगा नहीं तो घटना शुरू हो जायेगा।
- ★ त्याग एक परीक्षा है, वलिदान प्यार की कसौटी है।

# रात्रिभोजन का निषेध क्यों ?

❑ श्रीमती संतोषदेवी छाजेड़

एक बार मेरे सामने प्रशन आया कि जैन परम्परा ने रात्रि भोजन को अस्वीकार क्यों किया ? भला भूख के लिए भी कोई समय निर्धारित होता हैं ? यथार्थता यह है कि जब भूख लगे तब खा लो। यह एक ही नियम पर्याप्त हैं। भूख के लिए क्या रात और क्या दिन ? क्या प्रकाश और क्या अंधकार ?

बम्बई में एक सम्मेलन हुआ। उसमें अनेक वैज्ञानिकों ने भाग लिया। वहाँ पर विषय प्रस्तुत हुआ कि जैन परम्परा में रात्रि भोजन का निषेध किया गया है। उसके कारणों की जानकारी करनी चाहिए। एक महिला उन कारणों को जानने के लिए मेरे पास आयी। मैं उस समय बम्बई में ही थी। उसने प्रश्न उपस्थित किया। मैंने उस महिला से कहा– रात्रि भोजन न करना धर्म से सम्बन्धित तो है ही, क्योंकि यह धर्म के द्वारा प्रतिपादित हुआ है, इसके साथ इस निषेध का एक वैज्ञानिक कारण भी है। हम जो भोजन करते हैं उसका पाचन होता है तैजस शरीर के द्वारा। हमारे पाचन की शक्ति है तैजस।। उसको अपना काम करने के लिए सूर्य का आतप आवश्यक होता है जब सूर्य का प्रकाश नहीं मिलता तव वह निष्क्रिय हो जाता है, पाचन कमजोर हो जाता है। इसलिए रात को खाने वाला अपच की वीमारी से बच नहीं सकता। यह कारण वैज्ञानिक है।

दूसरा कारण है कि जब सूर्य का आतप होता है, तव कीटाणु वहुत निष्क्रिय होते हैं जैसे ही सूर्य चला जाता है, सवमें प्राण शक्ति का संचार होता है और वे सब सक्रिय हो जाते हैं। वे अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करते हैं। वीमारी जितनी रात में सताती है, उतनी दिन में नहीं सताती। वायु का प्रकोप भी रात में अधिक होता है। ये सारी वीमारियां रात में इसलिए सताती है क्योंकि रात में ताप नहीं होता। जव ताप होता है तव वीमारियां उग्र नहीं होती। जैसे ही सूर्य का ताप मिटता है बीमारियों में शक्ति आ जाती हैं कष्ट देने वाले तत्व सक्रिय हो जाते हैं। रात में चोर ही नहीं सताते, ये किटाणु भी सताते हैं। रात में नींद ही नहीं सताती, बीमारियां भी सताती हैं।

## अपरिग्रह : विग्रह से मुक्ति

अपरिग्रहवाद भगवान महावीर का एक प्रमुख सिद्धान्त है। भगवान महावीर ने कहा था– "विश्व में संघर्ष और विषमता का केन्द्र परिग्रह और संग्रह वृत्ति है। जहाँ-जहाँ संग्रह-वृत्ति का प्राबल्य होगा, वहाँ-वहाँ विग्रह का होना अवश्यम्भावी है।" आज के युग मे समाजवाद, साम्यवाद आदि जो विभिन्न दल है। वे भी अपरिग्रहवाद के सिद्धान्त को स्वीकार करते है। उनका कहना है कि किसी एक ही स्थान पर संपत्ति का संग्रह नहीं होना चाहिए। उनका विकेन्द्रीकरण बंटवारा होना चाहिए। भगवान महावीर ने अपरिग्रह सिद्धान्त के सम्बन्ध में तीन मुख्य बातें बताई:–

1. अपनी आवश्यकताओं से अधिक साधनों का संग्रह मत करो।
2. अपनी आवश्यकताओं को भी कम करो, इच्छाओं पर नियंत्रण करो।
3. जो साधन सामग्री तुम्हारे पास है, उसका स्वयं के लिए कम से कम उपयोग करो तथा अधिक से अधिक जन हितार्थ स्वेच्छापूर्वक वितरण करो।

प्रत्येक व्यक्ति यदि अपनी आवश्यकताओं को सीमित कर देगा तो अशांति तथा विषमता का निश्चित रूप से मूलोच्छेद हो जाएगा और विश्व में जो भूखमरी शोषण, छीना झपटी, आपाधापी फैली हुई है वह समाप्त हो जायेगी लेकिन जव तक हम जागृत नहीं होते तव तक

शांति की कल्पना नहीं की जा सकती। जैसा की चलता आ रहा हे कि एक तरफ तो शांति प्रस्ताव पास किए जाते हे तथा दूसरी तरफ भयकर व सहारक अणु अस्त्रो के सृजन को वढ़ावा दिया जाता हे। ऐसे मे विश्व शांति की स्थापना कभी सभव नहीं होगी। यदि वास्तव मे हम 'सत्य शिव सुन्दर' की स्थापना करना चाहते हे तो भगवान् महावीर के दिव्य संदेशो को व्यवहार मे लाना आवश्यक है। विश्व मात्र नि·शस्त्रीकरण के द्वारा ही अभय होकर जी सकता है। लेकिन नि·शस्त्रीकरण तभी सभव है जव दुनिया का हर देश इस दिशा में ईमानदारी से सक्रिय हो जाए।

"महावीर ने कहा जीयो और जीने दो।"

❖❖❖

# संघर्ष मय संसार

□ श्रीमती शान्ती देवी लोढा

सुख दुख दोनों से मंडित सम्पूर्ण सृष्टि का आनन।
काँटो से प्लावित होता प्रत्येक हरित वन कानन।।1।।

गभीर सिन्धु का जल जो वर्पा का कारण होता।
लवणों के कण के कारण वह निशि दिन मानो रोता।।2।।

उज्ज्वल शशि निज किरणो से जन्म मे अमृत वरसाता।
लेकिन निज लाछन लखकर वह करुणा कथाए गाता।।3।।

स्वर्णिम आभा से दिनकर जग को आलोकित करता।
लेकिन आतप ज्वाला से वह निशि दिन व्याकुल रहता।।4।।

निर्मल निर्झर का स्वर जो है मन को मुदित वनाता।
सहकर प्रहार खडो के, निश्वासे भरता जाता।।5।।

नीले नभ का नव आगन उडगुण से शोभा पाता।
होता हे व्यथित हृदय जव श्यामल मेघो से छाता।।6।।

पृथ्वी के पावन उर पर फल फूल सभी फलते हैं।
पशु, पक्षी, मानव के शव इसके ऊपर जलते हैं।।7।।

कमनीय कमल निज छवि को लख लख आनन्दित होता।
पर वास पक में लख कर है मन ही मन वह रोता।।8।।

मानव जीवन मे सुख दुख दोनो ने नीड़ वनाया।
सुख में वह रत रहता है दुख में क्यो रूदन मचाया ?।।9।।

# नमस्कार महामंत्र

❑ श्री रतनचन्द कोचर

संसार में कई मंत्र है। इन सब में नमस्कार महामंत्र प्रथम मंत्र है। काल अनादि है, जीव अनादि है और जिन धर्म भी अनादि है। अतः नमस्कार मंत्र भी अनादिकाल से पढ़ने में आ रहा है।

श्री नमस्कार (नवकार) महामंत्र सूत्र में 9 पद, 8 संपदा, 7 गुरु अक्षर, 61 लघु अक्षर और 68 सर्व अक्षर होते हैं।

अतः नमस्कार के आदि अक्षरों से वना "अ आ उ सा" को स्वतंत्र मंत्र माना है। नमस्कार महामंत्र में अरहंत भगवंतों को, सिद्ध भगवंतों को, आचार्य महाराजों को, उपाध्याय महाराजों को और लोक में रहे हुए साधु महाराजोंको नमस्कार किया गया है। संक्षिप्त में नमस्कार महामंत्र को "नमोर्हत-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व साधुभ्य कहते है। ये पांच नमस्कार सभी पापों का नाश करने वाले होते हैं तथा समस्त मंगलों में श्रेष्ठ मंगल है।

नमस्कार महामंत्र के जाप व स्मरण से सभी विघ्न व पाप दूर होते हैं व मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसलिए इसे महामंत्र कहते हैं।

इसमें अरिहंत आदि पांच परमेष्ठि के गुण बताए गए है। वे निम्नलिखित हैं— अरिहंत के 12 गुण, सिद्ध के 8 गुण, आचार्य के 36 गुण, उपाध्याय के 25, साधु के 27 । इस प्रकार कुल 108 गुण होते है। इसके प्रतीक से माला में 108 दाने होते हैं।

नमस्कार महामंत्र प्रभावशाली है।

(1) जैन शास्त्र का पठन करते समय शुरू में ही याद करना पड़ता है।

(2) नमस्कार महामंत्र का एक वार भी जाप करने से पाप कर्मों का क्षय हो जाता है।

(3) समस्त मंत्रों से यह उच्चतम मंत्र होने के कारण यह महामंत्र है।

(4) परलोक गेमन के समय जिसके हृदय में मित्रता के भाव और महामंत्र नमस्कार होता है उसे सद्‌गति अवश्य प्राप्त होती है।

(5) विधिपूर्वक जाप करने से नमस्कार महामंत्र से वशीकरण, विद्वेषण, मोहन आदि कर्मों के विषय में सिद्धि प्रदान करता है।

(6) एकमास के उपवास सहित महामंत्र का जाप किया जाय तो वह सिद्ध का कारण बन जाता है। अतः इसे मृत्युहन नाम का तप कहा है।

(7) नमस्कार महामंत्र चौदह पूर्व का सार कहा है।

नमस्कार महामंत्र चमत्कारिक है। चमत्कार का अर्थ है इसी जन्म में मिलने वाला फल। तो नमस्कार महामंत्र की विधिपूर्वक आराधना से इस लोक में अर्थ, काम, आरोग्य और अभिरति आदि प्राप्त होती है।

मेरे जीवन की घटना वतलाना चाहता हूं। आठ वर्ष पूर्व मेरे दाहिने पैर के गौडे की ढकनी के नीचे की हड्डी का फैक्चर हो गया। डा. आर.एन. माथुर साहव ने मुझे एवं परिवार को कह दिया कि ये भविष्य में चल नहीं पायेंगे न ही दौड़ पायेंगे। पैर के गौडे की ढ़कनी का आपरेशन बीकानेर, जयपुर आदि स्थानों में कहीं भी नहीं हो सकेगा।

आचार्य देव श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वर जी म. के बताए गए "नमस्कार महामंत्र" का एक पद "नमो अरिहताणं" का एक लाख का जाप विस्तर पर रहते हुए किया। मैं तीन माह में चलने लग गया तथा डा. साहव को चल कर वतला दिया। यह घटना देखकर डा. साहव आश्चर्यचकित रह गए।

अतः मुझे वचपन से ही नमस्कार महामंत्र पर अटूट श्रद्धा है।

मैं सभी से प्रार्थना करता हू कि प्रात काल उठते ही सात नवकार, खाना खाते समय सात नवकार, शुभ कार्य जाने से पूर्व सात नवकार गिनकर जाए तो कार्य आपका जरूर सिद्ध होगा।

परम गुरुवर्य्या महत्तरा साध्वी श्री सुमगला श्रीजी महाराज साहब ने मुझे "वरकाणा" तीर्थ यात्रा के दौरान बारह नवकार हमेशा गिनने व गिनाने का महामत्र दिया है वह आज भी चालू हे।

नमस्कार महामत्र उत्कृष्ट, श्रद्धा और भक्तिपूर्वक गिनने वाले को अभी भी तत्काल स्व अभीष्ठ की प्राप्ति और अनिष्ठ का निवारण होता है।

चितन करने मात्र से नमस्कार महामत्र जल और अग्नि को रोक देता है। शत्रु, महामारी, चोर तथा राज्य सम्बन्धी घोर विघ्नों का नाश भी महामत्र करता है।

❖❖❖

# रखना अटल विश्वास तूं

□ श्री आशीष कुमार जैन

रे चेतन!

जिनदेव, गुरु और धर्म में, रखना अटल विश्वास तू
करुणा, मेत्री, शुभभाव का, मन में रखना वास तू।1।

सादगी, सतोप, सेवा, जीवन का हेतु मानकर
कटक बिछे पथ पर चलने का, करना सतत् अभ्यास तू।2।

समता, सरलता, उदारता, हृदय में आए विशालता
पूर्वजों की यशोगाथा का, पढ़ना उज्जवल इतिहास तू।3।

साधनों की अल्पता से, साधर्मी अगर परेशान हो
सम्पन्न बने तुझसे अधिक, करना यही प्रयास तू।4।

तुझसे पाने की आशा लिए, याचक जो आए द्वार
पर फूल नहीं तो पाखुड़ी पर, करना नहीं निराश तू।5।

उपकार या किसी की मदद, भूल जाना करके तुरन्त
अहसान अपने का तनिक भी, करवाना नहीं अहसास तू।6।

कार्य कोई ऐसा न हो जाए, न्याय और नीति विरुद्ध
देश, धर्म, कुल मर्यादा का, ख्याल रखना खास तू।7।

सकटो के बादल छा जाएँ, तेरे जीवन में कभी
कृत कर्मों का फल जानकर, होना नहीं हताश तू।8।

गुरु, गुरुजन, माता-पिता 'आशीष' का कवच पहन कर
निश्चिन्त रहना सदा उनके, बन पाँव तले का घास तू।9।।

# संस्कार
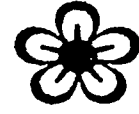
❑ श्री सुरेश मेहता

## सादगी रखिये

खान- पान में,
रहन-सहन में
विवाह-शादी में,
वेश-भूषा में,
बोल-चाल में।

## अंदर का भेद खोल दो

गुरु के सामने।
वैद्य के सामने।
माता के सामने।
पिता के सामने।
राजा के सामने।

## धर्म का परिवार

धर्म का पिता ज्ञान है।
घर्म की माता दया है।
धर्म की स्त्री दया है।
धर्म का पुत्र सन्तोष है।
धर्म की पुत्री ममता है।
धर्म की वहन सुमति है।
धर्म का भाई सत्य है।

## गुरुजनों के समक्ष

पैर पर पैर रख कर मत वैठो।
व्यर्थ की गप-शप मत करो।
किसी की निंदा मत करो।
अयतना से कभी मत बोलो।
छल-कपट की बात मत करो।
किसी भी प्रकार का गर्व मत करो।
सरल हृदय बन कर रहो।

## लडाई होती है

व्यर्थ की तेरी-मेरी करने से।
गुप्त बात के खुलने से।
कड़वे बोल बोलने से।
निंदा चुगली करने से।
मर्यादाहीन हठ ठानने से।
झूंठ कलंक लगाने से।
स्वार्थपूर्ति की लालसा से।
बार-बार ताने मारने से।
छल-कपट की बातों से।

## मित्र बनाओ

जो उम्र में समान हो,
जो धन में समान हो,
जो धर्म में समान है,
जो विचार में समान हो,
जो व्यवहार में समान हो,

## अहिंसा जननी है

जीवन विकास की,
अन्तर-विलास की,
विश्व शान्ति की,
आध्यात्मिक क्रांति की,
सत्य अमृत की,
अस्तेय व्रत की,
ब्रह्मचर्य बल की,
अपरिग्रह सुफल की,
मैत्री-भाव की,
करुणा स्वभाव की।

## कार्यसिद्धि के लिए

निरन्तर प्रयास करो,
साहस से काम लो,
शक्ति का उपयोग करो,
बड़ों की सलाह लो,
धर्म की राह लो।

## सुखी बनने के लिए

अहंकार को छोड़िये।
माया दम्भ को छोड़िये।
परोपकार कीजिये।
मिलजुल कर रहिये।
जो वोले, सो तौलिये।
मीठी वाणी वोलिये।
सवको आदर दीजिये।
दुःख दर्द में काम आइये।

# आओ गाथा आज सुनाएं महावीर भगवान की ......

श्री विनीत साड

आओ गाथा आज सुनाए, महावीर भगवान की।
दीपावली पर्व सुहाना, स्मृति है निर्वाण की।।
चेत्र सुदी तेरस के शुभ दिन, कुण्डलपुर में जन्म लिया।
त्रिशला मा के राज दुलारे, सिद्धारथ के लाल हिया।।
सोधर्म इन्द्र ने भक्ति भाव से, गिरि सुमेर अभिषेक किया।
स्वय बुद्ध प्रभु तीन ज्ञान मय, रत्नत्रय की माल हिया।।
सुख वैभव भारी महलों का, जरा न मन लुभा सका।
आमोद-प्रमोद राग रग भी, विपयन मं नहि फसा सका।।
तीस वर्ष की वय को पाकर, भव तन भोग भगाया था।
वन मे जाकर आतम ध्यान लगाया था।।
देवों ने आ अर्चा कीनी, उनके तप कल्याण की।
आओ गाथा आज सुनाए, भगवान महावीर की।।
द्वादश वर्ष तपस्या करके, धाती कर्म नशाए थे।
अनन्त चतुष्टय प्रगटे थे तव, ज्ञान अलौकिक पाये थे।
दिव्य ध्वनि तव खिरी मनोहर, जन जन के कल्याण की।
आओ गाथा आज सुनाए महावीर भगवान की।।
धर्म अहिसा सत्य सिखाया, तत्व ज्ञान समझाया था।
पच पाप है भव के कारण, हेय कपाय वताया था।।
स्याद्वाद अरु अनेकान्त से, द्रव्य स्वरूप लखाया था।
सवोदय का तीर्थ प्रवर्ता, जन कल्याण कराया था।
मधुर मय वाणी आगम् अध्यातम के ज्ञान की।
आओ गाथ आज सुनाए महावीर भगवान की।।
तीस वप तक चली देशना, अमृत की रसधार वही।
सद्धभामृत का पान कराया, आत्मोन्नति की राह कही।
कार्तिक कृष्ण अमावस के दिन, पावापुर की पुज्य लही।
अष्टकर्म को नाश कराके, शाश्वत सुख भुमि लही।।
श्रद्धा सहित "सघ" करता, स्तुति वीर महान की।
आओ गाथा आज सुनाए, महावीर भगवान की।।

# मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है

❑ वैद्यराज श्री रतनलाल रायसोनी

जैन धर्म का इतिहास कई उदाहरणों से भरा पड़ा है। जिसमें भगवान ऋषभदेव से लगाकर भगवान महावीर तक जो जन्म से क्षत्रीय थे परंतु कर्म से जैन वाणी सुनकर, मनन कर तीर्थंकर पद को पा गये। वे भी हमारी तरह मनुष्य थे। राजा के घर में जन्म लेने से राजा तो थे ही। राज कर्म के अनुसार आखेट भी करते थे। राजकाज करते हुए युद्ध इत्यादि भी करते थे। लेकिन जब जीव हिंसा के प्रति उनको घृणा हुई तो उन्होंने सोचा कि—

**जीव अकेला आया है,**
**जीव अकेला जायेगा।**

**जीव अकेला दुःख भोगेगा,**
**जीव तू क्यों हिंसा करता है।।**

**जीव सोच, फिर सोच, क्या साथ ले जायेगा।**

आज के युग के महान वीर भगवान महावीर जिन्होंने संसार में रहते हुए सारे सुख भोगते हुए त्याग का मार्ग अपनाया। कई प्रकार के कष्ट सहे, कई प्रकार के उपसर्ग सहे और उन पापों को काटने के लिये घोर तपस्या कर आत्मसात किया। जिसमें कई मास क्षमण मौन रहकर एक आसन पर खड़े रहकर घोर तपस्या करके जीवन को सफल किया। भगवान महावीर ने जब भी व्याख्यान दिया उस समय समोसरण (पाण्डाल) में कई प्रकार के पशु, पक्षी, चर, गोचर, जीवों के साथ मनुष्य और देवता तुल्य बुद्धि वाले मनुष्य भी थे। साधु-साध्वी, मुनि क्षुल्लक आदि बहुत दूर की नहीं सोचे तो भी इसी शताब्दी के प्रसिद्ध जौहरी जिनका नाम श्रीमद् रायचन्द्र जी था वे व्यवसायी तो थे ही परंतु धर्म ध्यान में अग्रणी थे। उनके जीवन में अहिंसा प्रमुख थी।

अहिंसा के उपदेश से प्रभावित होकर आज के युग के महान पुरूष महात्मा गांधी जिन्होंने सही अहिंसा का मार्ग अपनाकर हमको आजादी दिलवा दी। इसी संदर्भ में एक उदाहरण और कि जब भारत से स्वामी विवेकानन्द शिकागो यूनिवर्सिटी में उस समय के महान लेखक मेक्समूलर मिले उन्होंने स्वामी विवेकानन्द से कहा था मेरा दुर्भाग्य है कि अपनी माता की कोख से मैं इंग्लैण्ड में पैदा हुआ हूँ परन्तु मेरा मन मस्तिष्क भारतीय है।

यही कारण है कि मैंने अहिंसा का पाठ पढ़ कर चार वेदों में से एक वेद का इंगलिश में अनुवाद कर दिया। आगे भी करूंगा जिसमें अहिंसा प्रमुख मार्ग है। उस अनुवाद-वेद को महारानी विक्टोरिया ने सराहा और छपवाया।

मेक्समुलर ने अपनी जीवनी में लिखा है कि इग्लैण्ड की महारानी ने भारत के महान देवताओं के चित्र भी मंगवाए और उन चित्रों को बारी-बारी से देखकर कहा कि जो भगवान अपने पास शस्त्र रखता है वे क्या दूसरों की रक्षा करेंगे। धन्य है भारत की संस्कृति, धन्य है भारत की अहिंसा जिसने कर्म को बन्धन माना और कर्म के बल पर तिन्नाणं तारयाणं का पाठ पढ़ाया।

# धर्म क्या है ?

□ श्रीमति अजना जैन

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हे, जिससे धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य होता रहता है। उसे धर्म का मूल अर्थ या तो मालूम नहीं होता या मालुम करना व अमल करना नहीं चाहता अत यहाँ धर्म का सही अर्थ बताया जा रहा है।

धर्म केवल माला फेरने, मन्दिर में सिर को झुका देने में ही नहीं हे बल्कि किसी बेआसरे को आसरा देना, भूखे को दो रोटी खिलाने में, नगे को कपड़े दिलाने में, किसी बेसहारा अबला की इज्जत बचाने मे, घमण्डी के सिर को झुकाने में हैं।

आप धर्म की रक्षा करेंगे तो धर्म भी आप की रक्षा करेगा। बीमार होने पर डाक्टर से दवा ली जाती है ठीक उसी प्रकार अपने मन की शान्ति के लिए भगवान के बताये गये मार्गों पर चलना पड़ता हे। व्यक्ति अपने को सबसे महान् व विजयी, देखना व सुनना चाहता हे इसके लिए आपको क्रोध को त्यागना होगा, अपनी भौतिक इच्छाओ को काबू में लाना होगा। व्यक्ति जन्म से नहीं कर्म से महान् बनता है। बड़ा आयु से नहीं, अच्छे कार्यों से बनता हे।

किसी दूसरे की हत्या करने के बजाय अपनी बुराई की हत्या करो। बुरे आदमी से नहीं उसकी बुराइयों से नफरत करो। दिखावा छोड़कर परोपकारी बनो। उदाहरण के तौर पर एक सच्ची घटना है। एक महिला विवाह के कुछ महिनों पश्चात् ही अपनी सास व पति के तिरस्कार, मार-पीट, भूखा रखना आदि कई यातनाओं का शिकार हुई। एक धोबी जैसे कपड़ों को मारता है वैसे ही उसे भी मारा गया लेकिन अपने धर्म, फर्ज व कर्तव्य से वह पीछे नहीं हटी, कई बार वह मौत के कुँए से निकली है कारण उसे अपने परमपिता परमेश्वर पर विश्वास व श्रद्धा थी। घर में धर्म का नाम बल्कि मात्र दिखावा ही था। वह केवल नवकार मत्र का जाप और दादा गुरुदेव का नाम लेती थी उसका परिणाम आज उसको आत्मा से पाप का पर्दा, बुरी घटनायें व हर बात को देखती है और उसकी आवाज सुनती है यह अद्‌भुत शक्ति उसे अपने परिवार, रिश्तेदारों के निमित्त प्राप्त हुई है। सभी परिवार के सदस्यों ने अपनी आँखे व मुँह बद कर लिया था और आज 12 वर्षों के पश्चात् कुछ उजाले की किरण नजर आ रही है।

ज्ञान के मोती की माला पहनने से आपमें अद्‌भुत शक्ति का सचार होगा।

चेहरे पर सौन्दर्य, बाहरी पदार्थों से नहीं झलकता। इसका सबध अन्तरमन से है। आप भरपूर प्यार करें, दूसरों के दु ख को अपना दु:ख समझें। स्वय प्रसन्न रहें तथा दूसरों को प्रसन्न रखें। विनोदी स्वभाव के रहें। जीवन में सतोषी रहें। दूसरों पर विश्वास करें। आशावान रहें। साहस रखें। मुस्कराते रहने की आदत डालें। विवेक बुद्धि से समस्या का समाधान निकालें।

जो धर्म के रास्ते से हटता हे वह अपना सत्यानाश खुद करता है। धर्म सब तकलीफों से बचाये रखता है। अपनी शारीरिक, मानसिक, वैचारिक तथा आध्यात्मिक सेहत को बनाये रखता हे। भगवान का नाम याद करते रहने से जिस्म को सेहत, तन्दुरुस्ती , बल मिलता है। भगवान का नाम व मार्ग सारी खूबसूरती, खुशी और आनन्द देने वाला है। सब बीमारियों का अचूक इलाज है।

# श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर

## श्री वर्द्धमान आयम्बिल शाला की स्थायी मितियाँ

## वर्ष 1995-96

| नाम | राशि |
|---|---|
| श्रीमती गुमान कंवर लूनावत | 1002.00 |
| श्री धर्मचंदजी मेहता | 501.00 |
| श्री केशवलालजी राजपाल जी मेहता | 501.00 |
| श्री कानमलजी ढढ्ढा | 501.00 |
| श्री सरदार मलजी भागचंदजी छाजेड़ | 501.00 |
| श्री आशीषकुमार जी कान्तीलालजी शाह | 151.00 |
| श्री विजय राजजी लल्लुजी | 151.00 |
| श्री जितेन्द्रकुमार जी नागौरी | 151.00 |
| श्री सौभाग्यचन्द्र जी बाफना | 151.00 |
| श्री शंखेश्वर मलजी लोढा | 151.00 |
| श्री केशरीमलजी मेहता | 151.00 |
| श्रीमती मंजूलता बाफना | 151.00 |
| श्री सूरजचंदजी भूरठ | 151.00 |
| श्री विजयचंदजी ढढ्ढा | 151.00 |
| श्री सुशील चन्द्र जी सिंघी | 151.00 |
| श्री कुशल राजजी सिंघवी | 151.00 |
| श्री इन्द्ररचंदजी राजकुमार जी चौरड़िया | 151.00 |
| स्व. श्रीमती तीजकंवर दोसी | 151.00 |
| श्री राकेशकुमार जी नरेन्द्रकुमार जी जैन | 151.00 |
| श्री भंवरलाल जी सुराणा | 151.00 |
| श्री पारसचंदजी मेहता | 151.00 |
| श्री बुद्धपालचंदजी भण्डारी | 151.00 |
| श्री बद्रीप्रकाशजी आशीषकुमार जी जैन | 151.00 |
| श्री रतनचंदजी सिंघी | 151.00 |
| श्री अमोलकचंदजी सुराणा | 151.00 |
| श्री अजय कुमार जी ढढ्ढा | 151.00 |
| श्री सोहन लाल जी कोचर | 151.00 |
| श्री माणकराजजी भण्डारी | 151.00 |
| श्री मोतीलाल जी कटारिया | 151.00 |
| श्रीमती पानी बाई बया | 151.00 |
| श्री हीराचंदजी कोचर | 151.00 |
| श्री ज्ञानचंदजी सुभाषचंदजी छजलानी | 151.00 |
| श्री सोनराजजी पोरवाल | 151.00 |
| स्व. श्री कानमलजी खीमेसरा | 151.00 |
| श्री लालचदजी दलीचंदजी जैन | 151.00 |
| श्री विंशेष, महेन्द्र कुमार जी जैन | 151.00 |
| श्री हीराचंदजी माणकचंदजी चौरड़िया | 151.00 |
| श्री जयंतीलाल गगलभाई | 151.00 |
| श्री मोतीलालजी सुशील कुमारजी चौरड़िया | 151.00 |

# आयम्बिल शाला परिसर जीर्णोद्धार में सहयोगकर्ता

## अप्रेल 95 से मार्च 96 तक

| फोटो | भेटकर्ता |
|---|---|
| श्रीमती वसन्तकोर धर्म पत्नि श्री जगनाथ शाह | श्री दिलबाग राय जी |
| स्व श्री प्रेम राजजी साड | श्री राजीव कुमार, सजीव कुमार, मोहित व तुषार साड |
| स्व श्रीमती पुष्पा धर्म पत्नि प्रेम राजजी साड | श्री राजीव कुमार, सजीव कुमार, मोहित व तुषार साड |
| स्व श्री प्रशान्त लूनावत | श्रीमती गुमान कवर लूनावत |
| स्व श्रीमती मगन कवर धर्म पत्नि नेमीचदजी मेहता | पुत्र अशोक कुमार, विजय कुमार, अनिल कुमार मेहता |
| स्व श्री नवनीत मेहता (वटूक भाई) | श्री प्रवीण भाई, प्रमोद भाई मेहता |
| स्व श्री जोरावर सिहजी पोखरना | श्रीमती भागवती देवी पोखरना |
| स्व श्री बाल किशन जी जैन | श्री आर बी शाह |
| स्व श्रीमती बच्चनदेवी धर्मपत्नि बालकिशनजी जैन | श्री सुनील कुमार जैन |
| स्व श्री इन्दर चदजी चौरड़िया | श्री सुनील कुमार जैन |
| स्व श्री फतेहमलजी भण्डारी | श्री राजकुमार, अभयकुमार चौरड़िया |
| स्व श्री सुखराज जी भण्डारी | श्री सुशील कुमार भण्डारी |
| श्रीमती मोहनी देवी भण्डारी | श्री सुशील कुमार भण्डारी |
| | श्री सुशील कुमार भण्डारी |
| स्व श्रीमती सरोज बहन धर्म पत्नि बाबूलाल शाह | श्री उमराव मलजी फूलचदजी जैन |
| | पुत्र श्री हेमन्त कुमार शाह |

# श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ, जयपुर

भादवा सुदी 5 सं 2052 से भादवा सुदी 4 स 2053 तक
श्री सुमतिनाथ जिनालय मे अष्ट प्रकारी पूजा सामग्री
भेटकर्ताओं की शुभ नामावली

| | | |
|---|---|---|
| 1 | अखण्ड ज्योत | |
| 2 | पक्षाल पूजा (दूध) | श्री मगलचद ग्रुप |
| 3 | वरास खसकूची अंगलूणा | श्री सिद्धराजजी ढड्‌ढा |
| 4 | चन्दन पूजा | श्री छगनलालजी चम्पालालजी कोचर |
| 5 | केशर पूजा | शाह कल्याणमलजी कस्तूरमलजी |
| 6 | पुष्प पूजा | श्री खेतमलजी पनराजजी जैन भूतीवाले |
| 7 | अगरचना (वरक) | श्री बाबूलालजी तरसेम कुमार जी जैन |
| 8 | धूप पूजा | श्री प्रकाशनारायण जी मोहनोत |
| | | श्रीमती मोहनीदेवी पोरवाल |

# श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर

## वर्तमान महासमिति (1994-96) के
## पदाधिकारी एवं सदस्यगण

| क्र.सं. | नाम व पता | पद | फोन निवास | फोन कार्यालय |
|---|---|---|---|---|
| 1. | **श्री हीराभाई चौधरी**<br>6-डी, चाणक्यपुरी, बनीपार्क | अध्यक्ष | 363611<br>372611<br>382443 | 373495<br>372901<br>373616 |
| 2. | **श्री तरसेमकुमार जैन**<br>अक्षयराज, महावीर भवन के सामने, आदर्श नगर | उपाध्यक्ष | 601342 | 606899 |
| 3. | **श्री मोतीलाल भड़कतिया**<br>32, मनवाजी का बाग, मोती डूंगरी रोड | संघ मंत्री | 602277 | |
| 4. | **श्री दानसिंह कर्णावट**<br>एफ-3, विजय पथ, तिलक नगर | अर्थ मंत्री | 621532 | 565695 |
| 5. | **श्री नरेन्द्रकुमार कोचर**<br>4350, नथमलजी का चौक | मंदिर मंत्री | 564750 | |
| 6. | **श्री जीतमल शाह**<br>शाह बिल्डिंग, चौड़ा रास्ता, जयपुर | भंडाराध्यक्ष | 564476 | |
| 7. | **श्री अभयकुमार चौरड़िया**<br>जी. सी. इलेक्ट्रिक एण्ड रेडियो क.<br>257, जौहरी बाजार | उपाश्रय मंत्री | 565652 | 562860 |
| 8. | **श्री राकेशकुमार मोहनोत**<br>4459, के. जी. बी. का रास्ता | आयम्बिल शाला भोजनशाला मंत्री | 561038 | 540002 |
| 9. | **श्री सुरेश कुमार मेहता**<br>45, गुलाव पथ, चौमू हाउस, सी-स्कीम | शिक्षण मंत्री एवं संघमंत्री के सहायक | 384359 | 563655<br>561792 |
| 10. | **श्री आर. सी. शाह**<br>शाह एण्ड कम्पनी, जौहरी बाजार | हिसाब निरीक्षक | 622534<br>623855 | 565424<br>566534 |
| 11. | **श्री उमरावमल पालेचा**<br>पालेचा हाउस<br>एम. एस. बी. का रास्ता | संयोजक-बरखेड़ा तीर्थ | 564503 | 560783 |
| 12. | **श्री मोतीचन्द वैद**<br>जोरावर भवन<br>परतानियों का रास्ता, जौहरी बाजार | संयोजक जनता कॉलोनी मंदिर | 565896 | 561432 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 13 | श्री ज्ञानचद भण्डारी<br>मारूजी का चोक,<br>घी वालो का रास्ता | सयोजक-चदलाई<br>मंदिर | 569321 | |
| 14 | श्री महेन्द्रकुमार दोसी<br>दोसी एण्ड क<br>अग्रसेन मार्केट, जोहरी बाजार | सयोजक-उपकरण भडार | 513730 | 563574<br>561254 |
| 15 | श्री कपिल भाई शाह<br>इंडियन वूलन कार्पेट फेक्ट्री<br>पानों का दरीवा | सदस्य- महासमिति | 49910 | 45035 |
| 16 | श्री कुशलराज सिघवी<br>2 घ-7, जवाहर नगर | सदस्य | 654409 | |
| 17 | श्री गुणवन्तमल साण्ड<br>1842, चोवियों का चोक, घी वालो का रास्ता | सदस्य | 560792 | 565514 |
| 18 | श्री घीसूलाल मेहता<br>सी-45, अम्बावाड़ी, झोटवाड़ा | सदस्य | 335887 | 375478 |
| 19 | श्री चिन्तामणि ढढ्ढा<br>ढढ्ढा हाउस<br>ऊचा कुआ, हल्दियो का रास्ता | सदस्य | 565119 | 560409 |
| 20 | श्री चिमनभाई मेहता<br>1880, जयलालमुशी का रास्ता,<br>पुरानी बस्ती, जयपुर। | सदस्य | 321932 | |
| 21 | श्री नरेन्द्रकुमार लूनावत<br>2135-36, लूनावत मार्केट, दडा, हल्दियो का रास्ता | सदस्य | 561446 | 561882 |
| 22 | डॉ भागचन्द छाजेड़<br>पाच भाईयो की कोठी, आदर्श नगर | सदस्य | 603570 | 365320 |
| 23 | श्री महेन्द्रसिह डागा<br>एलाइड जैम्स, जौहरी बाजार | सदस्य | 620507<br>621232 | 561365<br>565085 |
| 24 | श्री राजेन्द्रकुमार लूनावत<br>ठाकुर पचेवर का रास्ता,<br>हल्दियों का रास्ता | सदस्य | 565074 | |
| 25 | श्री सुभापचद छजलानी<br>570, ठाकुर पचेवर का रास्ता<br>हल्दियों का रास्ता | सदस्य | 562997 | |

# श्रद्धाजंलियाँ

## श्री मनोहरमलजी सा. लूनावत

श्रीमान केसरीमल सा. लूनावत के सुपुत्र श्री मनोहरमल जी लूनावत राजकीय सेवा में रहते हुए भी आप सामाजिक एवं धार्मिक प्रवृत्तियों में अग्रणी रहे। सन् 1972-75 की महासमिति के कार्यकाल में आप उपाश्रय मंत्री रहे। आपने माणिभद्र के सम्पादक मण्डल में 22 वर्ष तक निरंतर अपनी

सेवायें प्रदान की। सम्वत् 2020 (33 वर्ष पूर्व) आपका प्रथम लेख श्रमण संघ में सुधार एवं एकता कैसे हों माणिभद्र के पंचम अंक में प्रकाशित हुआ था।

आप वारह व्रतधारी श्रावक थे। राजकीय सेवा से निवृत्ति के पश्चात् तो आप निरन्तर धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में ही पूर्ण रूपेण समर्पित रहे। संघ एवं परिवार द्वारा निकाली गई विभिन्न यात्राओं में आपका योगदान रहता था। आखिर में आपका देहावसान भी यात्रा में ही हुआ। दिसम्वर 95 में लूनावत परिवार द्वारा श्री सम्मेत शिखरजी की यात्रा का आयोजन रखा गया था जिसमें आप भी सपत्निक सम्मिलित थे। मार्ग में विभिन्न स्थानों की यात्रा करते हुए जव पावापुरी पहुँचे तो वहाँ पर आपकी यकायक तवियत खराव हो गई और चिकित्सकों के अथक प्रयास के पश्चात् भी दिनांक 28. 12.95 को रात्रि 1.00 वजे 72 वर्ष की आयु में आपने तीर्थ स्थली पर ही देह त्याग दी। वे अपने पीछे पत्नी, दो पुत्र एवं एक पुत्री छोड़ गये।

ऐसे धर्म निष्ठ, समाज सेवी, एवं सम्पादक मंडल के वरिष्ठतम सदस्य एवं जिन शासन को समर्पित व्यक्ति के निधन से अपार क्षति हुई है।

## श्रीमान इन्दरचन्दजी सा. चौरडिया

श्रीमान चम्पालालजी सा. चौरडिया के सुपुत्र श्री इन्दरचन्दजी सा. चौरडिया का जन्म सन् 1907 में जयपुर में हुआ था। आपने अपने पिताजी के साथ ही जवाहारात का कार्य प्रारम्भ किया और काफी समय तक श्रीलंका एवं वम्वई में रहे। आखिर में जयपुर में ही निवास किया।
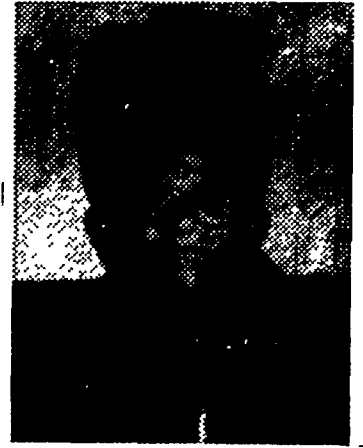
जयपुर में आपका निवास तपागच्छ मंदिर के सामने ही होने से आपकी सेवाये संघ को हर क्षेत्र में प्राप्त होती रही। सन् 1972-75 के लिए निर्वाचित महासमिति में आप आयम्विलशाला मंत्री चुने गए।

आपने आचार्य विशालसेनसूरीजी म. सा. के साथ पालीताणा एवं शिखरजी की तथा आचार्य भद्रगुप्त सूरीश्वरजी म. सा. के साथ पालीताणा की पैदल यात्रा की। आपने सम्वत 2028 में मास क्षमण की तपस्या तो की ही, दो उपधान तप के साथ 21, 15, 8 की कई वार तपस्यायें की। आपने 22 अक्टूवर, 1995 धनतेरस के दिन अपने इस पार्थिव शरीर का त्याग किया।

## श्री लक्ष्मीचंदजी भंसाली

महासमिति के तीसरे पूर्व सदस्य श्रीमान लक्ष्मीचन्दजी सा भसाली का भी मगलवार, दिनाक 23 1 96 को आकस्मिक निधन हो गया। आपका जन्म वर्तमान पाकिस्तान के मुल्तान प्रान्त के डेरागाजी खान शहर में सन् 1928 में हुआ था।

आजादी के बाद जब आपको अपना जन्म स्थान छोड़ना पड़ा तो आपका परिवार जयपुर में आया। आपका परिवार प्रारम्भ से ही विजय वल्लभसूरीश्वरजी म सा का अनन्य भक्त एव अनुयायी था और धार्मिक सस्कारों से ओत प्रोत था। प्राप्त प्रलेखों के अनुसार जब श्री जैन तपागच्छ सघ का विधान बना कर विधिवत महासमिति का गठन हुआ तथा सम्वत् 2014 में जब शाह किस्तूरमलजी तीसरे अध्यक्ष बने तो उनके साथ ही आपके पिता श्री आसानन्दजी भसाली महासमिति में उपाध्यक्ष चुने गए तथा सम्वत् 2021 तक आप निरन्तर उपाध्यक्ष बने रहे थे। इनके पश्चात् श्रीमान लक्ष्मीचन्दजी सा भसाली भी तीन बार महासमिति के सदस्य रहे। प्रथम बार आप सम्वत् 2026-28 की महासमिति के सदस्य बने। सम्वृत 2032-35 एव सम्वत् 2041-43 में भी महासमिति के सदस्य रहे।

आपको बचपन से ही गायन और जैन धर्म पर आधारित भजन रचने और गाने का शौक था। हर महोत्सव एव प्रसग पर आपके गायन की स्वर लहरिया गूजायमान होती थी जो लाखों श्रोताओं को मत्रमुग्ध करती थी। आप श्री जैन नवयुवक मण्डल, जयपुर के सस्थापक सदस्य थे और देहावसान के समय तक आजीवन सरक्षक के पद पर रहे। आपने अपने जीवन में कई सघ निकाले एव सघपति रहे।

दिनाक 1 दिसम्बर, 1995 को जब बरखेड़ा तीर्थ जीर्णोद्वार के शीला स्थापना का कार्यक्रम था तो उस समय भी आपने एक शिला का चढ़ावा लेकर अक्षय पुण्योपार्जन का लाभ लिया था। उस समय जब उनका स्मृति चिन्ह भेंट कर अभिनन्दन किया गया तो किसे मालुम था कि कुछ ही दिनों में वे हमारे बीच से चले जाने वाले हैं।

## अन्यानन्य

उपरोक्त के अतिरिक्त इस वर्ष निम्नांकित का भी श्रीसघ को अभाव सहन करना पड़ा है —

1 श्रीमती गुलाब बाई कोचर
2 कुमारी सोनल पल्लीवाल
3 श्रीमती गुलाब बाई भण्डारी
4 श्रीमती कचन देवी सोनी
5 श्रीमती सूरजकला छाजेड़
6 श्रीमती सरोज शाह

सम्पादक मण्डल एव तपागच्छ संघ की महासमिति उपरोक्त सभी स्वर्गीय आत्माओं की शांति के लिए जिन शासन देव से प्रार्थना करती है तथा परिवार जनों को उनका अभाव सहन करने की शक्ति प्रदान करने की कामना करती है।

□□

श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ, जयपुर द्वारा आयोजित

# स्वरोजगार प्रशिक्षण के बढ़ते चरण

**(दिनांक 19 मई 96 से 30 जून 96 तक आयोजित प्रशिक्षण शिविर का विस्तृत विवरण)**

□ सुश्री सरोज कोचर, शिविर संयोजिका

वर्तमान युग के बदलते हुए परिवेश में विकास के सभी पहलुओं में आर्थिक विकास के साथ-साथ आर्थिक उपलब्धि भी महत्वपूर्ण है। यह न केवल परिवार की व्यक्तिगत जरूरत है अपितु वह सामाजिक, धार्मिक क्षेत्र की अनिवार्यता बन गई है। अतः स्वाभिमान पूर्वक शान्त जिन्दगी व्यतीत करने के लिए स्वावलम्बन एवं उद्यमिता की महत्ती आवश्यकता है। क्योंकि–

**बुभुक्षितः किं न करोति पापम्।**

भूख मनुष्य क्या पाप नहीं करता। वर्तमान सन्दर्भ में आवश्यकता है सर्वजन सुखाय सर्वजन हिताय की उदात्त भावना की। कहा भी गया है–

**"उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्"।**

उदार चित्त वालों के लिए पृथ्वी ही परिवार है, इस प्रकार वसुधैवध कुटुम्बकम् की भावना से ओत-प्रोत विश्व शान्ति के अभिलाषी, पंजाब केसरी, परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री आत्म वल्लभ समुद्र सूरीश्वर जी म. सा. की पट्टपरम्परा पर अलंकृत चरित्र चूड़ामणि, परमार क्षत्रियोद्धारक, जैन दिवाकर वर्तमान गच्छाधिपति परम श्रद्धेय आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी म. सा. की पावन प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ जयपुर में साधर्मी भाई-वहिनों के उत्थान हेतु श्री समुद्र इन्द्रदिन्न साधर्मी कोष की स्थापना की गई। इस कोप के तहत् साधर्मी भाईयों के विकास एवं उत्थान हेतु जहाँ विविध प्रकार की गतिविधियाँ चल रही है वहीं आयोजित गतिविधियों में महिला उत्थान हेतु महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाली महिला स्वरोजगार प्रशिक्षण का अपना विशिष्ट महत्व है।

जैन एवं जैनेत्तर समाज की जुझारू महिलाएँ जो कुछ कार्य करना चाहती है पर उनके पास साधन नहीं है, दिशा नहीं है किन्तु शक्ति है। ऐसी स्थिति में आवश्यकता है उनमें मार्गदर्शन के साथ आत्मविश्वास एवं स्वावलम्बन की भावना जागृत करने की। रोजगार के अनेक साधन है किन्तु उचित शिक्षा एवं प्रशिक्षण के अभाव में शिक्षित भी सही कार्य नहीं कर पाते है इसी तथ्य को नजर मध्य रखते हुए इस कोण के तहत गत 6 वर्षों से मात्र निःशुल्क प्रशिक्षण शिविर ही नहीं लगाये जाते हैं अपितु जरूरतमंद महिलाओं को रोजगार भी दिलाया जाता है। दिनांक 19 मई से 30 जून 96 से प्रारम्भ इस शिविर में राजस्थान विश्वविद्यालय की विभिनन परीक्षाएँ आयोजित होने के बावजूद 2235 छात्राओं, महिलाओं ने विभिन्न हस्तकलाओं में प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस शिविर में मेहन्दी, सिलाई, पर्स-वैग, अंग्रेजी शिक्षण, पाक-कला, पेन्टिंग, सॉफ्ट टायज, कढ़ाई, मोती के आभूषण, पुष्प निर्माण एवं सज्जा, फ़ल संरक्षण, जूट वर्क, बेकार सामग्री में उपयोगी सामग्री निर्माण, क्रोशिया, गिफ्ट पैकिंग, मंगल कलश, मशीन मरम्मत एवं पिको ऊन, फोम के खिलोने, टेलीफोन एवं गैस ठीक करने का प्रशिक्षण दिया गया।

शिविर के अन्तर्गत जहाँ हस्तकला का प्रशिक्षण

दिया गया वहीं पर रोजगार हेतु मार्ग दर्शन देते हुए समय-समय पर नैतिक शिक्षा पर भी वल दिया जाता। इस श्रृखला मे ओजस्वी प्रवचनकार श्रुत भास्कर परम पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय धर्मधुरन्धर सूरीश्वर श्री जी म सा ने शिविरार्थियों को मार्गदर्शन एव आशीवर्चन देते हुए कहा कि पजाव केसरी का आचार्य श्रीमद् विजय वल्लभसूरीश्वर श्री जी म सा का स्वाध्याय, शिक्षा, स्वावलम्वन, साधर्मी, सेवा एव साहित्य के क्षेत्र मे अविस्मरणीय योगदान रहा। पूरे भारत में उनकी सद्प्रेरणा से जो कार्य हो रहे हे वह मात्र जेन समाज के लिए ही नहीं जैनेतर वन्धुओ के भी उत्थान हेतु किये जा रहे हैं। आप यहाँ जो भी शिक्षण प्राप्त कर रहे है नैतिकता, सद् आचरण के साथ उसको स्यय अपने जीवन में काम लेते हुए दूसरों को भी उसका प्रशिक्षण दे। शिविरार्थियों को शासन दीपिका, महत्तरा मरूधर सिहनी परम पूज्या साध्वी जी श्री सुमगला श्री जी म सा साध्वी जी श्री सोम्य रेखा श्री जी म सा के सस्कार निर्माण से सवंधित प्रवचन हुए।

शासन दीपिका, महत्तरा साध्वी जी सुमगला श्री जी म सा आदि ठाणा की पावन निश्रा मे शिविर का समापन हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि महापोर श्री मोहनलाल जी गुप्ता एव अध्यक्ष नगर पार्षद श्री ज्ञानचद जी वम्व थे। कार्यक्रम के शुभारम्भ नमस्कार मत्र की धुन से हुआ। तत्पश्चात् सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी ने मुख्य अतिथि एव अध्यक्ष का माल्यार्पण कर स्वागत भाषण किया। सघ मत्री श्री मोतीलाल जी भड़कतिया ने श्री समुद्रइन्द्रदिन्न साधर्मी सेवा कोष के उद्देश्यो पर प्रकाश डालते हुए शिविर के महत्व एव स्वावलम्वन की महत्ता के सदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत किये। शिविर सयोजिका सरोज कोचर ने शिविर की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। मुख्य अतिथि महापौर श्री मोहनलाल जी गुप्ता ने महिलाओं की स्थिति ओर स्वावलम्वन पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि हमें यहाँ से शिक्षण प्राप्त कर अलग- अलग कालोनी मे भी प्रशिक्षण देने का कार्य करना चाहिए। आपने प्रशिक्षकों को चादी के गिलास सम्मान स्वरूप भेंट किये।

अध्यक्ष श्री ज्ञानचद जी वम्व ने कहा कि हमारा कर्तव्य प्रत्येक नागरिक की सेवा के लिए होना चाहिए। हम सामाजिक परम्पराओं में वधते जा रहे हैं हमें विलासिता पूर्ण वस्तुओं को हटाना चाहिए। रोजगार के लिए हमारे मे शर्म नहीं होनी चाहिए। अपितु हाथ फैलाने मे होनी चाहिए। कोई भी कार्य छोटा या वड़ा नहीं होता अपितु आवश्यकता पड़ने पर वेहिचक प्रत्येक कार्य करने के लिए तेयार रहना चाहिए। आपने शिविर मे आयोजित निभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वालो में पुरस्कार वितरित किये।

महत्तरा साध्वी श्री सुमगला श्री जी ने कहा कि यह सघ साधर्मी सेवा के लिये अनेक कार्य कर रहा है यह वहुत अच्छी वात है। साधर्मी सेवा से तन, मन, धन पवित्र होता हे। आत्मा की मलिनता का नाश होता है। वंन्धुत्व की भावना आती हे। हम कोई भी कार्य करे विनम्रता ओर विवेक के साथ कार्य करना चाहिये। वहिनें रोजगार के कार्य से जुड़ रही हे यह वहुत अच्छी वात है। गृहस्थी के दोनो पहिये सुदृढ़ होने चाहिए। वहिनों को रोजगार के साथ-साथ अपने परिवार की उचित देखभाल करनी चाहिए परिवार मे श्रेष्ठ सस्कार देने चाहिये।

शिक्षण मत्री श्री सुरेश जी मेहता ने सभी आगन्तुको को धन्यवाद दिया। सभी के लिये स्वल्पाहार की व्यवस्था सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी मगलचद ग्रुप की तरफ से थी।

इस अवसर पर शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली वहिनो एव स्वरोजगार से जुड़ी वहिनों के द्वारा निर्मित हस्तकला से सम्वन्धित सामग्री की प्रदर्शनी भी लगाई गई। शिविर मे निम्नलिखित वहिनो, भाइयों ने अपनी नि शुल्क सेवाएँ इस प्रकार दी–

1. कु. आशा बंसल— संचालन व्यवस्था एवं सूतली मैकिंग
2. कु. सीमा जैन— संचालन व्यवस्था एवं मोती के आभूषण
3. प्रो. आर. के माथुर— अंग्रेजी प्रशिक्षण
4. श्रीमती अभिलाषा जैन— सिलाई
5. श्रीमती सुधा जायसवाल— सिलाई
6. कु. अंजु टांक— पाक कला, फल संरक्षण, क्रोशिया
7. कु. नविता जैन— पाक कला
8. कु. रीतू जैन— कढ़ाई, वूल वर्क
9. कु. सुनीता मुकीम— कढ़ाई
10. कु. रेणु जैन— सॉफ्ट टायज
11. कु. आशा जैन— फ्लावर मैकिंग
12. कु. वन्दना सोनी— पर्स बैग, पाक कला
13. कु. रेणु शर्मा— पेन्टिग पाट, फायल, स्केचिंग, ऑयल
14. कु. विनीता जैन— मेहन्दी
15. कु. हर्षा मुकीम— मेहन्दी
16. कु. रमिता जैम— गिफ्ट पैंकिग
17. कु. रश्मि जैन— मंगल कलश
18. कु. मोनिका सिरोहिया— बेकार सामग्री के उपयोग सामग्री निर्माण
19. कु. निशा लोढ़ा— सहायक
20. श्री भैंरूदान जी पंवार— मशीन रिपेयरिंग

इस कोष द्वारा संचालित स्वरोजगार उद्योगशाला के माध्यम से अनेक बहिनों ने प्रशिक्षण प्राप्त करके अपना रोजगार या प्रशिक्षण देना प्रारम्भ किया है। इस शिविर में पूर्व में यही से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली बहिनों ने अपनी सेवाएँ प्रशिक्षण देने में दी। श्री वीर बालिका महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना प्रथम इकाई की छात्राओं ने यहाँ पर प्रशिक्षण प्राप्त करके गाँव, बस्ती में प्रशिक्षण देती है।

पूरे वर्ष यहाँ सिलाई का निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रकार जन मंगल की उदात्त भावना से युक्त इस कोष के तहत् अनेक कल्याणकारी कार्य किये जा रहे है। आवश्यकता है नई तकनीक के साथ विस्तृत दायरों में कार्य करने की। अधिक से अधिक रोजगार के क्षेत्र में जुड़कर मानसिक, पारिवारिक शान्ति प्राप्त करने की। इसी आशा के साथ -

जय वीरम्

☆ ऐसे लोगों को पहले अच्छी तरह से पहचानो और फिर उनसे बचो, जिनके मुख से तो मधु बिन्दु के समान मीठे वचन टपकते हों मगर हृदय में धरती के अन्दर गुप्त रूप से बहने वाले मिट्टी के तैल–स्रोतों के समान विषस्रोत बहते हों; जो बाहरी व्यवहार तो भेड़ की तरह भोला सा करते हों, मगर भीतर व्यवहार भेड़िए की तरह चालाकी और दावपेच भरा रखते हों।

☆ पारस्परिक प्रेम, सहकार और विश्वास से जग में कोई भी कार्य असम्भव नहीं।

# श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल के 40 वर्षों में प्रगति के चरण

□ श्री अशोक पी जैन
महामंत्री

श्री आत्मानद जेन सेवक मण्डल श्री जेन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ का अभिन्न अग हें जो हमेशा विभिन्न जेन धार्मिक एव सास्कृतिक गतिविधिया आयोजित करने में अग्रणी रहा है।

मुझे यह बताते हुये अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि मण्डल अपनी स्थापना के लगभग चालीस वर्ष पूर्ण करने जा रहा हें। मण्डल की स्थापना श्री राजकुमार जी दुग्गड के कर कमलों द्वारा हुई।

तपागच्छ सघ की महासमिति का सम्वत् 2012 में विधिवत गठन हुआ उसी प्रकार आत्मानन्द जैन सेवक मडल के बारे में भी 'माणिभद्र' के प्रथम अक सम्वत् 2016 मे सघमत्री के प्रतिवेदन में भी उल्लेख मिलता है कि—

"श्री आत्मानन्द जैन सेवक मडल के चुनाव गत भाद्रपद शुक्ला-१ को हुए। श्री राजकुमारजी पजाबी अध्यक्ष, श्री जगवतमल जी साड मत्री एवं श्री हीराचन्दजी पालेचा कोषाध्यक्ष चुने गए। आचार्य वल्लभसूरीजी म सा की स्वर्गारोहण तिथि श्री जतन मलजी लूनावत की अध्यक्षता मे मनाई गई।"

विगत वर्षों में मण्डल परिवार द्वारा कई ऐतिहासिक कार्यक्रम आयोजित किये—

संवत 2039-40 अध्यक्ष सुरेश मेहता, मंत्री अशोक जैन (शाह) का कार्यकाल— इस कार्यकाल मे चन्द्राप्रभुस्वामी भगवान आमेर एव चदलाई मंदिर की पुन: प्रतिष्ठा समारोह का काम अपने जिम्मे लेकर सुन्दर व्यवस्था की एव इस अवसर पर प्रथम बार वहाँ पर सास्कृतिक कार्यक्रम देकर वहाँ की जनता को भाव विभोर किया। दादावाडी मोती डूगरी मे भी प्रतिष्ठा समारोह में मण्डल के सभी सदस्यों का सम्पूर्ण सहयोग रहा। मण्डल ने शिक्षा क्षेत्र में नि:शुल्क पाठ्य पुस्तकों का वितरण करीव 20 निर्धन छात्रों को मण्डल की ओर से देकर उनको शिक्षा मिलती रहे ऐसी व्यवस्था की।

सवत् 2040-2041 का कार्यकाल भी सुरेश मेहता एव अशोक जैन का रहा। इस कार्यकाल में भी युवकों को रोजगार दिलवाने हेतु ग्रीष्मवकाश में दो योजनाऐं चलाकर जवाराहात की कटिग व पालीश का प्रशिक्षण दिया गया। आचार्य श्री ह्रींकारसुरीश्वर जी म सा की प्रेरणा से सवा लाख फूलों की (तीन वार) आगी एव 1251 गिलास दीपक की आँगी का भव्य आयोजन किया गया एव एकदिवसीय यात्रा का आयोजन भी किया गया।

ग्रीष्मावकाश में रोजगारोन्मुखी शिविर का आयोजन किया जिसमे मण्डल के सदस्य श्री नरेन्द्र कुमार जी कोचर ने मोती पुवाई का प्रशिक्षण देकर 125 छात्राओं को स्वावलबी बनाया। किशनगढ़ मे आयोजित प्रतिष्ठा समारोह (महोत्सव) पर 31 हजार पुष्पों की एव 281 दीपक युक्त गिलास की झाँकी का आयोजन वहाँ (किशनगढ) जाकर किया। साथ ही मण्डल के मार्गदर्शन एव प्रेरणा से किशनगढ़ में श्री सभवनाथ जैन नवयुवक मण्डल, किशनगढ़ (जिला अजमेर) की स्थापना हुई जिसमें श्री शान्ती कुमार सिघी एव अशोक पी जैन का सक्रिय सहयोग रहा। इस वर्ष भी मण्डल की ओर से एक

दिवसीय यात्रा का आयोजन किया गया।

**संवत् 2041-2042 अध्यक्ष शीतलशाह, महामंत्री अशोक जैन (शाह) के कार्यकाल**— इस कार्यकाल में मण्डल परिवार की ओर से निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया निबन्ध का विषय **"जैन धर्म के पाँच महाव्रत का पालन कर राष्ट्र उन्नति की ओर अग्रसर हो सकता है"** जिसमें जैन अजैन सभी ने भाग लिया।

दिनांक 3.10.84 को मालवदेव की पंच तीर्थ हेतु यात्री बस रवाना हुई। मालपुरा में प्रतिष्ठा समारोह के अवसर पर मण्डल का पूर्ण सहयोग रहा।

**संवत् 2042-2043 का कार्यकाल भी शीतलशाह अशोक जैन का रहा।** इस कार्यकाल में जनता कालोनी में श्री सीमंधर सवामी की अजंनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव में रात दिन एक करके हर गतिविधि में सम्पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

दीक्षा कल्याणक का भव्य वरघोडा में मण्डल की दो जीवन्त झांकियाँ सम्मिलित की गई जिसमें एक झाँकी भगवान को डराने के लिए 15 फुट का राक्षस अपने कन्धों पर विठाकर डरावनी आवाज में किलकारियां करता है। राक्षसी दाँत और विकराल रूप दिखाकर भगवान को डराने का प्रयास करता हैं। राक्षस के की भूमिका मण्डल के सदस्य नरेश मेहता ने अदा की। विकराल राक्षस का रूप मानो जैसे धरती पर उतर आया हो ऐसा लग रहा था।

दूसरी झाँकी इन्द्र देवता भगवान को गोद में लेकर मेरूपर्वत ले जाकर भव्य महोत्सव करते है। इस बार भी मण्डल की ओर से 10 बसों द्वारा एक दिवसीय यात्रा श्री महावीर जी के लिए प्रस्थान हुई। हिण्डौन पहुँचने पर हिण्डौन संघ द्वारा सभी यात्रियों का स्वागत किया। मोहन वाडी में पू. साध्वी स्व. श्री विचक्षण श्री म. सा. की मूर्ति प्रतिष्ठा समारोह में मण्डल को आवास व्यवस्था सौंपी गई थी जिसमें मण्डल के कार्यकताओं नें चार दिन तक 24 घण्टे सेवायें देकर करीबन 5000 यात्रियों को तम्बू में ठहरा कर व्यवस्था की। एक दिवसीय यात्रा 26 बसों द्वारा जयपुर से मालपुरा (जयपुर स्थित जैन मंदिर के दर्शन करते हुए) गई। जिसके संयोजक श्री मोतीलाल जी भडकतिया थे। इसी यात्रा में श्री शान्ति कुमार सिंघी एवं सुरेश मेहता का विशेष सहयोग रहा। मालपुरा में स्वामी वात्सल्य का लाभ श्रीमान् हीराभाई एम. चौधरी ने लिया। 19 जुलाई 1987 को मण्डल परिवार की ओर से महावीर जी तीर्थ के लिए बसें गई।

**संवत् 2043-2044 अध्यक्ष शीतल शाह - मंत्री धनपत छजलानी का कार्यकाल**— इनके कार्यकाल में पाँच बसे नाकोडा, जैतारण दर्शनार्थ प्रस्थान की गई। प्रातकालः जैतारण पहुँचकर आचार्य सुशील सुरीश्वर म. सा. की वर्षगांठ में सम्मिलित होकर आचार्य भगवंत को मण्डल की ओर से सूरीमंत्र हाथीदांत की पट्टिका भेंट की गई। यात्रा जयपुर पहुँचने के पश्चात् मोहनवाडी में गोठ का आयोजन किया गया। जिसमें जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, एवं जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ के आगेवान उपस्थित रहे।

**संवत् 2045-46 - अध्यक्ष अशोक जैन (शाह) मंत्री ललित दुगड़ का कार्यकाल**— इनके कार्यकाल में शिक्षा क्षेत्र में निर्धन छात्रों को पुस्तकें देकर एवं जरूरतमंद छात्रों की फीस भर उन्हें शिक्षा दिलवाने की व्यवस्था की। पयुर्षण पर्व के पश्चात् राजस्थान की वसुन्धरा धरती पर भीलवाडा के समीप चंवलेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ के दर्शनार्थ बसें गई। 2046 - 2047 का कार्यकाल भी अशोक जैन, ललित दुग्गड़ का रहा।

**संवत् 2047-2048 - अध्यक्ष विजय कुमार सेठिया मंत्री दीपक वैद** का कार्यकाल - इनके कार्यकाल में पयुर्षण पर्व में अष्टापद तीर्थ की झांकी का आयोजन किया गया। पयुर्षण के पश्चात् तीन दिवसीय यात्रा जैसलमेर, लोद्रावा पार्श्वनाथ नाकोडाजी दर्शनार्थ गयी जिसके संयोजक अशोक जैन (शाह) थे।

**संवत् 2048-2049 का कार्यकाल भी विजय सेठिया, एवं दीपक वैद का रहा**—इस वर्ष भी पयुर्षण पर्व के दौरान नंदीश्वर द्वीप बावन जिनालय की भव्य झाँकी का आयोजन किया गया। इस झाँकी की व्यूह

# सुमति जिन श्राविका संघ

□ श्रीमती उषा सांड
महामंत्री, श्री सुमति जिन श्राविका संघ

आस्था और विश्वास से लगाया गया पौधा शीघ्र ही पुष्पवित और पल्लवित होता हे। श्री सुमति जिन श्राविका सघ को पु साध्वी श्री देवेन्द्र श्री जी ने जिस आस्था से रोपा था वह आज उनके विश्वास को पूर्ण करता नजर आ रहा है।

यद्यपि इन तीन वर्षों के समय में इस श्राविका सघ ने कोई बड़ी उपलब्धि तो प्राप्त नहीं की परन्तु समस्त श्वेताम्बर समाज मे धर्म प्रेमियो के बीच अपनी अलग छवि अवश्य बनाई है। जिस किसी भी भाई को किसीभी प्रकार की पूजा पढ़ानी हो तो श्राविका सघ को निमंत्रित अवश्य करता है और हम उसे यथाशक्ति पूरा करने की कोशिश अवश्य करते है। कई बार हमे अपनी असमर्थता भी जाहिर करनी पड़ती है जो कुछ भाइयो को अच्छी नहीं लगती है पर तु हमारी भी कुछ सीमायें व मजबूरिया है।

विगत वष की भांति ही गत पर्यूषण पर्व मे भी श्राविका सघ ने एक सास्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जिस में हमारा सहयोग श्री आत्मानन्द सेवक मण्डल ने किया। इस भक्ति सध्या की अध्यक्षता श्री हीराभाई चौधरी ने की व मुख्य अतिथि श्रीमती लाड बाईसा सिघी थी। श्राविका सघ के इस प्रयास में गत चातुर्मास में विराजित शासन दीपिका महत्तरा सा श्री सुमगला श्री जी महासज सा आदि ठाणा छ का पूरा मार्गदर्शन रहा जिससे कार्यक्रम दर्शनीय बन पड़ा और सभा भवन दर्शको से खचाखच भरा रहा।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्राविका सघ ने जनता कालोनी मन्दिर, घाट मन्दिर, बरखेड़ा तीर्थ व सुमति नाथ भगवान के मन्दिर के वार्षिक उत्सवों पर पूजाये पढ़ाई व भक्ति रस की स्वर लहरियाँ बिखराई।

शासन दीपिका महत्तरा श्री सुमगलाश्रीजी महाराज सा आदि ठाणा छ के नगर प्रवेश के समय मगल कलश लेकर उनकी अगवानी की व उनके साथ समाग्रह में प्रवेश कर स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

इस बार गर्मियों की छुट्टियों में "राजस्थान सगीत नृत्य सस्थान" के सहयोग से श्राविका सघ द्वारा एक सगीत व वाद्य वृन्द प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमे श्राविका सघ की महिलाओ को नि शुल्क प्रशिक्षण दिया गया। इसके समापन पर एक कार्यक्रम "सस्थान" की ओर से रविन्द्र मच पर आयोजित किया गया। इसमे सुमति जिन श्राविका सघ की सदस्याओं ने भाग लिया व दर्शको को मत्र मुग्ध किया। श्री गिरधारी लाल भार्गव सासद एव श्री हीराभाई चौधरी मुख्य अतिथि थे। इस शिविर के कार्यक्रम को सफल बनाने मे हमारी मडल की श्रीमती मीना कटारिया का उल्लेखनीय योगदान रहा।

श्राविका सघ को समय-समय पर कई महानुभावों से आर्थिक सहयोग मिलता रहता है जिसका सघ सदैव ही सदुपयोग करता आया है। इसी कड़ी से अबकी बार जीव दया आदि के अलावा बरखेड़ा तीर्थ जीर्णोद्धार में भी अपनी ओर से "एक ईट" का योगदान करने का निश्चय किया है। सघ की सदस्याओ को स्मृति के लिए एक चार खण्ड का टिफिन भेंट किया है।

इस वर्ष श्राविका सघ को सुचारू रूप से चलाने के लिए कुछ और पद बढ़ाने का सर्वसम्मत निर्णय लिया

गया। अब हमारे संघ के पदाधिकारी निम्न प्रकार से है—

श्रीमती लाडबाई सा शाह (संरक्षक)

श्रीमती सुशीला छजलानी (अध्यक्ष), श्रीमती रंजना मेहता (उपाध्यक्ष) श्रीमती उषा सांड (महामंत्री), श्रीमती विमला चौरड़िया (संयुक्त मंत्री), श्रीमती मधु कर्णावट (कोषाध्यक्ष) श्रीमती चेतना शाह (सांस्कृतिक मंत्री) श्रीमती संतोष छाजेड़ (प्रचार-प्रसार मंत्री), श्रीमती सुशीला कर्णावट व श्रीमती प्रतिभा शाह को पूजा व्यवस्था प्रभारी बनाया गया।

सदैव की भांति इस वर्ष भी प्रत्येक माह की पहली व 15 वीं तारीख को श्राविका संघ की सदस्यायें एकत्रित होती है व पहली तारीख को सामायिक करने के पश्चात् तत्कालीक विषयों पर चर्चा करती है। 15 तारीख को श्राविका संघ की सदस्याओं द्वारा बारी-बारी सेआगरे वाले मन्दिर में पूजायें पढ़ाई जाती है। इस बार हमने कुछ पूजायें ऐसी पढ़ाई जो हमारे लिये नई और कठिन थी परन्तु श्री धनरूप मलजी नागौरी के सहयोग से हमने ये पूजायें सहज ही में पढ़ा दी।

अंत में हम उन सभी महानुभावों का धन्यवाद करते है जिन्होंने हमारा उत्साह बढ़ाया और सभी प्रकार से हमें सहयोग दिया है।

जयजिनेन्द्र

# स्व. श्री लक्ष्मीचन्द जी भंसाली-एक स्मृति

☐ श्री सुनीत कुमार भंसाली

जयपुर (राजस्थान) के प्रसिद्ध धर्मनिष्ठ स्व. श्री आसानन्द जी भंसाली के सुपुत्र रत्न व्यवसायी प्रसिद्ध संगीतज्ञ धर्म प्रेमी श्री लक्ष्मीचंद जी भंसाली का हृदय गति रूक जाने से दिनांक 23.1.96 मंगलवार दोपहर 1 बजे आकस्मिक निधन हो गया। आपका जन्म वर्तमान पाकिस्तान के मुल्तान प्रान्त के डेरागाजी खान शहर में सन् 1928 में जन्माष्टमी के दिन हुआ था।

आपको बाल्यकाल से ही जैन धर्म पर आधारित भजन रचने और गाने का शौक था। आपने अपने जीवन में कई बार संघर्षमय क्षणों में भी संगीत व प्रभु भक्ति से मुंह नहीं मोड़ा और आप अपने जीवन में अर्द्धशताब्दी तक अनेक धर्मोत्सवों में अपनी स्वर लहरियों से लाखों श्रोताओं को मंत्र मुग्ध करते रहे। आप रत्न पारखी होने के साथ-साथ स्वयं समाज रत्न थे। विगत कुछ वर्षों से आपको संगीत सम्राट कहा जाने लगा था क्योंकि आप श्री की आवाज में वो जादू था जो जैन ही नहीं अपितु जैनेतर बंधुओं को भी अपनी ओर खींच लेता था।

आपको बड़े-बड़े आचार्य भगवंतों का आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ जिनकी सानिध्यता ने आपकी भक्ति को और परवान चढ़ाया।

आप श्री जैन नवयुवक मंडल, जयपुर के संस्थापक सदस्य थे। वर्तमान में आजीवन संरक्षक पद पर थे। आपने अपने जीवन में कई संघ निकाले एवं संघपति रहे।

हाल ही में निर्माणाधीन 'वर्धमान विहार', आदर्श नगर, जयपुर का शिलान्यास आप ही के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। साथ ही आप द्वारा बरखेड़ा तीर्थ क्षेत्र में भी शिलान्यास में शीला स्थापना का लाभ लिया।

अरिहन्त परमात्मा के परम भक्त एवं दादा गुरूदेव को साक्षात अनुभव करने वाले श्रीमान् लक्ष्मीचंद जी भंसाली जैन जगत के वो दैदीप्यमान नक्षत्र थे जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज सेवा में अर्पण कर दिया। आपके आकस्मिक निधन से जो वज्रपात हुआ उससे हिन्दुस्तान के सम्पूर्ण जैन समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

# श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर
# वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 1995-96
## (महासमिति द्वारा अनुमोदित)

☐ श्री मोतीलाल भड़कतिया, सघ मत्री

परम पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय वल्लभ सूरीश्वरजी म सा की समुदायवर्तिनी शासन दीपिका, महत्तरा साध्वी श्री सुमगला श्रीजी म सा, साध्वी श्री प्रफुल्लप्रभा श्रीजी म, सा श्री स्वर्णप्रभाश्रीजी म, सा श्री अमृतप्रभाश्रीजी म, सा श्री पीयूषपूर्णाश्रीजी म एव सा श्री वैराग्यपूर्णाश्रीजी म. आदि ठाणा-6 एव

सभी साधर्मी महानुभावो,

वर्ष 1994-96 के लिए कार्यरत महासमिति की ओर से वर्ष 1995-96 का अकेक्षित आय-व्यय विवरण एव अब तक हुए कार्य-कलापो का संक्षिप्त विवरण आपकी सेवा मे प्रस्तुत कर रहा हू।

## विगत चातुर्मास

यह तो आपको विदित ही है कि विगत चातुर्मास भी विराजित पूज्य साध्वीजी म सा आदि ठाणा-6 का ही था। पर्यूपण महापर्व से पूर्व हुई विविध तपस्याओ एव आराधनाओं का विवरण पिछले प्रतिवेदन मे प्रस्तुत किया गया था।

पर्यूपण महापर्व की आराधनाए आपकी पावन निश्रा में बहुत ही उल्लासपूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुई थी। कल्पसूत्रजी घर पर लेजाकर भक्ति भावना करने का लाभ श्री सुभापभाई भोगीलाल शाह परिवार द्वारा लिया गया। पालना जी को घर ले जाने का लाभ बाबूलाल तरसेम कुमारजी परिवार द्वारा लिया गया। स्वप्नाजी के चढावे में भी कीर्तिमान स्थापित हुआ। 15 दिवसीय एकासणा के साथ अक्षय निधि एव समवसरण तप के तपस्वियो की भक्ति का लाभ श्री भौरीलालजी जैन रानीवालों ने लिया तथा पर्यूपण पर्व में बेला तथा इससे ऊपर की तपस्या करने वालो के पारणा कराने का लाभ श्रीमती भीखीबाई वैद परिवार द्वारा लिया गया। दि 20-8-95 को वीशस्थानकजी तप की आराधना निमित्त साढ़े चार सो से अधिक उपवास सहित अति विशिष्ठ आराधना करने का अनूठा कार्यक्रम श्री शिवजीराम भवन मे पूज्य साध्वीजी म एव खरतरगच्छ की साध्वी श्री मुक्तिप्रभा श्रीजी म सा की सम्मिलित निश्रा में सम्पन्न हुआ था। इस अवसर पर अनेकों सघ पूजाए हुई।

## शिविर सहित विविध प्रतियोगिताये

पर्यूपण पश्चात् महिलाओ एव बालिकाओं में आध्यात्मिक ज्ञान एव प्रभू भक्ति के प्रति जागृति पैदा करने हेतु विविध प्रतियोगिताओं के आयोजन रखे गए। (1) दि 7-9-95 को श्री सुमतिनाथ भगवान से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी पेपर लिखित में। (2) दि 20-9-95 को प्रगति का मूल मत्र- पुरुपार्थ पर भापण प्रतियोगिता। (3) दि 17-10-95 को जैन दर्शन एव श्रीमद् विजयानन्द सूरीजी म का जीवन विपय पर प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम। (4) दि 26-10-95 को गहुली प्रतियोगिता एव "वि" से सम्बन्धित प्रश्न पेपर। (5) दि 27-10-95 को भजन

प्रतियोगिता एवं (6) 29-10-95 को णमोकार मंत्र प्रतियोगितायें सम्पन्न हुई।

दि. 20-9-95 को पंजाब केसरी आचार्यदेव श्रीमद् विजय वल्लभसूरीश्वरजी म.सा. का स्वर्गवास दिवस एवं दि. 18-10-95 को गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वरजी का 73वां जन्म दिवस धूमधाम से मनाया गया।

दि. 26-10-95 से 5-11-95 तक ग्यारह दिवसीय धार्मिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन रखा गया जिसमें प्रभू पूजा विधि, सामायिक, गुरु वंन्दन आदि का विस्तृत ज्ञान दिया गया।

## अष्टान्हिका महोत्सव

जंगम युगप्रधान जैनाचार्य श्रीमद् विजयानन्द सूरीश्वरजी म. सा. के स्वर्गारोहण शताब्दी वर्ष, श्रीमद् विजय वल्लभसूरीश्वरजी म. सा. की 42वीं पुण्य तिथि निमित्त संघ में मास क्षमण-सहित हुई विविध तपस्याओं के अनुमोदनार्थ आसोज बदी 10, सम्वत् 2052 दि. 19 सितम्बर, 95 से 26 सितम्बर, 95 तक अष्टान्हिका महोत्सव का आयोजन रखा गया। इस अष्टान्हिका महोत्सव की विशेष उपलब्धि यह रही कि श्री नवाणु अभिषेक महापूजन, श्री संतिकरं, श्री भक्तामर, श्री बृहद् शान्ति स्तोत्र, श्री गौतम स्वामी, श्री सर्वतोभद्र एवं श्री पार्श्व पद्मावती सहित सभी महापूजाएं हुई। पूजा पढ़ाने वालों की सूची पृथक से प्रकाशित की जा रही है।

## तपस्वी अभिनंदन समारोह

यों तो विशिष्ट तपस्वियों का बहुमान श्रीसंघ द्वारा किया ही जाता है लेकिन पूज्य साध्वीजी म.सा. की सद्प्रेरणा हुई कि इस वर्ष चल रहे श्री विजयानन्द स्वर्गारोहण शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत चातुर्मास प्रारम्भ से लेकर आयोजन सम्पन्न होने तक अट्ठाई एवं इससे ऊपर की तपस्या करने वाले समस्त जैन श्वेताम्बर समाज के तपस्वियों का सामूहिक अभिनन्दन किया जावे। तदनुसार दि. 1 अक्टूबर, 95 रविवार को प्रातः श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन में यह अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। विधान सभा अध्यक्ष मा. श्री शान्तिलाल चपलोत इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। चारों ही समुदायों के विराजित साधु-साध्वीवृन्द की पावन निश्रा में यह समारोह सम्पन्न हुआ एवं सभी गुरु भगवन्तों ने अपने विचारों से एवं आशीर्वादों से तपस्वियों को लाभान्वित किया। माल्यापर्ण के साथ प्रतीक स्वरूप स्मृति चिन्ह भेंट किये गये। इस सारे आयोजन एवं भेंट का द्रव्य लाभ स्व. श्री बाबूलालजी जैन पारख (श्री बाबूलाल तरसेमकुमार पारख) परिवार द्वारा लिया गया।

## बरखेड़ा तीर्थ का पैदल यात्री संघ

जिस प्रकार बरखेड़ा तीर्थ का जीर्णोद्धार कराने की भावना चल रही थी उसी प्रकार बरखेड़ा तीर्थ का पैदल यात्री संघ निकालने की भावना भी थी लेकिन यह भावना कार्य रूप में परिणित नहीं हो रही थी। इस वर्ष अन्य कार्यक्रमों के साथ-साथ इस आयोजन को सम्पन्न कराने की भावना भी बलवती हुई तथा पूज्य महत्तरा साध्वीजी म.सा. की उत्कंठ भावना एवं प्रेरणा फलीभूत हुई।

मार्ग शीर्ष कृष्णा-6 सोमवार सं. 2052 दि. 13-11-95 को तीर्थ यात्रार्थ यात्रियों ने पैदल प्रयाण प्रारम्भ किया एवं दि. 15-11-95 को भगवान ऋषभदेव स्वामी की सेवा में पहुंच कर अपने जीवन को सफल बनाया। यात्री संघ ने प्रथम दिन श्री शंखेश्वरम् पार्श्वनाथ जैन मंदिर मालवीय नगर में प्रभु भक्ति एवं रात्रि विश्राम किया। दिन में श्री पंच कल्याणक पूजा पढ़ाई गई। दूसरे दिन बीलवा में निवास के पश्चात् तीसरे दिन श्री बरखेड़ा तीर्थ में प्रवेश किया। श्री आदिश्वर पंच कल्याण पूजा सहित विजय मुहूर्त में संघ माल का आयोजन सम्पन्न हुआ। इस पैदल यात्री संघ के आयोजन का समस्त द्रव्य लाभ एवं आयोजन का दायित्व श्री संघ की आज्ञा से

श्री बुधसिह जी हीराचन्दजी वैद परिवार द्वारा लिया गया। सघ माल पर श्री सघ की ओर से वेद परिवार का बहुमान किया गया।

## बरखेड़ा तीर्थ का जीर्णोद्धार

जयपुर से 30 किमी दूर बरखेड़ा ग्राम मे श्री ऋषभदेव स्वामी का लगभग तीन सौ वर्ष प्राचीन जिनालय स्थित है। तीन सो वर्ष का तथाकथित प्राचीन जिनालय का जीर्णोद्धार तो समय समय पर होता रहा लेकिन प्राप्त प्रलेखो के अनुसार अंतिम जीर्णोद्धार वि स 1984 ईस्वी सन् 1927 मे होना पाया जाता है। काल के थपेडो से जिनालय क्षतिग्रस्त होता रहा और सघ द्वारा कई वर्षों से इस जिनालय को आमूलचूल परिवर्तित कर नए सिरे से ही तीर्थानुरूप शिखरबद्ध जिनालय बनाने की योजना विचाराधीन चल रही थी लेकिन कहते है कि जो कार्य जव ओर जिसके हाथ से होना होता है तव ही होता है।

पूज्य विराजित साध्वीजी म सा को चातुर्मास काल में जब इस तीर्थ के बारे में जानकारी मिली ओर सघ के आगेवानो से इस बारे मे विचार विमर्श हुआ तो उन्होने इस कार्य का श्रीगणेश कराने का दागित्व अपने ऊपर लिया। यह श्रीसघ का प्रवल पुण्योदय ही हे कि ऐसे विशाल एव विस्तृत जिनालय के निर्माण कार्य का शुभारम्भ करने का सोभाग्य प्राप्त हो गया।

आचार्य देवेश गच्छाधिपति श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी म सा के शुभाशीर्वाद, आचार्य श्रीमद् विजय नित्यानन्दसूरीश्वरजी म सा0 के मार्ग निर्देशानुसार एव पूज्य साध्वी श्री सुमगलाश्रीजी म सा की पावन निश्रा मे मिगसर सुदी अष्टमी वि स 2052 दि 29 नवम्वर, 1995 को भूमि पूजन एव दशमी दि 1 दिसम्वर, 95 को शिला स्थापनाओ के साथ ही तीर्थ जीर्णोद्धार का कार्य प्रारम्भ हो गया जो निरन्तर चल रहा है। बिरामी निवासी श्री वावूलाल हेमराज जी सोमपुरा की देख रेख मे जिनालय का निर्माण हो रहा है। भूमि पूजनकर्ता एव शीला स्थापना करने वालों की शुभ नामावली निम्न प्रकार है —

भूमि पूजनकर्त्ता- श्री उमरावमलजी, हीराचन्दजी, मिलापचन्दजी पालेचा। शिलाओं के स्थापन कर्त्ता—(1) श्री पूनमचन्द भाई नगीनदास जितेश कुमार शाह, (2) श्रीमती कमला बहिन भोगीलाल शाह, (3) श्री शांतिभाई वच्चूभाई शाह, (4) श्रीमती प्रभा वहिन-नवीन भाई शाह, (5) श्रीमती राजकुमारी- ज्ञानचद तिलकचन्द अरुण कुमार पालावत, (6) श्री मगलचन्द ग्रुप, (7) श्री आम्रा नन्द लक्ष्मीचन्द सुनीत कुमार भसाली, (8) श्री घीसूलाल माणक चन्द मेहता एव (9) श्री वावूलाल तरसेम कुमार जैन।

दि 1-12-95 को सभी लाभार्थियो का श्रीसघ की ओर से वहुमान कर स्मृति चिन्ह भेट किए गए।

## आसोजी ओली एवं चातुर्मास परिवर्तन

आपकी ही पावन निश्रा मे आसोजी ओली कराने का लाभ अपनी मातुश्री तीजकवरी दोसी की स्मृति में श्री चन्द्रसिहजी पारसचन्दजी महेन्द्रकुमारजी दोसी परिवार द्वारा लिया गया।

नूतन वर्षाभिनन्दन, चोमासी चौदस एव कार्तिक पूर्णिमा की आराधना के पश्चात् मगलवार, दि 7-11-95 को चातुर्मास परिवर्तन का लाभ श्री पूनमचन्दभाई नगीनदास जीतेश कुमार शाह परिवार द्वारा लिया। पैदल यात्रीसघ के साथ वरखेड़ा पहुचने के पश्चात् शीला स्थापनाओ के कार्यक्रम तक आप वहीं पर विराजी। बरखेडा से आने के तत्काल पश्चात् आपने दिल्ली की ओर विहार किया।

## वर्तमान चातुर्मास

एक चातुर्मास पूर्ण होने के साथ ही साथ अगले चातुर्मास के लिए प्रयास प्रारम्भ हो जाते है। पूज्य

साध्वीजी म.सा. की पावन निश्रा में संघ में जिस प्रकार की जाहोजलाली आई तथा वर्षो से लम्बित कार्यों ने मूर्त रूप लिया वह पूर्ण रूपेण गतिमान हो सकें इस हेतु महासमिति की यही भावना बनी कि यदि अगला चातुर्मास भी इन्हीं साध्वीजी म.सा. का हो जाय तो आपकी उपस्थिति, प्रेरणा एवं निश्रा में बरखेड़ा तीर्थ के जीर्णोद्धार का कार्य अधिक गतिमान हो सकेगा।

यद्यपि साध्वीजी म.सा. इसे उचित नहीं मानती थी कि एक चातुर्मास के पश्चात् तत्काल ही दूसरा चातुर्मास भी उसी स्थान पर किया जावे लेकिन संघ के आगेवानों ने गच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरीजी म.सा. की सेवा में उपस्थित होकर विनती करना उचित एवं प्रासंगिक समझा। 16 दिसम्बर, 1995 को संक्राति महोत्सव के अवसर पर बम्बई में गच्छाधिपति आचार्यदेव की सेवा में उपस्थित होकर विनती की। जैसे कि पूर्व से ही इनकी जयपुर श्रीसंघ पर अत्यन्त कृपा एवं आशीर्वाद रहा है, उन्होंने जयपुर श्रीसंघ की विनती को स्वीकार कर पूज्य साध्वीजी म.सा. को यह चातुर्मास भी जयपुर में ही करने की आज्ञा प्रदान कर दी। आपकी इस असीम कृपा के लिए जयपुर श्रीसंघ आपका अत्यन्त आभारी एवं ऋणी है।

## महत्तरा - पदवी प्रदान समारोह

इस बीच आप दिल्ली, पंजाव, यू.पी., हरियाणा आदि विविध क्षेत्रों में विचरण करती रहीं। आपकी जयपुर में प्रस्थापित की गई महान् उपलब्धियों एवं जिन शासन सेवा में स्थापित किए गए अन्यानन्य कीर्तिमानों को दृष्टिगति रखते हुए गच्छाधिपति आचार्यदेवेश ने आपको "महत्तरा" पदवी से विभूषित करने की आज्ञा प्रदान की।

वैशाख सुदी छठ सं. 2053 को हस्तनापुरजी तीर्थ स्थल पर यह समारोह आचार्य श्रीमद् विजय जनकचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. एवं आचार्यश्री नित्यानन्दसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में सम्पन्न हुआ। जयपुर श्री संघ की ओर से एक वस लेकर इस अवसर पर उपस्थित हुए तथा पदवी प्रदान पश्चात् प्रथम काम्बली बोहराने का लाभ भी जयपुर श्रीसंघ द्वारा चढ़ावा लेकर लिया गया।

इसी अवसर पर चातुर्मासिक जय भी बुलाई गई।

## अचरोल में संक्राति महोत्सव

सर्वोदयी एवं सर्वधर्म समन्वयी आचार्य श्रीमद् विजय जनकचन्द्रसूरीश्वरजी म. एवं नूतन आचार्य श्रीमद् विजय घरमधुरन्धरसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा-6 एवं पूज्य साध्वीजी महाराज आदि ठाणा-9 से हस्तनापुर से उग्र विहार कर जयपुर पधार रहे थे। इसी बीच दि. 14 जून, 96 को संक्राति पर्व का दिवस आ गया। प्रयास यही था कि यह महोत्सव जयपुर में ही मनाया जावे लेकिन प्राकृतिक प्रतिकूलताओं के कारण उग्र विहार के पश्चात् भी जयपुर पहुंचना सम्भव नहीं हो सका। अतः संक्रांति महोत्सव का आयोजन जयपुर से 30 कि.मी. दूर अचरोल ग्राम में रखा गया।

प्रातः धर्म सभा के पश्चात् साधर्मी वात्सल्य का आयोजन भी सम्पन्न हुआ जिसका लाभ श्रीमान् ज्ञानचन्दजी सा. कर्णावट परिवार द्वारा लिया गया। दिल्ली, अजमेर, किशनगढ़, जयपुर आदि विविध स्थानों से गुरु भक्तगण इस अवसर पर पधारे।

## जयपुर में शुभागमन

उपरोक्त सभी गुरु भगवन्तों एवं साध्वीजी म.सा. का जयपुर आगमन पर रविवार, दि. 16 जून, 96 को हवा महल पर समय्या किया गया तथा भव्य जुलूस के साथ आप सभी का श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन में शुभागमन हुआ, जहां पर धर्म सभा हुई। आचार्य भगवन्तों से यह चातुर्मास जयपुर में ही करने की साग्रह विनती की गई लेकिन इस वर्ष ऐसा करना सम्भव नहीं मान कर आपने बेड़ा की ओर विहार किया।

## नए भवन में प्रवेश

जयपुर में शुभागमन के पश्चात् ही आपने अपने छोड़े अधूरे कामों का लेखा जोखा लेना प्रारम्भ किया।

जयपुर तपागच्छ सघ के पास श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन एव आगरा वालों के मंदिर में स्थित उपाश्रय के अतिरिक्त और कोई भवन नहीं होने से सघ की चल रही विविध गतिविधियो के सचालन में कठिनाई आ रही थी और सघ के प्रत्येक सदस्य की यह उत्कण्ठ इच्छा थी कि अब सघ का एक भवन ओर खरीदा जावे।

पूज्य महत्तरा साध्वीजी म सा , सा श्री प्रफुल्लप्रभा श्रीजी म एव सा पूर्णप्रज्ञा श्रीजी म की अत्यन्त कृपा, सतत् प्रेरणा एव सदुपदेश का फल था कि विगत चातुर्मास के समय ही घीवालों के रास्ते में ही स्थित मकान स 1816-18 को खरीदने का इकरार श्री अनिलकुमारजी डागा से हो गया था। आपके जयपुर पहुचने तक ही इस भवन की रजिस्ट्रिया होकर कब्जा सघ के पास आ गया था।

आपके जयपुर आगमन पर इस नए खरीदे गए भवन में प्रवेश का आयोजन दि 7 जुलाई, 96 को रखा गया। इस अवसर पर स्नात्र पूजा एव प्रवेश का आयोजन रखा गया। भगवान् की प्रतिमाजी को लेकर एव कुम्भ कलश लेकर भवन में प्रथम प्रवेश का लाभ चढ़ावा लेकर श्री मगलचन्द ग्रुप द्वारा लिया गया। इस अवसर की साधर्मीभक्ति का लाभ एक सद्गृहस्थ द्वारा लिया गया तथा पूजा प्रभावना का लाभ श्री मोतीलाल भडकतिया परिवार द्वारा लिया गया।

## बरखेड़ा में नव-निर्मित आवास गृह में प्रवेश

वरखेड़ा तीर्थ जीर्णोद्धार के साथ ही महासमिति द्वारा यह आवश्यक समझा गया कि आने वाले यात्रियों के लिए आवास की समुचित व्यवस्था सर्वप्रथम उपलब्ध कराई जावे।

पूर्व में श्री कपितभाई शाह परिवार उपलब्ध कराई हुई जमीन पर नए आवास गृह बनाने का कार्यारम्भ भी जीर्णोद्धार कार्य के साथ ही प्रारम्भ किया गया तथा सात माह के अल्प समय में ही एक वड़ा हाल सलग्न कमरे सहित, दो कमरे तथा लैट्रिन बाथरूम बनाने का कार्य पूर्ण करा लिया गया।

हाल का निर्माण श्री पतनमल जी नरेन्द्र कुमार जी लूनावत, एक कमरा श्री कपिल भाई शाह एव एक कमरा श्री नेमीचन्द जी खजाची बीकानेर वालों द्वारा प्रदत्त नकरा की राशि के योगदान से कराया गया है।

दो दिन में ही उग्र विहार का कर आप बरखेड़ा तीर्थ पर पधारी तथा नवनिर्मित आवास गृह में प्रवेश का आयोजन भी दि 10 जुलाई, 96 को सानन्द सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्नात्र पूजा पढ़ाई गई। भगवान को लेकर प्रवेश करने का लाभ श्री मगलचन्द ग्रुप द्वारा एव कुम्भ कलश लेकर प्रवेश का लाभ श्रीमती ज्ञाना बाई जवाहरलालजी चौरडिया परिवार द्वारा लिया गया। इस अवसर के साधर्मी वात्सल्य का लाभ श्रीमती कचन बाई वीर बहादुर सिह जी भण्डारी परिवार द्वारा लिया गया। अव तीर्थ पर आने वाले यात्रियो के रात्रि निवास हेतु सुविधाजनक स्थान उपलब्ध हो गया है जिससे यात्रियों के आवागमन में भी वृद्धि हो रही है।

## संक्रांति महोत्सव

मगलवार, दि 16 जुलाई, 96 को आदर्शनगर में स्थित अक्षयराज में सक्रांति महोत्सव एव साधर्मी भक्ति का लाभ श्री बाबूलाल तरसेमकुमार पारख परिवार द्वारा लिया गया।

## चातुर्मासिक नगर प्रवेश

द्वितीय आषाढ शुक्ला द्वितीया बुधवार स 2053 दि 17 जुलाई, 96 को आपके चातुर्मासिक नगर प्रवेश का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। चेम्बर भवन से शोभा यात्रा प्रारम्भ हुई जो बापू बाजार, जौहरी बाजार होते हुए श्री आत्मानन्द सभा भवन पहुची। यहा पहुचने पर धर्मसभा का आयोजन हुआ जिसमें श्रीसघ की ओर से आपका अभिनन्दन किया गया तथा काम्वली वोहराई गई।

इसी दिन सामूहिक आयम्बिल की आराधना कराने

का लाभ श्रीमती धनलक्ष्मी बहिन शाह परिवार की ओर से तथा दिन में श्री पार्श्वनाथ पंच कल्याणक पूजा पढ़ाने का लाभ श्री कल्याणमलजी किस्तूरमलजी शाह परिवार द्वारा लिया गया।

## विविध तपस्याएं

आपके शुभागमन के साथ ही त्याग-तपस्या, आराधना आदि की झड़ी लगी हुई है। "धर्म बिन्दू" ग्रंथ बोहराने का लाभ श्री हीराभाई चौधरी परिवार द्वारा तथा "अमर कुमार सुरसुन्दरी" चरित्र बोहराने का लाभ श्री कपिलभाई शाह परिवार द्वारा लिया गया। पांचों ज्ञान पूजाओं का लाभ क्रमशः श्री पूनमचन्द भाई नगीनदास (2) मंगल चन्द ग्रुप (3) श्री भंवरलालजी मूथा (4) श्री हीराचन्द जी कोठारी एवं (5) श्री पुष्पमलजी लोढा परिवार द्वारा लिया गया।

श्रावण बदी 5 शनिवार को सूत्र बोरहाने के साथ ही साध्वी श्री पीयूष पूर्णाश्रीजी म.सा. के ओजस्वी, सारगर्भित एवं तत्वपूर्ण प्रवचन हो रहे हैं। श्रोताओं की उपस्थित भी संतोषजनक है तथा प्रतिदिन व्याख्यानोपरान्त संघ पूजाएं हो रही है।

चार माह तक क्रमिक अट्ठम तप की आराधना करने वालों में अपने नाम अंकित कराने की इतनी तीव्र उत्कण्ठा थी कि चातुर्मास प्रारम्भ होने से पूर्व ही आराधकों ने अपने नाम चार माह के लिए अंकित करा लिए जिसके अनुसार क्रमिक अट्ठम की तपस्यायें हो रही हैं।

अट्ठाई एवं इससे ऊपर की तपस्या करने वाले समस्त भाई-बहिनों का संघ की ओर से बहुमान किया जा रहा है।

श्रावण बदी 6 रविवार, दि. 4 अगस्त, 96 को सामूहिक दीपक एकासणा कराने का लाभ श्री मंगल चन्द ग्रुप द्वारा लिया गया। इसी दिन से शत्रुंजय मोदक तप की आराधना भी प्रारम्भ हुई। प्रथम दिवस के एकसणा कराने का लाभ श्री मंगलचन्द ग्रुप द्वारा, द्वितीय दिवस के एकासणा का लाभ श्री नरेन्द्रकुमारजी भण्डारी द्वारा, तृतीय दिवस के नीवी की आराधना का लाभ श्री मूलचन्द जी रतनचन्द जी कोचर बीकानेर वालों ने, चौथे दिन आयंबिल की आराधना का लाभ एक सद्गृहस्थ द्वारा एवं पांचवें दिन उपवास की आराधना हुई। श्री महान् शत्रुंजय मोदक तप के आराधकों को पारणा कराने का लाभ श्री कल्याणमलजी किस्तूरमलजी शाह परिवार द्वारा लिया गया।

दि. 11 अगस्त, 96 को जिन कल्याणक तप का एकासणा कराने का लाभ श्री राजीवकुमार संजीवकुमार साण्ड परिवार द्वारा लिया गया तथा दि. 18 अगस्त, 96 को खीर के एकासणा कराने का लाभ श्री हुकमचंद जी कोचर परिवार द्वारा लिया गया।

दि. 18 अगस्त, 96 से पचरंगी तप की आराधना प्रारम्भ हो गई तथा दि. 20 से 22 अगस्त, 96 तक के शंखेश्वर पार्श्वनाथ के अट्ठम तप की तपस्या भी सम्पन्न हुई है। पंचरंगी तप करने वालों का बहुमान, स्मृति चिन्ह भेंट कर, श्री दशरथ चन्दजी लखपतचन्दजी भण्डारी जोधपुर वालों द्वारा किया गया तथा पारणा कराने का लाभ श्री महावीरचंद जी मेहता जालोर वालों ने लिया।

दि. 8-9-96 को सिद्धि तप के एकासणा कराने का लाभ श्रीमती मोहिनी देवी सोनराज जी पोरवाल द्वारा लिया गया।

आचार्य भगवन्त के छत्तीस गुणानुरूप छत्तीस सौ सामायिक की आराधना भी मात्र दस दिन में पूर्ण हुई है।

## नित्यानन्द नगर एवं मालवीयनगर में भूमि भूजन

जयपुर अव महानगर का रूप धारण कर रहा है तथा विभिन्न कालोनियां विकसित हो रही हैं। यहां पर नूतन जिनालयों के निर्माण कार्य भी प्रारम्भ हो रहे हैं।

आपकी ही निश्रा में दि. 1 अगस्त, 96 को नित्यानन्द नगर में निर्मित होने वाले जिनालय के भूमि

ज़न एव दि 4 अगस्त, 96 को शीला स्थापनाओ का व्य आयोजन सम्पन्न हुआ।

इसी प्रकार मालवीया नगर श्री श्वेताम्बर सघ द्वारा भी हाल ही मे खरीदी हुई भूमि पर आराधना भवन जिनालय के साथ बनाने का शुभारम्भ भी आपकी निश्रा मे सम्पन्न हुआ। दि 24 अगस्त, 96 को भूमि पूजन एव शीला स्थापनाओ का भव्य आयोजन आपकी पावन निश्रा में सानन्द सम्पन्न हुआ हे।

## स्वरोजगार प्रशिक्षण शिविर

गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी म सा की सद्प्रेरणा से स्थापित साधर्मी सेवा कोष के अन्तर्गत प्रति वर्ष महिला स्वरोजगार प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा हे। पूर्ववत इस वर्ष भी ग्रीष्मावकाश मे दि 19 मई, 96 से डेढ माह के शिविर का आयोजन श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन मे किया गया जिसमें विविध विषयो मे महिलाओं एव बालिकाओं को प्रशिक्षण दिया गया। शिविर का समापन समारोह दि 30 जून, 96 को पूज्य महत्तरा साध्वी जी म सा की निश्रा मे सम्पन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि श्री मोहनलालजी गुप्ता, महापोर नगर निगम जयपुर थे तथा समारोह की अध्यक्षता श्री ज्ञानचन्दजी बम्ब, पार्षद नगर निगम जयपुर ने की।

शिविर सम्बन्धी विस्तृत विवरण पृथक् से प्रकाशित किया जा रहा है।

## मास क्षमण की तपस्या

यह जयपुर श्रीसघ के लिए गौरव का विषय है कि आपकी उपस्थिति एव निश्रा में मास क्षमण की तपस्या भी दो साल से हो रही है।

पिछले वर्ष श्रीमती उच्छवकवर बाई गोलिया द्वारा मास क्षमण की तपस्या की गई थी और इस वर्ष वरखेड़ा तीर्थ के स्थानीय व्यवस्थापक श्रीमान् ज्ञानचन्दजी सा दुकलिया की धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमलता जी ने मास क्षमण की तपस्या की है। श्रीसघ की ओर से आपका बहुमान किया गया।

## साध्वी श्री अमृतप्रभाश्रीजी म. की तपस्या

विराजित साध्वी श्री अमृतप्रभाश्रीजी म सा ने भी अधिक आयु के उपरान्त भी नौ उपवास की तपस्या की है। आपको पारणा कराने का लाभ श्री दीक्षित शाह (आयु - 12) के 11 उपवास के पारणे के प्रसग पर श्री हेमेन्द्रभई शाह परिवार द्वारा लिया गया।

## श्री श्वे. जैन मदिर, सोडाला की प्रतिष्ठा

भगवान श्री आदीनाथ स्वामी के नव-निर्मित जिनालय, सोड़ाला की प्रतिष्ठा कराने के लिए आचार्य श्रीमद् विजय जीतेन्द्र सूरीश्वरजी म सा आदि ठाणा-3 जयपुर पधारे। आपकी पावन निश्रा में प्रतिष्ठा का कार्यक्रम दि 30 5 96 को सानन्द सम्पन्न हुआ। प्रतिष्ठा के पश्चात् आप कुछ दिनों तक यहा विराजे तथा अपने प्रवचनों से जयपुर श्रीसघ को लाभान्वित किया।

## साधु-साध्वीजी म.सा. का शुभागमन

विगत चातुर्मास समाप्ति के पश्चात् निम्नांकित साधु साध्वीजी म सा तथा विविध सघो का जयपुर में शुभागमन हुआ जिनके विहार, वैय्यावच्छ एव साधर्मी भक्ति का सौभाग्य जयपुर श्री सघ को प्राप्त हुआ –

1. साध्वी श्री अक्षयरत्नाश्रीजी म एव साध्वी श्री हितरत्ना श्रीजी म ने जयपुर में चातुर्मास पूर्ण कर दिल्ली की ओर विहार किया।
2. आचार्य श्री जनकचन्द्रसूरीश्वरजी म सा आदि एवं आचार्यश्री धर्मधुरन्धरसूरीश्वरजी म सा - आदि ठाणा-6
3. आचार्यश्री जीतेन्द्रसूरीश्वरजी म सा आदि ठाणा-3
4. पन्यास श्री पद्मविजयजी म सा - 2
5. गणीवर्य श्री राजयशविजयजी म - 2

6. मुनि श्री यतीन्द्रविजयजी म.
7. साध्वी श्री रत्नशीलाश्रीजी म. -3
8. मुनि श्री राजेन्द्रविजयजी म.-1
9. साध्वी श्री प्रसन्नश्रीजी - 5
10. साध्वी अमृतप्रभाश्रीजी - 3
11. साध्वी सौम्यरेखा श्रीजी- .5

विविध स्थानों से पधारे हुए संघों एवं साधर्मी भाईयों की भक्ति का लाभ तो संघ को प्राप्त हुआ ही, खरतरगच्छ संघ द्वारा आयोजित एक दिवसीय यात्रा दि. 19-9-95 एवं पल्लीवाल पैदल यात्री संघ द्वारा आयोजित एक दिवसीय यात्रा दि. 3-9-95 की भक्ति। साधर्मी वात्सल्य का लाभ भी संघ को प्राप्त हुआ।

## ग्राम बहतेड से प्रतिमाओं की प्राप्ति

इस श्रीसंघ को श्री जैन श्वे. मूर्तीपूजक संघ, ग्राम बहतेड, तहसील बोंली जि. सवाई माधोपुर से 16 धातु प्रतिमायें, एक पाषाण प्रतिमा एवं चार यंत्र प्राप्त हुए हैं।

## स्थायी गतिविधियां

उपरोक्त कतिपय विशेष उल्लेखनीय आयोजनों का विवरण प्रस्तुत करने के पश्चात् अब संघ की स्थायी गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत कर रहा हूं :–

## श्री सुमतिनाथ स्वामी जिनालय

श्री संघ के इस 269 वर्षीय जिनालय का कार्य वर्ष भर सुचारू रूप से सम्पन्न होता रहा है। अष्ठ प्रकारी पूजा की सामग्री वर्ष भर तक निश्चित मात्रा में उपलब्ध कराने की जो परम्परा पांच वर्ष पूर्व प्रारम्भ की गई थी वह यथावत् जारी है। सामग्री भेंटकर्त्ताओं का विवरण पृथक् से प्रकाशित किया जा रहा है। सामूहिक स्नात्र पूजा भी प्रतिदिन भक्तिकर्त्ताओं के सहयोग से हो रही है।

जिनालय का वार्षिकोत्सव पूर्ववत् ज्येष्ठ सुदी 10 सम्वत् 2052 दि. 28.5.96 को तो मनाया ही गया था, इस वर्ष के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आचार्य श्रीमद् विजय जीतेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की उपस्थिति एवं निश्रा ने महोत्सव की शोभा और भी बढ़ा दी। ध्वजा चढ़ाने का लाभ श्री मंगलचन्द ग्रुप द्वारा लिया गया।

इस जिनालय की वर्ष 1995-96 में रुपये 9,43,629.60 की आय एवं व्यय मात्र 92,139.20 हुआ है। शेष बची हुई राशि का उपयोग बरखेड़ा तीर्थ जीर्णोद्धार में किया गया है।

श्री के.पी. संघवी, रिलीजियस ट्रस्ट, सूरत, श्री सुरेश भाई ज्वेलर्स, श्री अनिलभाई, पाटलिया ज्वेलर्स, राजकोट एवं सहयोगियों के सौजन्य से न केवल इस जिनालय में विराजित समस्त प्रतिमाओं के वरन् जयपुर शहर में स्थित समस्त जिनालयों की प्रतिमाओं के चक्षु (242 जोडियां) लगाए गए हैं जिससे प्रतिमाओं में और अधिक भव्यता आ गई है।

आवश्यक टूट-फूट ठीक कराने एवं रंग रोगन का कार्य भी कराया गया है।

## श्री सीमन्धर स्वामी मंदिर जनता कॉलोनी

इस जिनालय की व्यवस्था भी वर्ष भर सुचारू रूप से सम्पन्न होती रही है। सुरक्षा की समुचित व्यवस्था के साथ-साथ पृथक् से एक लैट्रिन बाथरूम, एक कमरा बनायां गया है तथा रंग रोगन का कार्य पूरा कराया गया है। निर्माण कार्य के अन्तर्गत 1,02,055 रुपये व्यय हुए है। बोरिंग खुदवा कर पानी की उपलब्धता की स्थायी व्यवस्था कर दी गई है।

इस जिनालय का वार्षिकोत्सव भी परम्परानुसार मिगसर बदी 12 सं. 2052 दि. 19.12.95 को पूज्य साध्वी श्री सुमंगलश्रीजी म.सा. की निश्रा में धूमधाम से मनाया गया।

इस जिनालय में रु. 16,265.55 की आय एवं रु. 30,377.25 का व्यय हुआ है।

## श्री ऋषभदेव स्वामी का तीर्थ बरखेड़ा

जैसा कि पिछले अक में उल्लेख किया गया था कि इस तीर्थ के जीर्णोद्धार का प्रस्ताव महासमिति के समक्ष वर्षो से विचाराधीन चल रहा था। कई सोमपुराओं से नक्शे बनाए गए तथा गुरु भगवन्तों से भी मार्गदर्शन प्राप्त किए गए। आखिर वहा का पुण्योदय हुआ एव विराजित साध्वीजी म सा की कर्मठता, प्रेरणा एव सदुपदेश से इस योजना ने मूर्त रूप ले ही लिया। दि 4 10 95 को प्रतिमाजी के उत्थापन का कार्य सानन्द सम्पन्न हो गया। मूल जिनालय के स्थान पर भूतल में ठोस प्लेटफार्म बना कर मार्वल का शिखरवद्ध जिनालय बनाने की योजना के कारण पूर्व निर्मित भवन को पूर्ण रूपेण हटा दिया गया तथा सलग्न धर्मशाला के एक कमरे में वेदिया बना कर मूलनायक सहित अन्य सभी प्रतिमाजी को यहा पर विराजित किया गया हे, जहा पर प्रतिदिन सेवा पूजा का कार्य हो रहा है। जिनालय के बाहर के परिसर में स्थित लगभग 250 गज जमीन को खरीद कर परिसर मे मिला लिया गया हे तथा जिनालय के पूर्वी कौने की अन्य के हिस्से की जमीन को खरीद कर निर्मित होने वाले जिनालय को भी चौकोर बना लिया गया है।

यात्रियों के आवासन हेतु हाल, कमरे एव लैट्रिन बाथरूम बना दिए गए हैं तथा बीच के पथ को भी चौड़ा कर लिया गया है।

जिनालय निर्माण की योजना बहुत विशाल एव महत्वाकाक्षी है जो प्रारम्भिक अनुमान के अनुसार डेढ करोड़ की है। इमी के अनुरूप भक्तिकर्त्ताओं का उत्साह भी अनुकरणीय है। जिनालय के अधिक व्यय साध्य परिसरों यथा मण्डावर, शिखर, रगमण्डप, प्रवेश द्वार, गम्भारा आदि के लिए निश्चित नकरा तय कर सघों, पेढियों, ट्रस्टों एव दानदाताओं से निवेदन किया गया है। जीर्णोद्धार में योगदान महान् पुण्य का कार्य है जिसमें कोई भी व्यक्ति वंचित नहीं रहे इसलिए एक ईंट का नकरा 3111/- रुपये निर्धारित किया गया है, जिनके नाम शिलालेख पर अंकित किए जायेंगे। लगभग ढाई सौ ईंटों का योगदान अभी तक प्राप्त हुआ है। कार्य की विशालता को दृष्टिगत रखते हुए अधिक से अधिक योगदान प्राप्त होना अपेक्षित है जिसके लिए दानदाताओं से साग्रह विनती है।

दि 29 11 95 को भूमि पूजन एव 1 12 95 को शीला स्थापनाओं के भव्य आयोजन तो सम्पन्न हुए ही है, साथ ही परम्परागत रूप से जिनालय का वार्षिकोत्सव भी फाल्गुन सुदी 13 रविवार, दि 3.3 96 को धूमधाम से मनाया गया। श्री आदीनाथ पच कल्याणक पूजा पढ़ाने के साथ साथ ही साधर्मी वात्सल्य का भव्य आयोजन सानन्द सम्पन्न हुआ। पिछले वित्तीय वर्ष की समाप्ति तक जीर्णोद्धार खाते में 7,23,180/- रु की आय तथा 12,96,898 45 रु खर्च हुआ है।

श्री सरदार मलजी भागचदजी छाजेड़, (2) श्रीमती अरूणा वहन के एल जैन, (3) श्री मोतीलाल जी सुशील कुमारजी चौरडिया एव (4) श्री राजीव कुमार सजीव कुमार साण्ड के सौजन्य से यहा के लिए वर्तनों के सेट प्राप्त हुए हें।

गोलख से सेवा पूजा के अन्तर्गत 10,491 05 की आय तथा 10,449 00 रु का व्यय हुआ है। अखण्ड ज्योत पेटे 3,175 00 रु व्यय हुए है। जीर्णोद्धार कार्य की देखरेख हेतु एक जीर्णोद्धार समिति का गठन भी किया गया है।

## श्री शान्तिनाथ स्वामी जिनालय चन्दलाई

इस जिनालय की व्यवस्था भी वर्ष भर सुचारू रूप से सम्पन्न होती रही है। मिगसर बदी 5, स 2052 को परम्परागत रूप से वार्षिकोत्सव मनाया गया। इस जिनालय से 5154.50 की आय तथा 5,764 00 रु व्यय हुए है।

## श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ उपाश्रय

श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन एवं श्री ऋषभदेव स्वामी जिनालय, मारूजी का चौक के परिसर में स्थित तपागच्छ उपाश्रय की व्यवस्था सुचारू रूप से सम्पन्न होती रही है। आवश्यक मरम्मत कार्य कराए गए हैं। श्री आत्मानन्द सभा भवन में स्थित पुराना बोरिंग खराब होने पर नया बोरिंग खुदवाया गया है।

## श्री वर्धमान आयम्बिलशाला

श्री वर्धमान आयम्बिलशाला की व्यवस्था भी वर्ष भर सुचारू रूप से सम्पन्न होती रही हैं। इस सीगे में इस वर्ष 65,067.00 रु. की आय तथा 46,375.05 का व्यय हुआ है। आयम्बिल करने वालों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो तभी इसकी सार्थकता है।

बापू बाजार की दुकान सं. 53 जो इस खाते की थी, नए क्रय किए गए भवन के लिए अर्थ-उपलब्धता स्वरूप वर्तमान में काबिज किरायेदार श्री श्रीनाथ हैंडलूम हाऊस को बेच दी गई है।

आसोजी ओली कराने का लाभ श्री चन्द्रसिंहजी पारसचन्दजी दोसी परिवार द्वारा लिया गया तथा चैत्र मास की ओली कराने का लाभ श्री एक सद् गृहस्थ द्वारा लिया गया।

भवन में सैक्शन विंडो, चैनल गेट लगाकर और सुरक्षित किया गया है। पानी की दो नई टंकियां बनाई गई हैं तथा वाशवेसिन भी लगा दिए गए हैं।

## श्री जैन श्वेताम्बर भोजनशाला

आचार्य श्रीमद् विजय कलापूर्णसूरीश्वरजी म.सा. की सद्प्रेरणा से स्थापित इस भोजनशाला की व्यवस्था भी सुचारू रूप से सम्पन्न होती रही है। लगभग बारह हजार व्यक्तियों ने इस का उपयोग किया है। कर्मचारियों की वृद्धि, उनकी वेतन वृद्धि एवं खाद्य सामग्री में वेहताशा वृद्धि के पश्चात् भी यह सीगा टूट से मुक्त रहा है। कुल 1,36,118.00 रु. की आय तथा 1,35,745.70 रु. का व्यय हुआ है। बाहर से पधारने वाले साधर्मी भाई बहिनों, कर्मचारियों के साथ साथ स्थानीय लोगों द्वारा भी इसका उपयोग किया जा रहा है।

## श्री समुद्र इन्द्रदिन्न साधर्मी सेवा कोष

गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वरजी म.सा. की सद्प्रेरणा से स्थापित इस कोष में भेंट एवं ब्याज से 62,435.00 रु. की आय तथा 57,052.50 रु. का व्यय हुआ है। मासिक सहायता, शिक्षा चिकित्सा एवं अन्य सहायता के साथ-साथ स्वरोजगार प्रशिक्षण शिविर का आयोजन भी इसी सीगे के अन्तर्गत किया जाता है।

शिविर सम्बन्धी विवरण पृथक् से प्रकाशित किया जा रहा है। शिविर के आयोजन एवं संचालन में सुश्री सरोज कोचर की सेवाएं अनूठी एवं उल्लेखनीय है जिनके अथक् परिश्रम एवं प्रयास से यह आयोजन सफलीभूत होता है।

## श्री साधारण खाता

यह तो सर्व विदित ही है कि यह सीगा ही एक मात्र ऐसा है जिस पर सबसे अधिक द्रव्य भार रहता है। यह जयपुर श्रीसंघ की उल्लेखनीय उपलब्धि ही है कि निरन्तर कई वर्षों से यह सीगा टूट से मुक्त रहता आया है। इस वर्ष भी इस सीगे में 3,32,347.10 की आय तथा 2,67,503.12 रु. का व्यय हुआ है। साधु-साध्वियों के वैय्यावच्छ पर 37,498.70 रु. व्यय हुआ है।

वर्ष भर में आयोजित होने वाले चार वार्षिकोत्सवों के आय-व्यय का समायोजन एक साथ ही किया जाता है। इसके अन्तर्गत कुल रु. 78,380.00 रु. की आय तथा रु. 77,517.00 का व्यय हुआ है।

## श्री ज्ञान खाता

इस सीगे के अन्तर्गत इस वर्ष 1,15,651 50 की आय तथा रु 16,591 00 का व्यय हुआ है।

साध्वी श्री सोम्य प्रभाश्रीजी की पढ़ाई की व्यवस्था की गई। पूज्य साध्वीजी म के पूर्व प्रशिक्षक प रामकिशोरजी पाड्या एव श्री ललितकुमारजी के जयपुर आगमन पर उनका वहुमान कर राशि भेंट की गई।

## पुस्तक प्रकाशन

यह निरन्तर माग थी कि मुमुक्षुओं के लिए ऐसी पुस्तक प्रकाशित की जावे जिसमें देवदर्शन, पूजा, स्नात्र पूजा, सामायिकविधि, गुरुवन्दन आदि की प्रतिदिन काम आने वाली विधिया हो। विगत चातुर्मास मे साध्वी श्री प्रफुल्लप्रभाश्रीजी म सा ने इसका सकलन एव सम्पादन किया था तथा मुद्रणाधीन थी। "आराधना एव साधना" नामक यह पुस्तक श्री हीराभाई एव श्रीमती जीवनकुमारीजी चौधरी के सौजन्य से दो हजार आवृतियो में प्रकाशित कर दी गई है।

विविध पूजा सग्रह की एक पुस्तक श्रीमान् सरदारमलजी सा लूनावत के सौजन्य से प्रकाशित हुई थी। अव इसकी अनुपलब्धता के कारण इस पुस्तक की भी वहुत माग एव आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए इस पुस्तक तथा वीशस्थानक तप आराधना की पुस्तक का प्रकाशन भी कराया जा रहा है।

## पुस्तकालय एवं वाचनालय

पुस्तकालय एव वाचनालय की व्यवस्था वर्ष भर सुचारू रूप से सम्पन्न होती रही है। नई पुस्तके खरीदी गई है।

धार्मिक पाठशाला मे छात्र-छात्राओं की उपस्थिति नगण्य रह जाने से यह व्यवस्था फिलहाल स्थगित कर दी गई है।

## उद्योगशाला एवं सिलाई शाला

यह व्यवस्था भी वर्ष भर सुचारू रूप से सचालित होती रही है। जैन महिलाये इसका अधिक से अधिक उपयोग करें तो इसकी और भी अधिक सार्थकता रहेगी।

## माणिभद्र के 37वे अंक का प्रकाशन

सघ की मुख्य स्मारिका माणिभद्र के 37वें अक का प्रकाशन भी नवीन साज सज्जा के साथ समय पर हुआ तथा भगवान महावीर जन्मोत्सव के दिन इसके 37वें अक का विमोचन विधायिका श्रीमती तारा भण्डारी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। मुद्रण एव कागज की दरों में अत्यधिक वृद्धि के कारण विज्ञापन के रूप में प्राप्त होने वाली आर्थिक सहायता की दरों में इस वर्ष आंशिक वृद्धि की गई है।

## श्री सुमति जिन श्राविका सघ

पूज्य साध्वी श्री देवेन्द्रश्रीजी म सा की सद्प्रेरणा से पुनर्गठित श्री सुमति जिन श्राविका सघ की विविध गतिविधिया सघ की अध्यक्षा श्रीमती सुशीला देवी छजलानी एव महामत्री श्रीमती उपा साड की देखरेख मे वर्ष भर सुचारू रूप से सम्पन्न होती रही हैं। समय समय पर आयोजित होने वाली पूजाओं को पढ़ाने, वार्षिकोत्सवों की व्यवस्था सम्भालने आदि में इनका योगदान प्रशसनीय एव उल्लेखनीय रहता है। पर्यूषण महापर्व के दिनों मे रात्रि भक्ति के कार्यक्रम के साथ साथ भक्ति सध्या का विशेप एव आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। (विस्तृत विवरण पृथक् से प्रकाशित किया जा रहा है।)

## श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल

श्री विजयकुमार सेठिया की अध्यक्षता एव श्री अशोक पी जेन के मत्रीत्व में पुनर्गठित मण्डल की गतिविधिया भी सुचारू रूपसे सचालित होती रही है।

सभी आयोजनों में मण्डल के सदस्यों की सेवायें प्राप्त होती रही है। (विस्तृत विवरण पृथक् से प्रकाशित किया जा रहा है।)

## संघ की आर्थिक स्थिति

यों तो संघ की आर्थिक स्थिति पूर्ववत् सुदृढ़ ही है। गत वर्ष के सोलह लाख अट्ठारह हजार के आंकड़े के मुकाबले इस वर्ष 25,29,122.85 की आय तथा 21,34,019.97 रु. का व्यय होकर शुद्ध बचत 3,95,102.88 रु. की रही है।

बरखेड़ा तीर्थ का विशाल जीर्णोद्धार कार्य तथा नए भवन की खरीद के कारण अब दबाव बढ़ा है लेकिन महासमिति को विश्वास है कि दानदाताओं के उदारमना सहयोग से सभी कार्य गतिमान बने रहेंगे एवं जो महत्वाकांक्षी योजनायें हाथ में ली गयी है वे उत्तरोत्तर अग्रसर बनी रहेंगी।

इस वर्ष भी कर्मचारियों के वेतन में पर्याप्त वृद्धि की गई है।

## आगामी चुनाव

वर्तमान में कार्यरत महासमिति का कार्यकाल मार्च, 97 में पूरा होगा। प्रयास यही रहेगा कि चुनाव यथा समय पर पूर्ण हो तथा नव-निर्वाचित महासमिति कार्य भार सम्भाल कर संघ की अभिवृद्धि एवं उन्नति की जो योजनाएं प्रारम्भ की गई है उनका चुनौती पूर्ण दायित्व ग्रहण कर संघ सेवा में अपने को समर्पित करें।

## धन्यवाद ज्ञापन

कार्यरत महासमिति ने अपनी समझ, सामर्थ्य एवं शक्ति के अनुसार संघ की सेवा करने का प्रयास किया है। जो कीर्तिमान स्थापित हुए है, वर्षो से लम्बित वरखेड़ा तीर्थ का जीर्णोद्धार कार्य का शुभारम्भ तथा नए भवन की खरीद की उल्लेखनीय उपलब्धि रही है तथा दैनिक एवं परम्परागत कार्यकलापों के संचालन एवं अभिवृद्धि में महासमिति ने अपना उत्तरदायित्व निभाया है लेकिन इसका सारा श्रेय समस्त समाज द्वारा प्रदत्त सहयोग, विश्वास एवं प्रेम से ही सम्भव हो सका है। कार्य करते हुए जो भी भूलें हुई हैं तो उनका दायित्व स्वयं ग्रहण कर रहे हैं तथा सफलताओं का सारा श्रेय श्री संघ को ही है।

पूर्ववत संघ का अंकक्षेण करने, आय-कर विभाग में आय-व्यय विवरण प्रस्तुत करने आदि में श्री आर.के. चतर, सी.ए. की सेवायें तो उल्लेखनीय हैं ही, साथ ही इस वर्ष नए भवन की खरीद, बरखेड़ा जमीन की खरीद सम्बन्धी सभी वैधानिक क्रियायें सम्पूर्ण कराने में श्री दलपत सिंह जी बया, एडवोकेट का योगदान समाज के लिए बहुत उपयोगी रहा है। दोनों ही महानुभावों को उनके प्रशंसनीय एवं उल्लेखनीय योगदान के लिए हार्दिक आभार एवं धन्यवाद।

प्रसंगवश आए हुए कतिपय नामों का उल्लेख इसमें हो सका है। संघ एवं जिन शासन को समर्पित दानदात्ताओं, भक्तिकर्ताओं एवं आयोजकों के नामोल्लेख होने से रह गए हों तो उसके लिए अग्रिम रूप से क्षमा प्रार्थी हैं।

कर्मचारी वर्ग का सहयोग सुचारू रूप से कार्य संचालन में प्राप्त होता है तथा महासमिति द्वारा भी उनके हित रक्षण की ओर पूरा ध्यान रखा गया है।

## समापन

उपरोक्त संक्षिप्त विवरण के साथ वर्ष 1995-96 का अंकेक्षित आय-व्यय विवरण चिट्ठे के साथ संघ की सेवा में प्रस्तुत करते हुए मैं अपनी वात पूर्ण कर रहा हूं।

जय वीरम्।

# श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सं

## आय-व्यय खात

(कर निर्धार

| गत वर्ष का खर्च | व्यय | | इस वर्ष का ख |
|---|---|---|---|
| 293075 95 | श्री मन्दिर खर्च खाते नामे | | 92139.2 |
| | श्री आवश्यक खर्च | 84206 40 | |
| | श्री विशेष खर्च | 7932 80 | |
| 11000 00 | श्री मणिभद्र भण्डार खाते नामे | | |
| 336963 35 | श्री साधारण खर्च खाते नाम | | 267503 12 |
| | श्री आवश्यक खर्च | 163654 25 | |
| | श्री विशेष खर्च | 103848 87 | |
| 22953 88 | श्री ज्ञान खर्च खाते नामे | | 16591 00 |
| | श्री आवश्यक खर्च खाते नाम | 15791 00 | |
| | श्री विशेष खर्च खाते नाम | 800 00 | |
| 57254.50 | श्री आयम्बिल खर्च खाते नाम | | 46375 05 |
| | श्री आवश्यक खर्च खाते नाम | 46375 05 | |

# घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

## वर्ष 1995-96

वर्ष 1996-97)

| गत वर्ष की आय | आय | | इस वर्ष की आय |
|---|---|---|---|
| 637436.35 | **श्री मन्दिर खाते जमा** | | 943629.60 |
| | श्री भण्डार खाता | 835469.20 | |
| | श्री पूजन खाता | 7809.45 | |
| | श्री किराया खाता | 1800.00 | |
| | श्री ब्याज खाता | 92194.00 | |
| | श्री चंदलाई मंदिर | 5154.50 | |
| | श्री ज्योत खाता | 1202.45 | |
| 69005.85 | **श्री मणिभद्र भण्डार खाते जमा** | | 77171.95 |
| 387899.75 | **श्री साधारण खाते जमा** | | 332347.10 |
| | श्री भेंट खाते जमा | 174424.10 | |
| | श्री किराया खाते जमा | 9927.00 | |
| | श्री माणिभद्र प्रकाशन | 32000.00 | |
| | श्री ब्याज खाते जमा | 36501.00 | |
| | श्री साधर्मी वात्सल्य खाते जमा | 78380.00 | |
| | श्री उद्योग शाला खाते जमा | 1115.00 | |
| 139203.30 | **श्री ज्ञान खाते जमा** | | 115651.50 |
| | श्री भेंट खाते जमा | 96021.80 | |
| | श्री ब्याज खाते जमा | 19629.70 | |
| 60375.15 | **श्री आयम्बिल खाते जमा** | | 65067.00 |
| | श्री भेंट खाता जमा | 10506.50 | |
| | श्री ब्याज खाते जमा | 34760.50 | |
| | श्री किराया खाते जमा | 19800.00 | |

| | | |
|---|---|---|
| 4285 00 | श्री जनना कालोनी साधारण | |
| 6817 00 | श्री सीवर खाते | |
| 46233 00 | श्री बरखेडा साधारण खाते | |
| 394 00 | श्री गुरुदेव खर्च खाते नामे | |
| 26034.50 | श्री जीवदया खर्च खाते नाम | 2369 00 |
| 2024 70 | श्री आयम्बिल जीर्णोद्धार खाते नामे | 35791 00 |
| 9091 00 | श्री बरखेड़ा मन्दिर खाते नामे | 10449 00 |
| 26937.50 | श्री जनता कालोनी मन्दिर खाते नाम | 30377 25 |
| 119678 15 | श्री भोजन शाला खाते नामे | 135745 70 |
| 17073 05 | श्री साधर्मी सेवा कोष खाते नामे | 57052.50 |
| | श्री बरखेड़ा जीर्णोद्धार खाते नामे | 1296898 45 |
| 5280 00 | श्री बरखेड़ा ज्योत खाते नामे | 3175 00 |
| 236849 85 | श्री जनता कालोनी जीर्णोद्धार खाते नामे | 102055 00 |
| 34830 05 | श्री वैय्यावच खाते नामे | 37498 70 |
| 362127 47 | शुद्ध बचत सामान्य कोष मे हस्तान्तरित की गई | 395102 88 |
| 1618902 95 | | 2529122 85 |

(हीराभाई चौधरी
अध्यक्ष

(मोतीलाल भड़कतिया)
सघ मत्री

| | | |
|---|---|---|
| 3931.80 | श्री गुरुदेव खाते जमा | 8162.15 |
| 5175.35 | श्री शासन देवी खाते जमा | 5219.65 |
| 28778.95 | श्री जीवदया खाते जमा | 14873.30 |
| 1703.25 | श्री सात क्षेत्र खाते जमा | 735.00 |
| 8028.00 | श्री आयम्बिल जीर्णोद्धार फोटो खाते जमा | 17776.00 |
| 13423.90 | श्री बरखेड़ा मंन्दिर खाते जमा | 10491.05 |
| 19794.60 | श्री जनता कालोनी मन्दिर खाते जमा | 16265.55 |
| 118945.70 | श्री भोजन शाला खाते जमा | 136118.00 |
| 61125.60 | श्री साधर्मी सेवा कोष खाते जमा | 62435.00 |
| | श्री बरखेड़ा जीर्णोद्धार खाते जमा | 723180.00 |
| 120.00 | श्री बरखेड़ा ज्योत खाते जमा | |
| 41332.25 | श्री जनता कालोनी जीर्णोद्धार खाते जमा | |
| 22623.15 | श्री वैय्यावच खाते जमा | |
| 1618902.95 | | 2529122.85 |

(दानसिंह कर्नावट)
अर्थ मंत्री

(रिखब चन्द शाह)
हिसाब निरीक्षक

वास्ते चतर एण्ड कम्पनी
चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट
आर.के. चतर

स्वामी

# श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ,

चिट्ठा दिनांक :

| गत वर्ष की रकम | दायित्व | | चालू वर्ष की रकम |
|---|---|---|---|
| 1966674 73 | श्री सामान्य कोष | | 2361777 61 |
| | गत वर्ष की जमा रकम | 1966674 73 | |
| | इस वर्ष की आय व्यय खाते से | | |
| | लायी गयी रकम | 395102 88 | |
| 13805 00 | श्री जोत खाता | | 13805 00 |
| 19231 00 | श्री ज्ञान स्थाई कोष खाता | | 19231 00 |
| 138328 00 | श्री आ शाला स्थाई मिति | | 146468 00 |
| | गत वर्ष की रकम | 138328 00 | |
| | इस वर्ष की आय | 8140 00 | |
| 22171 05 | श्री श्राविका सघ खाते जमा | | 22171 05 |
| 1860 00 | श्री सम्वतसरी पारना खाते जमा | | 1860 00 |
| 3844.30 | श्री नवपद पारना | | 3844.30 |
| 51000 00 | श्री आयम्बिलशाला जीर्णोद्धार | | 51000 00 |
| 678 94 | श्री रमेशचन्द्र भाटिया | | 678 94 |
| 274233 00- | श्री साधर्मी सेवा कोष | | 274233 00 |
| 40579 00 | श्री भोजनशाला स्थाई मिति | | 41080 00 |
| | गत वर्ष की जमा | 40579 00 | |
| | इस वर्ष की आय | 501 00 | |
| 130000 00 | श्री नानगराम भगवतीलाल सर्राफ के जमा | | |
| 2662405 02 | | | 2936148 90 |

(हीराभाई चौधरी)
अध्यक्ष

(मोतीलाल भड़कतिया)
सघ मत्री

(दानसिंह कर्नावट)
अर्थ मत्री

# घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

31.03.1996 तक

| गत वर्ष की रकम | स्वामित्व | | चालू वर्ष की रकम |
|---|---|---|---|
| 26748.45 | **श्री स्थाई सम्पत्तियाँ** | | 26748.45 |
| | **लागत पिछले वर्ष के अनुसार** | | |
| 44145.25 | श्री विभिन्न लेनदारियाँ | | 86995.25 |
| | श्री उगाई | 618.25 | |
| | श्री अग्रिम खाता | 85650.00 | |
| | राजस्थान स्टेट इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड | 727.00 | |
| 2106604.75 | **श्री बैंकों में जमा** | | 2132435.65 |
| | (क) स्थाई जमा | | |
| | एस.बी.बी.जे. | 1698246.65 | |
| | देना बैंक | 434189.00 | |
| 1435.04 | (ख) चालू खाता | | 1435.04 |
| | एस.बी.बी.जे. | | |
| 475169.98 | **(ग) बचत खाता** | | 143111.08 |
| | बैंक ऑफ बड़ौदा | 295.17 | |
| | बैंक ऑफ राजस्थान | 2436.36 | |
| | एस.बी.बी.जे. | 140379.55 | |
| | **डायमन्ड पैलेस मकराना** | | 51000.00 |
| | **श्रीमती सन्तोष देवी डागा** | | 200111.00 |
| | **श्री अनिल कुमार डागा** | | 200111.00 |
| 8301.55 | **रोकड़ पोते बाकी** | | 94201.43 |
| 2662405.02 | | | 2936148.90 |

(रिखब चन्द शाह)
हिसाब निरीक्षक

वास्ते चतर एंड कम्पनी
चार्टड अकाउन्टेन्ट
आर.के.

# Auditor's Report

I (FORM No 10 B)

(See Rule 17 B)

## AUDIT REPORT UNDER SECTION 12a (B) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 IN THE CASE OF CHARTABLE OR RELIGIOUS TRUSTS OF INSTITUTIONS

We have examined the Balance Sheet of Shri jain Shwetamber TopAgach Sangh, Ghee Walon Ka Rasta, Jaipur as at 31 march, 1996 and the Income and Expenditure Account for the year ended on that date which are in agreement with the books of account maintained by the said trust or institutions

We have obtained all the informations and explanations which to the best or our knowledge and belief were necessary for the purpose of autit In our opinion proper books of accounts have been kept by the said Sangh, subject to the Comments that old immovable properties, jewellery have not been valued and included in the Balance Sheet and Income and Expenditures are accounted for on receipt basis as usual

In our opinion and to the best of our information and according to information given to us, the said accounts subject to above give a true and fair view

(1) In the case of the Balance Sheet of the State of Affairs of the above named trustèinstitutions as at 31st March, 1996

(2) In the case of the Income & Expenditure account of the profit of loss of its accounting year ending on 31st march, 1996

The Prescribed particulars are amnaxed hereto

**For Chatter & Company**

Charteted Accounts

***(R.K. CHATTER)***

Proprietor

# नागेश्वर तीर्थ की यात्रा और भी सुविधाजनक

☐ श्री राजेन्द्र कुमार लूनावत

२३वें तीर्थंकर भगवान श्री पार्श्वनाथ स्वामी की यों तो भारतवर्ष में तीर्थ स्थलियाँ फैली हुई हैं लेकिन राजस्थान में कापरडा, नाकोडा, फल वृद्धि पार्श्वनाथ मेड़ता एवं नागेश्वर तीर्थ यात्रियों की आस्था एवं भक्ति के प्रमुख स्थान हैं।

राजस्थान के हाडौती क्षेत्र एवं मध्यप्रदेश के मालवा की सीमा पर स्थित नागेश्वर तीर्थ पर हरित वाल की ११ फुट ऊंची विशालकाय प्रतिमाजी अत्यन्त मनोहारी है।

यह तीर्थ जयपुर—बम्बई मार्ग पर झालावाड़ से आगे चौमहला स्टेशन से लगभग २० किमी. दूर स्थित है। ब्रॉडगेज लाइन पर जयपुर से बम्बई चलने वाली यात्री गाड़ी पूर्व में चौमहला रुकना बन्द हो गई थी लेकिन अब यह जयपुर—बम्बई सुपरफास्ट ट्रेन चौमहला रुकने लग गई है। यह यात्री गाड़ी जयपुर से १.३० बजे प्रस्थान कर सांय ७ बजे चौमहला पहुंचती है तथा बम्बई से लौटते समय प्रातः ६ बजे चौमहला रुककर १२.३० बजे जयपुर पहुंचती है। इससे बम्बई बड़ौदा, सूरत से आने वाले तथा जयपुर से जाने वाले यात्रियों के लिए यात्रा का सुगम साधन उपलब्ध हो गया है। चौमहला स्टेशन से नागेश्वर जाने के लिए रोडवेज एवं प्राइवेट बसें उपलब्ध होती है तथा पेढी पर पूर्व सूचना देने पर तीर्थ का वाहन भी निर्धारित शुल्क देने पर उपलब्ध कराया जाता है।

यहां के शांत एवं सुरम्य वातावरण में भोजनशाला एवं धर्मशालाओं की बहुत सुविधाजनक व्यवस्था उपलब्ध है

अतः श्रावकों के तीर्थयात्रा करने के कर्त्तव्य में इस महान तीर्थ की यात्रा कर भवीजनों को अपना जीवन अवश्य कृतार्थ करना चाहिए।

# जैन स्तोत्रकार— एक झलक

□ सुश्री सरोज कोचर

वाग्देवी के सम्बन्ध में यह उक्ति प्रसिद्ध है कि– "यमैवेष वृणुते त तमुग्र करोति" अर्थात् इसकी जिस पर कृपा हो जाती है उसको सब प्रकार से समर्थ वना देती है। सामूहिक पर्यालोचन से यह प्रतीत होता है कि जैन स्तोत्रकारों में जैनाचार्यों एव मुनियों इत्यादि के महत्त्वपूर्ण योगदान के साथ सहस्राधिक स्तोत्र उपलब्ध है सबका परिचय यहाँ सम्भव नहीं है अत प्रमुख स्तोत्रकारों की झलक प्रस्तुत की जा रही है –

**स्वामी समन्तभद्र**— कवि-गमक-वादि-वाग्मित्व गुणालकृत आदि विशेषणों स सुशोभित स्वामी समन्तभद्र ने जैन स्तोत्र साहित्य का सृजन कर साहित्य परम्परा में नवीन परम्पराओं को आविर्भूत किया। इ होंने स्वयम्भूस्तोत्र, देवागम स्तोत्र, युक्त्यानुशासन एव जिनशतकालकार नामक उच्च कोटि के दार्शनिक स्तोत्र काव्य का प्रणयन किया।

**देवनन्दिपूज्यपाद**— इन्होंने वारह स्तोत्रों में पृथक्-पृथक् भक्ति का निरूपण किया है। इन्होंने कवि के रूप में अध्यात्मक, आचार, स्तुति, प्रार्थना एव नीति का प्रतिपादन किया है।

**पात्रकेसरी** — जैन तार्किक पात्रकेसरी ने "जिनेन्द्रगुणसस्तुति या पात्रकेसरी नामक स्तोत्र का निर्माण पचास पद्यों में किया है। इसमें वीतराग के सयम, नान, हित चिन्तन आदि गुणों को लक्ष्य कर प्रौढ़ स्तुति की है।

**मानतुगाचार्य** — जैन सम्प्रदाय में समाहत मानतुगाचार्य ने 'भक्तामर स्तोत्र' का सृजन कर संस्कृत एव स्तोत्र साहित्य परम्परा में अभूतपूर्व योगदान दिया। श्वेताम्बर मतानुसार इसमें 44 पद्य एव दिगम्बर मतानुसार 48 पद्य है। यद्यपि यह आदि तीर्थकर ऋषभदेव की स्तुतियों का निवचन है तथापि यह किसी भी तीर्थकर पर घटित हो सकती है।

**बप्पभट्टिसूरि** — वप्पभट्टि सूरि ने सरस्वतीस्तोत्र, वीरस्तव, शान्तिस्तोत्र आर चतुर्विंशति जिन स्तुति की रचना की है। उन्होंने चतुर्विंशति जिन स्तुति नामक स्तोत्र काव्य का सृजन कर कीर्तिमान स्थापित किया है।

**महाकवि धनञ्जय**— इन्होंने भक्तिपूर्ण 40 पद्यों के 'विषापहार' स्तोत्र का प्रणयन किया है। किंवदन्ती है कि इस स्तोत्र के प्रभाव से सर्प का विष दूर हो जाता है।

**जिनसेन** — नवमी शती में विरचित जिनसेन द्वितीय का जिनसहस्त्रनाम' स्तोत्र उपलब्ध होता है। इसमें अनेक विशेषणों द्वारा तीर्थकर प्रभुओं को नमस्कार किया गया है।

**शोभनमुनि**— धनपाल कवि के अनुजवन्धु श्री शोभनमुनि ने 11वीं शताब्दी में 'चतुर्विंशतिजिनस्तुति' की रचना की है।

**वादिराजसूरि**— प्रौढ़ एवं परिमार्जित भाषा से युक्त इन्होंने ज्ञानलोचन एव एकीभावस्तोत्र की रचना की है।

**कुमुदचन्द्र**— श्वेताम्बर सम्प्रदाय में सिद्धसेन दिवाकर का दूसरा नाम कुमुदचन्द्र माना गया है। इनके नाम, काल, कृतियों के सम्बन्ध में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। इन्होंने द्वात्रिंशद् द्वात्रिंशिका, कल्याणमन्दिर स्तोत्र तथा शक्रस्तव की रचना की है।

**आचार्य हेमचन्द्र** — कलिकाल सर्वज्ञश्री हेमचन्द्राचार्य ने अन्ययोग, व्यवच्छेदद्वात्रिंशिका, अयोग व्यवच्छेदद्वात्रिंशिका, वीतराग स्तोत्र तथा महादेव स्तोत्र के प्रणयन द्वारा अपने महत्त्वपूर्ण चिन्तन को प्रस्तुत किया है।

**पण्डितमेरुविजयगणि**— इन्होंने लगभग 5-6 शताब्दियों से अविच्छिन्न "चतुर्विंशतिजिनानन्दस्तुति" की परम्परा को अग्रसर करने के लिये उपर्युक्त स्तोत्र का सृजन कर जैन स्तोत्र साहित्य को सुवासित किया।

अन्य उल्लेखनीय विद्वानों में रामचन्द्र (सूरि), जिनवल्लभ सूरि, जिनप्रभसूरि का नाम है। जिनप्रभसूरि का यह अभिग्रह था कि प्रतिदिन एक नवीन स्तोत्र की रचना करके ही आहार ग्रहण करना। इस प्रकार इन्होंने 700 स्तोत्रों की रचना की। श्री हरिभद्रसूरि ने लघु किन्तु महत्त्वपूर्ण 'ससार दावानल स्तुति' की 'भाषासमक' पद्धति में रचना की। जम्बु मुनि ने 'जिनशतक', शिवनाग ने पार्श्वनाथ महास्तव, धरणेन्द्रोरगस्तव अथवा मन्त्रस्तव की रचना की। विनयहसगणि, दि भूपाल, श्रीपाल कवि, कवि आसड़ मन्त्री आह्लाद, मन्त्री पद्म तथा धर्मघोष सूरि आदि अनेकों रचनाकारों ने इसी धारा को विकसित किया। श्री कुलमण्डल सूरि, जयतिलक सूरि जयकीर्तिसूरि, साधुराज गणि आदि कतिपय आचार्य शुद्ध रूप से चित्रकाव्यमय स्तव लिखने में विख्यात है। सहस्रावधानी मुनिसुन्दरसूरि, श्री सोमसुन्दर सूरि, श्री रत्नशेखर सूरि, श्री समय सुन्दर गणि, उपाध्याय श्रीमद् यशोविजयजी आदि ने अपने काव्यों द्वारा अर्चना पुष्प अर्पित किये है।

**निष्कर्षत** — वर्तमान युग में भी स्तोत्र सृजन करें। साहित्याकाश में स्तुतिकाव्य न केवल जैन मुनियों की अम्बार सहिता है अपितु भक्ति एव काव्य रसिकों का भी वह कण्ठाहार बन गया है।

❖❖❖

# विज्ञापन

विज्ञापन दाताओं
के प्रति
हार्दिक आभार

दूसरा चौराहा, मिशन स्कूल के सामने,
जाट के कुए का रास्ता, चांदपोल बाजार, जयपुर-302 004

टेलीफोन : 323707 पी.पी.

*With Best Compliments From :*
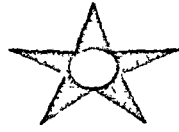
# CRAFT'S

## B.K. AGENCIES

*WHOLESALE TEXTILE DEALERS*

Boraji Ki Haweli, Katla Purohitji
JAIPUR-302 003 (Raj.)

(O) 564286
(R) 511823, 511688

*With Best Compliments From :*

# ANANT BHASKAR

(STUDIO BHASKAR & COLOUR LAB)

4th, Crossing, Gheewalon Ka Rasta,
Johari Bazar, JAIPUR-302 003

Phone : 562159

# नकली माल से सावधान !

कापीराइट रजिस्ट्रेशन नं॰ A 24836/79 ®

# ओसवाल

रजि॰ ट्रेड मार्क नं॰ 320895

# सोप

असली धुलाई के लिये →